لا إله إلا الله محمد رسول الله

तौहीद शिर्क और रेसालत

माना और मफहूम

नया मुस्लिम तालीम तथा संरक्षण संस्था रियाध

(सऊदी अरब)

अनुवादक

रिजवानुल्लाह बिन अब्दुल मन्नान मदनी

ला इलाह इल्लल्लाह का अर्थ

ला इलाह इल्लल्लाह दीने इस्लाम कि असल है और इसि कि तब्लीग आदम, नूह, हूद, सालेह, इब्राहीम, मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम ने कि। उन तमाम नबियोँ ने अपनि उम्मतियोँको इसि महत्वपुर्ण कलेमा कि तरफ बुलाया। कुरआनमा अल्लाह तआलाने फरमायाः (सुरह नहल आयत ३६) और एक दुसरी जगहपर फरमायाः (सुरह अल-अंबिया आयत २५) जब नबि स. को उनकि कौममे इस्लाम कि दावत देनेका आदेश हुवा तो उन्होने भि इसि कलेमा से शुरुवात किया और कहाः ए लोगों ला इलाह इल्लल्लाह पढो कामयाब हो जाओगे। उस समय वह लोग बुत, दरख्त और बहोत सारी चिजोँ कि इबादत करते थे उसके इसि लिए जब नबि स. ने उनके सामने एक अल्लाह कि इबादत करनेका जिक्र कया तो वह लोग इसका इन्कार करने लगे।

उन लोगोँका कहना था किः اَجَعَلَ الْاٰلِـهَةَ اِلٰــهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ अर्थः क्या उसने इतने सारे माबूदोँ को खत्म करके एक हि माबूद कर दिया ? (कुरआन सुरह साद सुरह न 38 आयत 5) तो उन लोगोँ ने अल्लाह का और तौहीदका इन्कार किया अपने गुमराहि के बिनापर और कुफ्र करने लगे। असल मे वह लोग समझते थे कि वह सहि रास्तेपर हैँ क्योँ कि उनके माँ बाप से उन्होने यह सब पाया है तो यह गलत कैसे हो सकता है ?

जान लिजिए कि कल्मए तौहीद कि गवाहि सब से बडि गवाहि है और ईमान के दरजात मे सब से बुलन्द दर्जा है। जैसा कि सहि बोखारी वगैह मे हदीस है जिस मे नबि स. ने कहा किः

عن أبي هريرة أن رسول الله ﷺ قال :الإيمان بضع وسبعون أو بضع وستون شعبة، فأفضلها قول لا إله إلا الله، وأدناها إماطة الأذى عن الطريق، والحياء شعبة من الإيمان

अनुवादः अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबि स. ने कहाः इमान कि सत्तर से ज्यादा या साठ से ज्यादा शाखें हैं उनमे सब से महत्वपुर्ण शाख है ला इलाह इल्लल्लाह कि गवाहि देना और सब से कमतर दर्जा है रास्ते से तक्लीफदह चीजको हटाना।

इस हदीस से यह बात साबित होति है कि दीने इस्लाम की असल और सब से महत्वपुर्ण बात कल्मए तौहीद यानि कि ला इलाह इल्लल्लाह की गवाहि देना है। और कल्मए तौहीद أشهد أن لا إلاه إلا الله و أشهد أن محمدا عبه و رسول الله कि गवाहि देनेका माना हैः अल्लाह के सिवा कोई भि इबादत के लाएक नहि है यानि कि इस बातका इन्कार के यह दुनिया मे जितने भि खुदा बन बैठे हैं या बना दिए गए हैं यह सब के सब बातिल हैं असल ईश्वर सिर्फ और सिर्फ अल्लाह है। पहले तमाम बातिल माबूदोंका इन्कार है फिर असल और सत्य ईश्वरको स्विकार करना है।

अल्लाह तआला ने कुरआन के सुरह हज्ज मे फरमायाः ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ
बेशक अल्लाह तआला हि सत्य ईश्वर है और उसके सिवा जिसको भि पूकारते हैं वह सब बातिल हैं। (कुरआन 22:62)
इसि तरह से अल्लाह तआला ने दुसरी जगह पर बयान फरमायः

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰــهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ
अनुवादः जो लोग भि अल्लाह के साथ किसी औरको पूकारते हैं जिसके ईश्वर होनेका उनके पास कोइ प्रमाण नहि है तो उनका हिसाब उनके पालनकर्ताके यहाँ होगा बेशक कुफ्र करने वाले कभि भि सफल नहि हो सकते। कुरआन 23:117)

और इसि तरह से अल्लाह तअला ने सुरह बैय्यीना के अन्दर कहाः وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ
अनुवादः उन्हें इस के सिवा कोई आदेश नहि दिया गया है कि वह सिर्फ अल्लाह की कि इबादत करें। (कुरआन 98:5)

इस माना कि बहोत सि आयतें कुरआन मे मौजूद हैं। और यह महत्वपुर्ण कल्मे कि गवाहि देने वालेको उस वक्त तक फाईदा नहि देगा और शिर्क के दलदल से नहि निकालेगा जब तक की इसका माना न जान लें और इसपर अमल ना शुरू करें। मोनाफिकीन भि इस कलेमाको पढते थे लेकिन फिर भि उनका ठिकाना नर्कका सबसे निचेका स्तर है क्यौँ कि उनलोगोंका ईमान इसपर नहि था और ना हि वह लोग ईसके तकाजोँ पर अमल करते थे।
इसि तरह से यहूदी भि इस कलमेको पढते थे लेकिन वह तो सबसे बडे इन्कारी और कुफ्र करने वाले हैँ क्योँ कि उनका भि इसपर ईमान नहि है। इसि तरह से कब्र और औलियउल्लाहकि पुजा करने वाले इस उम्मत के मुश्रीनका हाल भि काफिरों जैसा है। वह इस कल्मेको पढते तो हैं लेकिन उनका आस्था, कथनी और करनि सब से इस कल्मे कि मोखालफत साफ दिखता है। अगर चे उनको मुसलमान कहा जाता हो लेकिन एसे लोगोँ को यह कलमा बिल्कुल फाईदा नहि देगा क्योँ कि उन लोगों ने अपनि कथनि और करनी के जरिए इस्लामी आस्था कि मोखालफत कि है और जो भि तौहीद कि मोखालेफक करेगा वह जहन्नमका हकदार है। (कल्मए तौहीद के तकाजे, लेखक शैख इब्ने बाज रहिमहुल्लाह)
कलमए तौहीद कि माँग यह है किः अल्लाह के सिवाए किसि और से दुवाएँ न कि जाएँ, अल्लाह के सिवा किसि और से इस्तेगासा ना किया जाए, अल्लाह के सिवा किसी और पर तवक्कुल ना किया जाए, अल्लाह के सिवा किसि और के लिए मन्नत ना मानि जाए आदि अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जबह ना किया जाए।
और खूब अच्छि तरह जान लिजिए कि अल्लाह के सिव किसि से भि हरगिज दुवा नहि किया जा सकता है और जो लोग भि कब्र पर जाकर या औलियाउल्लाह से दुवा, इस्तेगासा, और इस्तेआना करते हैं वह जाहिल हैँ और उनका यह अमल बातिल है और उनको घाटा के सिवा कुछ नहि मिलने वाला इसि तरह से वह लोग अपने इस अमलकि वजह से जहन्नम के भागिदार बनते हैं क्यों कि यह सब कल्मए ला इलाह इल्लल्लाह के विपरित है।

मोहम्मदुर रसूलुल्लाह कि गवाहि देनेका मतलब

अल्लाह तआला आप लोगों पर कृपा करे, जान लिजिए कि ला इलाह इल्लल्लाह का माना व मफहूम जानने के बाद सब से महत्वपुर्ण बात है मोहम्मदुर रसूलुल्लाह का माना व मफहूम जानना। इन दोनोँ मे से जहाँ एक एक के बारे मे चर्चा हो तो उसके बाद दुसरे बे बारे मे चर्चा होना लाजिम है।

معنى شهادة أن محمدًا رسول الله: هو الإقرار باللسان والاعتقاد الجازم بالقلب بأن محمدًا بن عبد الله الهاشمي القرشي عبد الله ورسوله أرسله الله إلى جميع الخلق كافة من الجن والإنس

अनुवादः मोहम्मद रसूलुल्लाह कि गवाही देनेका मतलब यह है कि जुबान से इज्हार करे, दिल से स्वीकार करे कि मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल हाशमी अल कोरशी रसूल हैं जिनको अल्लाह तआला ने पूरी दुनियाँ के लिए मार्गदर्शक बनाकर भेजा है।

और मोहम्म रसूलुल्लाह का माना यह है कि मोहम्मद स. ने जो आदेश दिया है उसको उसी तरह किया जाए जैसा कि उन्होँ ने कहा अगर उनके आदेश के सिवा किसि और कि बात किसि औरका मार्ग अपनाया जिसपर कोई प्रमाण नहि है तो वह काम बातिल है मान्य नहि है। क्योँ कप नब स. को अल्लाह तआला ने इसि लिए भेजा है कि वह तमाम दुनियाँ वालोँ कि सत्मार्ग दिखाएँ और आकाशवाणि हि लोगोँ को बताते है। हम उनका अनुशरण करने के पाबन्द हैँ।

जान लिजए कि यह गवाही हमसे चार बातोँ का मोतालबा करति है और चार बातें निम्न हैः

जो बात नबि स. ने कहा उसको सच मानना।

जिस बातका आदेश दिया है उसको पूरा करना।

जिस बात से रोक दिया है उस से रूक जाना।

अल्लाह कि इबादत सिर्फ नबि स. के बताए तरीकेपर करना।

अब हम यहा इन चारों बातो को संक्षिप्त मे बयान करेंगेः

पहली बातः जो बात नबि स. ने कहा उसको सच मानना

अर्थात उन्होँ ने जो बात कहि है उन तमाम बातोँ को सत प्रतिशत सच मानना, जैसे कि उन्होँने भुतकाल हुई घटनाओंके बारे मे बताया उदाहरण स्वरूप आदम कि सृष्टि और उनके बाद आने वाले शन्देशवाहको का विवरण। या इसी तरह से उन्होँ ने भविश्यकाल कि बातेँ बताई है जैसे कि कयामत और उसकि निशानियाँ वगैरह। या जिस तरह से उनहोँने कुछ एसि बातें हमे बातें बताई है जिसका हमे न ज्ञान है न हम उसको अपनी दुनियाँ कि आखोँ से देख सकते हैं जैसे कि मरने के बाद कि जिन्दगि आदि।

दुसरी बातः जिस बातका आदेश दिया है उसको पूरा करना।

उदाहरणः जैसे कि नबि स. ने आदेश दिया कि अल्लाह तआला का आदेश मानना है उसके आदेशोंका पालन करना है, अल्लाह तआला कि इज्जत करनि है उसकि ईबादत करनी है उसि से दुवाएं मागनि है आदि।

प्रमाणः

قال تعالى" قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

अनुवादः कह दो, "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।" (कुरआन सुरह नः 3 आयत नः 31)

तिसरी बातः जिस बात से रोक दिया है उस से रूक जाना।

अर्थात नबि स. ने जिस काम से रोक दिया है उससे सिघ्र हि रूक जाए बगै चँ-चरा किए।

अल्लाह तआला ने कुरआनमे फरमायाः

" وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا

अनुवादः रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दे उससे रुक जाओ (कुरआन 59:7)

नबि स. ने एक मोकेपर कहाः

وَقالَ عَلَيْهِ الصَّلاةُ وَالسَّلامُ: «مَا أَمَرْتُكُمْ بِهِ؛ فَأْتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُم، ومَا نَهَيْتُكُمْ عَنْهُ؛ فَاجْتَنِبُوهُ» أخرجه البخاري

अनुवादः मै जिस बातका तुम लोगोँ आदेश देता हुँ उसको अपनी क्षमता भर पूरा करो और जिस काम से रोकता हुँ उससे तुमलोग रुक जाओ। (बोखारी)

चौथि बातः अल्लाह कि इबादत सिर्फ नबि स. के बताए तरीकेपर करना।

अर्थात अल्लाह तआला कि इबादत सिर्फ उस तरीके से करनि है जैसा कि कुरआन मे है और नबि स. के फरमान मे हे। नबि स. ने कोई भि बातको अधुरा नहि छोडा और अल्लाह तआला के हर आदेशको साफ साफ और पूरी तरह से लोगोँ तक पहोँचा दिया इसि लिए अब कोई भि एसि इबादत जो नबि स. साबित नहि है उसको करने मे गुनाह है सवाब नहि है। जैसे कि नबि स. ने फरमायाः قال صلى الله عليه وسلم: "من عمل عملا ليس عليه أمرنا فهو رد" أخرجه مسلم.

अर्थातः कोई भि आदमी (अल्लाह से तकर्रुब हासिल करने के लिए) कोई एसा काम करता है जिस के करनेका आदेश मैने नहि दिया है तो वह काम मरदूद है उस काम का कोई फाईदा नहि है बल्कि उल्टा उसको बिदअत करने का गुनाह मिलेगा।

तौहीद का महत्व

जो आदमी कुरआन व हदीस पढेगा उसपर गौरो फिक्र करेगा तो वह तौहीद कि अहमियत बडि आसानी से जान जाएगा। अम यहाँपर तौहीद कि कुछ विषेशताएँ और महत्व बगाएँगे ताकि पढ्ने वालेको दुनिवा व आखेरत में फाईदा हो सके।

1. तौहीद बन्दोँ के फाएदे लिए हैः

खूब अच्छि तरह जान लिजिए कि मख्लूक कि सृस्टि हि अल्लाह ने तौहीद के लिए कि है। अल्लाह तआला फरमाते हैः وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

अनवादः हमने इन्सानों और जिन्नातों को अपनि इबादत के बनाया है। (सुरह 51:56)

इसका मतलब यह हुवा कि अल्लाह तआला ने इन्सानों और जिन्नातोँ को तौहिद के लिए यानि अपनि उपासना और इबादत के लिए सृष्टि किया है।

अब जब आपने यह जान लिया कि अल्लाह तआला ने हम सबको अपनि इबादत के लिए बनाया है तो यह भि जान लिजिए कि तौहीद के बिना इबादतको इबादत नहि माजा जाएगा जैसा कि नमाजको पाकी और सफाई के बिना नमाज नहि माना जाएगा।

इसि तरह जब अकीदा मे शिर्क दाखिल हो जाए तो सारी इबादत बर्बाद हो जाएगि जैसा कि नापाक हो जाने से पाकी खत्म हो जाति है।

2. **तौहीद कि रसूलों कि दावतका असल मिशन हैः**

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ

अनुवादः और आपके से पहले भि जो सन्देशवाहक हमने भेजे उनकि तरफ भि यहि आकाशवाणि किया कि मेरे सिवा कोई इबादत के लाएक नहि इसि लिए तुम सब मेरी हि इबादत करो। (कुरआन 21:25)

इस से यह बात साफ हो जाता है कि अल्लाह के सिवा किसि और कि इबादत नहि करना है क्यों कि उसका कोई साझि नहि है। और तमाम नबियों कि यहि दावत है जिसके बारेमे अकलि और शरई दोनों दलीलें मौजूद हैं।

कतादा बिन देआमा अस्सदूसी रह्मतुल्लाह अलैह कहते हैः हर नबि तौहीद दे कर भेजा गया था अगर चे शरियतें अलग अलग हैं। (तस्फसीर कुर्तिबि)

अल्लाह तआला ने हर नबिको एक अल्लाह कि तौहीद कि दावत देनेका आदेश दिया। इन्सानी फितरत भि इसिका तकाजा करति है और मुश्रिकीन के पास इसका को रद्द भि नहि है। उनके लिए को न कोइ फाईदा है न कोइ ठिकाना बल्कि उल्टा उनके लिए बहोत हि सख्त सजा है।

उपर उल्लेखित आयत से यह बात साबित होति है कि रसूलों के भेजनेका मक्सद एक अल्लाह कि इबादत कि तरफ बुलाना और उसके सिवा तमाम झुठे खुदाओं का इन्कार करना है। तमाम नबियों का एक हिं मिशन था और वह है एक अल्लाह कि इबादत करना यधपि उनके शरियत अलग अलग थि। (तैसीरुल अजीजिल हमीद)

3. तौहीद तमाम आमालके कुबुलियतका शर्त है:

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلّى الله عليه وسلّم: قال الله تبارك وتعالى: "أنا أغْنَى الشُّركاء عن الشِّرك، مَن عمل عملاً أشرك فيه معي غيري تركته وشركه" رواه مسلم

अनुवादः अबु हौरैरा रजिल्लाहु अन्हुले बताउनु भयो कि नबि स. ले भन्नु भयोः मै शिर्क करने वाले लोग और उनके शरीक से बरी हुँ। जसले जिसने कोई ऐसा काम किया किजा जिसमे उसने मेरे साथ किसिको औरको शरीक किया तो मै उस शरीक करने वालेको और उसके शिर्को उने हालपर छोड दुँगा। (सहीह मुस्लिम)

मुश्रिकीन कि कोइ भि इबादत कुबूल नहि होगि अगरने कुछ इबादते अल्लाह के लिए भि किए हों लेकिन वह भि कुबूल नहि होंगि। (मज्मूवा फतावा ले शैखुल इस्लाम इब्ने तैमीया)

अल्लाह तआलाने फरमायाः

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاۗءُ

अनुवादः इमान वालों को अल्लाह तआला पक्कि सच्चि बात के साथ मजबूत रखता है दुनियाँ कि जिन्दगि मे और आखेरत मे भि। हाँ ना इन्साफ लोगोंको अल्लाह तआला बहकादेता है और अल्लाह जो चाहता है करता है। कुरआनः 14:27

इस आयतमे जो अल्लाह तआल ने कहा है कि "अल्लाह तआला इमान वालोंको पक्कि सच्चि बातों मे मजबूत रखता है इस के व्याख्यामे मोफस्सिरीन ने बताया कि कब्र मे साबित रखने कि बात हो रहि है और इस आयत के व्याख्या मे साफ साफ हदीस मौजूद है जो यह प्रमाणित करता है कि कब्रमे आजाब होता है। और इस बारेमे मोहद्देसीन, मोफस्सेरीन सबने यह बात साबित कया है। (मआरिजुल कुबूल)

कोलुस्साबित से मुरादः तौहीद पर सबित रखना है जैसा कि अल्लाह तआला ने कहाः

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَاۗءِ

अनुवादः क्या आपने नहि देखा कि अल्लाह तआला किस तरह पाकीजा मिसालें बयान करता है ? उदाहरण एक पाकीजा पेडका जिस कि जड मजबूत है और उसकि टहनियाँ आसमान मे हैं। (कुरआनः 14:24)

4. अल्लाह कि मदद पाने के लिए तौहीद मानना शर्त है:

अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَـيْـــًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

अनुवादः तुम मे से उन लोगों से जो इमान लाए हैं और नेक आअमाल किए हैं अल्लाह तआला वादा कर चुका है कि उन्हे जरूर धर्ति मे खलीफा बनाएगा जैसे कि उनलोगों को खलीफा बनाया था जो उनसे पहले थे और यकीनन्

उनके लिए उनके उस दिनको मजबूति के साथ जमा देगा जिसे उनको वह अमनो अमान से बदल देगा। वह मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसि को भि शरीक न ठहराएंगे उसके बाद भि जो लोग ना शुक्रि और कुफ्र करें यकिनन् वह फासिक हैं। (कुरआनः 24:55)

यह अल्लाह तआला का अपने नबि से वादा है कि वह नबि स. के उम्मती को जमीनका खलीफा बनाएगा यानि उनको लोगोंपर हाकिम और सल्तनत देगा जिसके जरिए मुल्कि इस्लाह और उसके बाशिन्दों कि इस्लाह करेंगे। जसके माध्यमसे खौफको अम्नो सुकून मे बदल देगा। (इब्ने कसीर)

तौहीद कि श्रेष्ठता

इस दुनियाँ मे इन्सानके पास जो सबसे महत्वपुर्ण चिज जो है वह तौहीद यहि इन्सानका फसल दुनियवि मिशन है क्यों कि इसि चाभि से बन्दे के लिए जन्नत के दरवाजे खोले जाएंगे जिससे अल्लाह तआला अपने बन्दोंको जन्नत मे जगह देगा और यहि वह चीज है जो जहन्नम से लोगोंको बचाएगा। अल्लाह तआला ने फरमायाः

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا

अनुवादः अल्लाह तआला शिर्कको कभि माफ नहि करेगा और उसके सिवा जो चाहे वह माफ कर दे। जिस ने अल्लाह के साथ किसिको शरीक बनाया तो उसने बहोत बडा बोहतान लगाया। (कुरआन 4:48)

तौहीद कि महानता और श्रेष्ठता के बारेमा वह हदीस बहोत पहत्वपुर्ण है जो सहीह बोखारी और सहीह मुस्लिम मे है जिस मे ओबादा बिन सामित रजियल्लाहु अन्हु ने बताया कि नबि स. ने फरमायाः

ان عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ – رضي الله عنه – قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ –صلى الله عليه وسلم– «مَنْ قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَىٰ عَبْدُ اللهِ وَابْنُ أَمَتِهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَأَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ، وَأَنَّ النَّارَ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ الله مِنْ أَيِّ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ شَاءَ

अनुवादः जिस ने أَشْهَدُ أَنَّ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الله وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ यानिः मै गवाहि देता हुं कि अल्लाह के सिवा कोइ भि माबूदे बरहक नहि और उसका कोइ साझि नहि है और मै गवाहि देता हुँ कि नबि स. अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, और हजरत ईसा अल्लाह के बन्दे है जिनको अल्लाह ने उनकि माँ के तरफ इल्का किया, बेशक जन्नत हक है और जहन्नम भि हक है तो अल्लाह तआला उसको जन्नत के आठों दरवाजों मे से जिस से वह जाना चाहे दाखिल होने देंगे।

जान लो कि तौहीद कि बहोत सि फजिलतें हैँ जो कुरआन व हदीस मे बताया गया है उन मे से कुछ आयतों और हदीसोँका हम यहाँ जिक्र करते हैः

1- अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰۤىِٕكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ

अनुवादः जो लोग ईमान लाए और अपने इमानको जुल्म से लिप्त नहि किया तो एसे हि लोग अमन मे हैं और यहि रोग सिधे मार्गपर हैं। (कुरआन 6:82)

व्याख्याः اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا यानि जिन लोगों ने खालिस एक अल्लाह पर ईमान लाया और यह माना कि वहि सत्य ईश्वर है फिर उन लोगों ने وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ इमान मे मिलावट नहि किया, एक चीजको दुसरे मे गुडमुड नहि किया यानि हर तरफ से उसको शिर्क से बचा के रखा। यहाँ जुल्म से मुराद शिर्क है। इसि लिए इमाम बोखारी ने अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रजियल्लाहु अन्हु से हदीस नकल किया हैः

عَنْ عَبْدِ اللهِ بن مسعود، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ :﴿ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صلى الله عليه وسلم وَقَالُوا: أَيُّنَا لاَ يَظْلِمُ نَفْسَهُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم: «لَيْسَ هُوَ كَمَا تَظُنُّونَ، إِنَّمَا المراد به الشرك ألم تسمعوا إلى قول الرجل الصالح: يَا بُنَيَّ لاَ تُشْرِكْ بِالله إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ

अनुवादः जब यह आयत الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ नाजिल हुई तब नबि स. के सहाको बहोत भारी महसुस हुवा तो उन लोगों ने नबि स. से कहाः या रसूलल्लाह हम मे कौन जुल्म नहि करता होगा ?

नबि स. ने कहा कि इसका मतलब वह नहि है जो तुम लोग समझ रहे हो बल्कि इस से मुराद शिर्क है। क्या तुमने उस भले आदमी कि बात नहि सुनि जिन्होंने कहाः ए मेरे बेटों अल्लाह के साथ कभि शिर्क ना करना बे शक शिर्क बहोत बडा जुल्म है।

2- हदीसे रसूलः

ان عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ – رضي الله عنه – قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ –صلى الله عليه وسلم– «مَنْ قَالَ: أَشْهَدُ أَنَّ لاَ إِلَٰهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَىٰ عَبْدُ اللهِ وَابْنُ أَمَتِهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَأَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ، وَأَنَّ النَّارَ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةِ على ماكان من العمل

अनुवादः जिस ने أَشْهَدُ أَنَّ لاَ إِلَٰهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ यानि: मै गवाहि देता हुं कि अल्लाह के सिवा कोइ भि माबूदे बरहक नहि और उसका कोइ साझि नहि है और मै गवाहि देता हुँ कि नबि स. अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, और हजरत ईसा अल्लाह के बन्दे है जिनको अल्लाह ने उनकि माँ के तरफ इल्का किया, बेशक जन्नत व जहन्नम हक हैं। तो इस बात कि गवाहि देने वालेको अल्लाह तआला उसको जन्नत के आठों दरवाजों मे से जिस से वह जाना चाहे दाखिल होने देंगे चाहे उसका अमल जैसा भि हो। (बोखारी व मुस्लिम द्वारा संकलित)

जिस ने माना और मफहुमको समझते हुवे ला इलाह इल्लल्लाह कि गवाहि दि और उसके तकाजों पर जाहिल और बितिन मे अमल किया जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमायाः فاعلم أنه لا إله الا الله अर्थात जान लो कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई भि माबूदे बरहक नहि। इसि तरह से दुसरी आयत मे फरमायाः إلا من شهد بالحق وهم يعلون अर्थातः मगर वह लोग जो सच्चाई के साथ इस बात कि गवाहि देते हैं।
शैख इब्ने बाज रहमतुल्लाह ले कहते हैः चाहे उसका अमल फसाद वाला या भलाई वाला कैसा भि हो, इसका मतलब यह है कि अगर तौबा करके मरा हो तब सिधे जन्नत मे जाएगा वर्ना उसको अपने अमलका बदला चखना होगा जो उसने गुनाह किए हैं उसके बाद हि वह जन्नत मे जा सकेगा।

3- हदीसे रसूलः

عن أنس –رضي الله عنه– قال : سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول» : قال الله تعالى : يا ابن آدم، إنك ما دعوتني ورجوتني غفرت لك على ما كان منك ولا أبالي، يا ابن آدم، لو بلغت ذنوبك عنان السماء، ثم استغفرتني، غفرت لك ولا أبالي، يا ابن آدم، إنك لو أتيتني بقراب الأرض خطايا، ثم لقيتني لا تشرك بي شيئا، لأتيتك بقرابها مغفرة

अनवादः अनस बिन मालिक रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने नबि स. को फरमाते हुवे सुना, अल्लाह तबारक व तआला कहते हैः ए आदम के बेटे जबतक तु मुझ से दुवाएं मांगता रहेगा और अपनी उम्मीदें और तवक्कोआत मुझसे वाबस्ता रखेगा तबतक मैं तुझे बख्शता रहुँगा, चाहे तेरे गुनाह किसि भि दर्जेपर पहोंचे हुवे हों मुझे किसि बात कि परवाह नहि। ए आदम के बेटे अगर तेरे गुनाह आस्मानको छुने लगे फिर तु मुझसे मग्फेरत तलब करने लगे तो मै तुझे बख्श दुँगा और मुझे किसि बात कि परवाह ना होगि, ए आदम के बेटे अगर तु जमीन बराबर भि गुनाह कर बैठे और फिर मुझ से बख्शिस कि दुवा मांगे इस हालमे कि तुने मेरै साथ किसिको शरीक नहि किया है तो मै तेरे पास उसके बराबर मग्फेरत लेकर आउँगा (और तुझे बख्श दुंगा) (तिर्मिजी 3540)

व्याख्याः
(अल्लाह तआला ने कहा) इसको हदीसे कुद्सी कहते है)। और हदीसे कुद्सी वह है जो नबि स. अल्लाह तआला कि तरफ मन्सूब करके बोलें कि यह अल्लाह तआला ने कहा।

हदीसका यह टुक्राः أتيتني بقراب الأرض यानि कि जमीन भरकर गुनाह लेकर आए।
खताया का मत्लब है गुनाह चाहे वह बडा गुनाह हो या छोटा जैसा कि अल्लाह तआलाने कुर्आन मजीद के अन्दर बयान कियाः بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ (कुरआन 2:81)
आयतः ला तुश्रिक बि शैआ का मतलब है शिर्क से बचा हो चाहे थोडा हो या ज्यादा छोटा हो या बडा शिर्क किसि भि किसमका शिर्क ना किया हो।
हदीसका आम मफहूमः नबि स. ने बताया कि अगर शिर्क नहि किया है तो अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ कर देंगे चाहे उसके गुनाह कितना भि ज्यादा क्यों ना हों। (अर्बईने नबविया कि शरह)

चार महत्वपुर्ण काएदा

अल्लाह तआला आप लोगोंपर कृपा करे मेरे भाईयों जान लिजिए यह चार काएदे एसे हैं जिस से अल्लाह तआला का अधिकार मालूम होगा जिस ने खुबसूरत ढांचे मे इन्सानों कि सृष्टि कि और उसका बेहतरीन आकार बनाया। और अपने एक होने के बहोत सारे प्रमाण खुद इन्सानों के अन्दर और ब्रम्हाण्ड कि दुसरी चिजों मे रखा ताके इन्सान गौर व फिक्र चिन्तन-मनन् करके उसके बारे मे जान सके। इतनि निशानियाँ बनाने के बाद शिर्क करने वालों पर हुज्जत पूरी करने के लिए रसूल (सन्देशवाहक) भेजे ताकि हुज्जत तमाम हो जाए आर कोई भि हिला बहाना ना कर सकें।

पहला काएदाः यह जान लिजिए कि जिन कुफ्फार ने नबि स. ले लडाई किया वह लोग भि अल्लाह तआलाको सृष्टिकर्ता और संसार चलाने वाला मानते थे लेकिन फिर भि वह इस्लाम मे दाखिल नहि हुवे। प्रमाण यह आयतः

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۭ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ

अनुवादः ए नबि कह दिजिए कि "तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी कौन देता है, या ये कान और आँखें किसके अधिकार में हैं और कौन जीवन्त को निर्जीव से निकालता है और निर्जीव को जीवन्त से निकालता है और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?" इसपर वे बोल पड़ेंगे, "अल्लाह!" तो कहो, "फिर आख़िर तुम क्यों नहीं डर रखते? (कुरआन 10:31)

यह जान लिजिए कि जिन कुफ्फारे कोरैश ने नबि स. से जंग किया वह लोग अल्लाह तआला के रुबूबियत के काएल थे यानि कि वह यह बात मानते थे कि अल्लाह तआला हि इस संसारका पालनहार है लेकिन इस आयत से मालूम हुवा कि तौहीद सिर्फ रुबूबियत मे मानना नहि है, इसि तरह से शिर्क भि सिर्फ रुबूबियत मे नहि है। और रुबूबियत मे शिर्क करने लोग बहोत कम हैं लेकिन तौहीने रुबूबियत का लगभग सब लोग एक्रार करते हैं सिवाए कुछ लोगों के। उसके एलावा तमाम कौमें तौहीदे रुबूबियत के काएल हैं।

तौहीदे रुबूबियत कि परिभाषाः इस बातका इक्रार करना कि अल्लाह तआला खालिक (बनाने वाला) और राजिक (खिलाने पिलाने वाला) और जिन्दगि व मौतका मालिक है। इसको आप छोटकरी मे इस तरह से भि कह सकते हैः अल्लाह तआलाको उसके काम मे एक मानना।
मखलूक मे कुछ लोगों को छोड कर कोई भि यह नहि कहता कि अल्लाह के साथ दुसरा भि कोई खालिक, राजिक या जिन्दगि और मौत देनेवाला है बल्कि हरकौई यह मानता है कि अल्लाह तआला हि खालिक राजिक है यहाँ तक कि मुश्रिकीन भि मानते हैं।
जैसा कि कुरआन कि इस وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ आयत से साबित होता है।
आयतका अनुवादः और अगर तुम उनसे पुछो कि धर्ति और आकाशको किस ने बनाया तो वह जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने बनाया। (कुरआनः 31:25)

दुसरा काएदाः मुश्रकीन कहते हैं कि हम उन माबूदों कि इबादत तो सिर्फ अल्लाह से नजदीक होने और शेफारिस पाने के लिए करते हैं। इस बातका जिक्र अल्लाह तआला ने कुरआन में युँ कियाः

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِه اَوْلِيَاۤءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ

अनुवादः वे लोग जिन्होंने उससे हटकर दूसरे समर्थक और संरक्षक बना रखे हैं (कहते हैं,) "हम तो उनकी बन्दगी इसी लिए करते हैं कि वे हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त करा दें।" निश्चय ही अल्लाह उनके बीच उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे विभेद कर रहे हैं। अल्लाह उसे मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा और बड़ा अकृतज्ञ हो । (कुरआन सुरह जुमर आयत ३)

यह दुसरा काएदा इबादत व बन्दगि के मामले मे मुश्रकीन के कर्मोका हाल बयान करति है कि वह लोग अल्लाह के साथ दुसरे माबूदों कि इबादत करते हैं ।
जिनको अल्लाह तआला ने मुश्रिकीन कह के सम्बोधित कया है और उनको हमेशा हमेश के लिए जहन्नमी बताया है वह लोग रुबूबियत मे शिर्क नहि करते हैं बल्कि वह लोग उलुहियत मे शिर्क करते हैं । वह यह नहि कहते हैं कि उनके माबूद अल्लाह के साथ संसार और उसकि चीजें बनाने में शाकिल हैं, या यह नकि कहते कि वह नफा नुक्सान करते हैं, बल्कि वह यह कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे शेफारसि हैं । जैसा कि अल्लाह तआला ने उन मुश्रिकों के बारे मे फरमायाः

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۤءِ شُفَعَاۤؤُنَا عِنْدَاللّٰهِ

अनुवादः वे लोग अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं, जो न उनका कुछ बिगाड़ सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वे कहते हैं, "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं (कुरआन सुरह युनुस आयत 18)

वह लोग यह जानते हैं कि यह माबूद उनको ना तो फाईदा पहोँचा सकते हैं ना नुक्सान बल्कि वह समझते हैं कि यह माबुद अल्लाह के यहाँ हमारि शेफारिस करेंगे । यानि उन लोगों ने अपनि बात अल्लाह तक पहोंचाने के लिउ उनको वसीला बना लिया है और उनके लिए जानवर जबह करते हैं उनके नामकि मन्नत मानते हैं । यह नकि कहते कि इन माबूदों ने हमे बनाया है या यह हमे रिज्क देते हैं या हमे नफा नुक्सान करते हैं एसा कुछ भि नहि करते बल्कि उनका अकीदा यह है कि उन लोगों ने इन माबूदों को वसिला बनाया है अल्लाह तआला तक अपनि बात पहोंचाने के लिए और समझते हैं कि यह हमारे लिए अल्लाह के यहाँ शेफारिस करते हैं । यह है उन मुश्रिकीन का हाल और अकीदा ।

शेफअत दो प्रकारका है एक सहि और हक है दुसरा गलत बातिल है । तो जो सहि और हक शेफाअत है उसकि दो शर्तें हैः
न १- अल्लाह तआला कि इजाजत से शेफारिस करना है
न २- जिस के लिए शेफारिस कि जाउ वह अहले तौहीद मे से हो । मुश्रिकीन मे से ना हो ।
इन दोनों शर्तों मे से अगर एक भि शर्त न पाइ जाए तो वह शेफारिश बातिल है ।
अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَه اِلَّا بِاِذْنِه

अनुवादः कौन है जो उस (अल्लाह) कि इजाजत के बगैर शेफारिस कर सके । (कुरआन सुरह 2 आयत 255)

तीसरा काएदा: नबि स. को ऐसि कौम मे भेजा गया जो बिभिन्न प्रकार के माबूदों कि इबादत करते थे। कोई फरिश्तों कि इबादत करता था, कोई नबियों रसूलों और कोई औलिया और सालेहीन कि अर्थातः नेक लोगों कि। इसि तरह से कुछ लोग सुरज और चाँद कि पुजा करते थे तो कुछ लोग दरख्त और पत्थरों कि। उन सब से नबि स. ने हुज्जत किया किसि मे कोई तफ्रीक नहि कि। अल्लाह तआला ने कुरआन मे कहाः

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّه لِلّٰهِ

अनुवादः उनसे युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन (धर्म) पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। (कुरआन सुरह अन्फाल आयत 39)

यह तिसरे काएदे कि भुमिका इस बातको बताने के लिए है कि इबादत के मामले मे अरब के लोगों कि हालत क्या थि किस तरह के मुख्तलिफ बातिल माबूदों कि इबादत करते थे।
नबि स. एक मुश्रिक कौम मे उठाए गए जिस कौम में कोई फरिश्तों कि इबादत करता था, कोई नबियों रसूलों और कोई औलिया और सालेहीन कि अर्थातः नेक लोगों कि। इसि तरह से कुछ लोग सुरज और चाँद कि पुजा करते थे तो कुछ लोग दरख्त और पत्थरों कि।
यह शिर्क कि कबाहत है कि लोग मुख्तलिफ माबूदों कि इबादत करते हैं सहाबा भि इन्हि मे से थे। मोवह्हिदीन का मामला यह है कि वह लोग सिर्फ एक अल्लाह कि इबादत करते हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

अनुवादः क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सबपर है ?
शिर्क का एक बहोत बडा नुक्सान यह भि है कि मुश्रिकीन किसि एक माबुद पर पुत्तफिक नहि होते जिसके बिना पर उनमे मतभेद रहता है और औपस मे विभाजित होते हैं क्यों कि वह असल तक नहि पहोंच सके हैं और जो असल सच्चाई तक नहि पहोंच माना है वह एसे हि अपने ख्वाहिशात के पिछे लगकर इधर उधर भटकता रहता है। अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

ضرب الله مثلاً رجلاً فيه شركاء متشاكِسون ورجلاً سَلَمًا لرجل هل يستويان مثلاً الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون

अनुवादः अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि एक व्यक्ति है, जिसके मालिक होने में कई व्यक्ति साझी हैं, आपस में खींचातानी करनेवाले, और एक व्यक्ति वह है जो पूरा का पूरा एक ही व्यक्ति का है। क्या दोनों का हाल एक जैसा होगा? सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, किन्तु उनमें से अधिकांश लोग नहीं जानते। (कुरआन सुरह जुमर आयत 29)

जो शख्स एक अल्लाह कि इबादत करता है वह उस शख्स कि तरह है जो एक हि आदमी का दास है राहत के साथ रहता है अपने मालिक का मक्सद जानता है उसकि जरूरतों बारे मे उसको पता है उसके मोतालबात को पूरा करना आसान है। लेकिन मुश्रिक कि मिसाल एसे है जैसे को आदमी बहोत सारे मालिकों का अकेला गुलाम हो जिसको मालुम नहि होतम कि किसका काम करे किसको खुश करे। हर मालिक कि अलग ख्वाहिश है अलग मोतालबा है, हर मालिक अलग काम करने को कहता है हर कोई अपना काम करने के लिए अपने पास बुलाना चाहता है। इसि लिए अल्लाह तआला ने कुरआन मे कहा कि मुश्रिक कि मिसाल कई मालिकों के एक लौते परेशान गुलाम कि तरह है जिसको कभि चैन नहि सुकून नहि।

चौथा काएदाः

हमारे मौजुदा जमाने के मुश्रिकीन पहले के मुश्रिकीन से भि बद्तर है क्यों कि पहले के मुश्रिकीन तो आसानी मे हि सिर्फ शिर्क करते थे मुश्किल और मुसीबत मे सिर्फ एक मालिक को पुकारते थे। लेकिन आजके मुश्रिकीन तो हमेशा हि शिर्क मे डुबे हुवे होते हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ﴾[العنكبوت:65]

अनुवादः जब वे नौका में सवार होते हैं तो वे अल्लाह को उसके दीन (आज्ञापालन) के लिए निष्ठावान होकर पुकारते हैं। किन्तु जब वह उन्हें बचाकर शुष्क भूमि तक ले आता है तो क्या देखते हैं कि वे लगे (अल्लाह के साथ) साझी ठहराने। (कुरआन सुरह अल अन्कबूत आयत 65)

चौथा काएदा यह है कि आजके जमाने के मुश्रिक शिर्क में पहले के जमाने से ज्यादा गए गुजरे हैं। अल्लाह तआला ने बताया कि पहले के मुश्रिकीन तो आसानी मे हि सिर्फ शिर्क करते थे मुश्किल और मुसीबत मे सिर्फ एक अल्लाहको हि पुकारते थे।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ

अनुवादः और जब कोई मौज छाया-छत्रों की तरह उन्हें ढाँक लेती है, तो वे अल्लाह को उसी के लिए अपने निष्ठाभाव को विशुद्ध करते हुए पुकारते हैं, फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल तक पहुँचा देता है, तो उनमें से कुछ ही लोग संतुलित मार्ग पर रहते हैं अधिकांश तो पुनः पथभ्रष्ट हो जाते हैं। (कुरआन 31:32)

तो पहले के मुश्रिकीन जब मजे मे होते तो शिर्क करते थे, बुत, पत्थर और दरख्तों कि पूजा करते थे लेकिन जब मुसिबत मे फंसते और हलको तबाहि आंखों के सामने दिखने लगता तो न वह बुत याद आते ना पतथर, बल्कि उस वक्त तो सिर्फ एक अल्लाह को हि पूकारते थे।

लेकिन अभि मौजूदा दौर के मुश्रिकीन अर्थात इस उम्मते मोहम्मदिया के मुश्रिकीन तो हमेशा शिर्क मे हि लिप्त रहते हैँ चाहे खुशि हो या गमि, मुसिबत हो या आसानी हर हाल मे शिर्क करते हैं। बल्कि जितना ज्यादा मुसिबत बढता है उतना हि ज्यादा इनका शिर्क बढता है और या हुसेन, या हसन, या अब्दुल कादिर जैसि सदाएँ बुलन्द करने लगते हैं। उसपर अजूबा यह कि जब वह समन्दर कि लहरों वालि मुसिबत मे फंस जाते हैं तो औलिया और सालिहीन का नमा जपने लगते हैं उनसे फरियादें करने लगते हैं। (शेख सालेह अल फौजान द्वारा किया गया व्याख्या का तर्जुमा)

तीन महत्वपुर्ण उसूल

पहेला उसूल यह कि बन्दा अपने रबको जाने पहचानेः

जब आपसे कहा जए कि आपका रब का है ?
तो आप कहें कि मेरा रब वह है जो मेरी जिविका चलाता है और वहि पूरी दुनियां का पालनहार है। वहि मेरा माबूद है उसके सिवा मेरा कोई माबूद नहि। इसका प्रमाण अल्लाह कि यह वाणि हैः الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ।
अर्थात हर प्रकार कि प्रशन्सा उसि के लिए है जो पूरे संसारका पालनहार है। (कुरआन सुरह 1:1)
अल्लाह के सिवा जो कुछ है वह सब उसकि सृष्टि है और मै भि उसि सृष्टि मध्ये एक हुँ।
"الذي رباني وربى جميع العالمين بنعمه" जो मेरि जिविका चलाता है और सारा संसारकि जिविका अपनि कृपा से चलाता है। हर प्राणिका जिविका अल्लाह तआला हि चलाता है। जब उसने उनकि सृष्टि कि उसि समय उनसे उनके जिविका चलानेका वादा भि किया और उनके जिविका का इन्तेजाम भि किया। इस बातको अल्लाह तआलाने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और फिऔंन के आपसि प्रश्न उत्तर कि शकल मे बयान किया हैः
قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يَا مُوسَى قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى} [سورة طه
अनुवादः उसने कहा, "अच्छा, तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा? कहा, "हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी आकृति दी, फिर तदनुकूल निर्देशन किया।" (कुरआन सुरह ताहा आयत 50)

संसार के हर चीजका पालनकर्ता अकेला एक अल्लाह हि है।
और अल्लाह तआला कि अपने बन्दोंपर इतने कृपा हैं कि वह चाहकर भि उसको शुमार नहि कर सकते।
अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः **[18 :سورة النحل، الآية] {وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لا تُحْصُوهَا}**
अनुवादः और यदि तुम अल्लाह की नेमतों (कृपादानों) को गिनना चाहो तो उन्हें पूर्ण-रूप से गिन हि नहीं सकते। सुरह नहल आयत 18

तो अल्लाह तआला ने हम सबकि सृष्टि कि है हमे बेहतरीन आकार दिया है, हमारे लिए खाने पिने और जिविका का सारा बन्दोबस्त किया है तो इबादत के लाएक भि वहि हुवा।
तो उसि कि इबादत करो आजजी, इन्केसारी, खुशू व खुजू के साथ उसकि ताजीम करते हुवे। जिस बातका उसने आदेश दिया है उसको पूरा करो और जिस काम से उस रब ने रोक दिया है उस से रुक जाओ। तो मै अल्लाह क्र सिवा किसि कि इबादत नहि करूँगा।
अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः
[25 :سورة الأنبياء الآية] {وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ}
अनुवादः हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि "मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो।" (कुरआन सुरह अम्बेया आयत 25)

एक दुसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः
وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ} [سورة البينة،} :
अनुवादः और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करें निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें। और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म। (कुरआन सुरह बैय्यीना आयत 5)

रब्बिल आलमीन का मतलब है जो पूरी दिनियाँका पालनहार है और हर मखलूकको अपनी कृपा से रिज्क दे रहा है और वहि हर चीजका तसर्रूफ करने वाला है।

जब आप से पुछा जए कि आप अपने रबको कैसे पहचानेंगे ?
तो आप कह दिजिए कि उस कि सृष्टि और निशानियों के जरीए। यह दिन यह रात, यह सुरज यह चाँद, और धर्ति व आकाश व उसके बिचकि सारी चिजें उसकि निशानियों मे से हैं। इसका प्रमाण यह आयतः

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لاَ تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلاَ لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ

अनुवादः रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा उसकी निशानियों में से हैं। तुम न तो सूर्य को सजदा करो और न चन्द्रमा को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया, यदि तुम उसी की बन्दगी करनेवाले हो। (कुरआन सुरह हामीम सज्दा आयत 37)

दुसरा उसूलः इस्लाम के बारेमे प्रमाण सहित जानना

इस्लामका अर्थ है अपने आपको एक अल्लाह के हवाले कर देना, उसका आज्ञापालन करना, उसके शरीक और शरीक करने वालों से अलग हो जाना। इसके तीन दैजे हैं पहलाः इस्लाम, दुसराः ईमान, तीसराः एहसान।

पहला दर्जाः इस्लाम

इस्लाम के पाँच अर्कान हैः

شَهَادَةُ أَن لا إله إلا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، وَإِقَامُ الصَّلاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصَوْمُ رَمَضَانَ، وَحَجُّ بَيْتِ اللهِ الْحَرَامِ.

अनुवादः इस बात कि गवाहि देना कि अल्लाह के सिवा कोइ सच्चा माबूद नहि, और मोहम्मद स. अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, नमाज काएम करना, जकात अदा करना, रमजान के रोजे रखना और (सक्षम हो तो) बैतुल्लाह का हज्ज करना।

कल्मए शहादत का प्रमाणः

شَهِدَ اللهُ أَنَّهُ لاَ إله إِلاَّ هُوَ وَالْمَلاَئِكَةُ وَأُوْلُواْ الْعِلْمِ قَآئِمَاً بِالْقِسْطِ لاَ إله إِلاَّ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

अनुवादः अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं; और फ़रिश्तों ने और उन लोगों ने भी जो न्याय और संतुलन स्थापित करनेवाली एक सत्ता को जानते हैं। उस प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी के सिवा कोई पूज्य नहीं। (कुरआन सुरह आले इम्रान आयत18)

लाइलाह का मानाः अल्लाह के सिवा जितने माबूद हैं उन सब का इन्कार करना और सिर्फ एक अल्लाह को अपना माबूद मानना। तमाम तरह कि इबादत सिर्फ अल्लाह के लिए खास करना और उसके साथ किसिको शरीक ना करना।

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْاْ إِلَى كَلَمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلاَّ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ وَلاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئاً وَلاَ يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضاً أَرْبَاباً مِّن دُونِ اللهِ فَإِن تَوَلَّوْاْ فَقُولُواْ اشْهَدُواْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ] آل عمران: 64

अनुवादः कहो, "ऐ किताबवालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है; यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए।" फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो कह दो, "गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (कुरआन सुरह 2 आयत64)

मोहम्मद स. का अल्लाह के रसूल होने कि गवाहि देनेका प्रमाणः

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ }التوبة: 128 .

अनुवादः तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (सुरह तौबा 128)

नबि स. अल्लाह के रसूल हैं इस बात कि गवाहि देनेका मतलब क्या है ? इसका मतलब यह है कि उन्होंने जिस काम के करने का आदेश दिया है वह काम करना, जो उन्होंने बताया उसको सच मानना, जिस काम से रोक दिया है उस काम से रुक जाना, और अल्लाह तआला कि इबादत सिर्फ उस तरीके से करना जिस तरह से उन्होंने करनेका आदेश दिया है।

(सलाह) नमाज और जकात का प्रमाण:

وَمَا أُمِرُوا إِلاَّ لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا الصَّلاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ

अनुवादः और उन्हें आदेश भी बस यही दिया गया था कि वे अल्लाह की बन्दगी करें निष्ठा एवं विनयशीलता को उसके लिए विशिष्ट करके, बिलकुल एकाग्र होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें। और यही है सत्यवादी समुदाय का धर्म। (कुरआन सुरह बैय्यीना आयत 5)

रोजा रखनेका प्रमाण:

{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ}

अनुवादः ऐ ईमान लानेवालो! तुमपर रोज़े अनिवार्य किए गए, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर अनिवार्य किए गए थे, ताकि तुम डर रखनेवाले बन जाओ। (सुरह बहराह183)

हज्ज के लिए प्रमाण:

وَلِلهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ الله غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ

अनुवादः लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जिसको वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह इस घर का हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से निरपेक्ष है।" (कुरआन सुरह आले इम्रान आयत 97)

दुसरा दर्जा है: ईमान

ईमान के सत्तर से ज्यादा शाखें हैं सबसे बडा और महत्वपुर्ण शाख है ला इलाह इल्लल्लाह कि गवाहि देना और सबसे कमतर और छोटा शाख है रास्ते से तक्लीफ देने वालि चीजको हटा देना। और शर्म व हया ईमान के शाख मे से हैं। इस के 6 अर्कान हैं जैसा कि हदीस मे कहा गया है:

أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ

अल्लाह पर ईमान, फरिश्तों पर ईमान, आसमानी केताबों पर ईमान, रसूलों पर ईमान, कयामत के दिन पर इमान और अच्छे बुरे तक्दीर पर ईमान।

इन 6 अर्कान कि दलील:

لَّيْسَ الْبِرَّ أَن تُوَلُّواْ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَ–كِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَالْمَلآئِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ}البقرة: 177

अनुवादः वफ़ादारी और नेकी केवल यह नहीं है कि तुम अपने मुँह पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि वफ़ादारी तो उसकी वफ़ादारी है जो अल्लाह अन्तिम दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर ईमान लाया (कुरआन सुरह बकराह आयतः 177)

तक्दीर पर ईमान लाने कि दलील, कुरआन मे अल्लाह तआला ने फरमाया:

إنا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَر

अनुवादःनिश्चय ही हमने हर चीज़ एक अंदाज़े के साथ सृष्टि की है। (सुरह कमर आयत 49)

तीसर मर्तबा है अल एहसानः

इसका सिर्फ एक रुक्न है जैसा कि हदीस मे बताया गया है: أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِن لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ

अनुवादः अल्लाह तआला कि इबादत एसे करो जैसे कि तुम उसको देख रहे हो लेकिन अगर एसा ना हो सके तो यह तो जरूर होना चाहिए कि वह तुमको देख रहा है।

अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद मे फरमायाः

إِنَّ اللهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَواْ وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ }النحل

अनुवादः निश्चय ही, अल्लाह उनके साथ है जो डर रखते हैं और जो उत्तमकार हैं। (सुरह नहल आयत 128)

एक दुसरी जगह अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ * الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ * وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ * إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

अनुवादः और उस प्रभुत्वशाली और दया करनेवाले पर भरोसा रखो, जो तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो। और सजदा करनेवालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है। निस्संदेह वह भली-भाँति सुनता-जानता है। (सुरह शोअरा आयत 117-220)

सुन्नते रसूल से प्रमाण हदीसे जिब्रील है जो कि उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु द्वारा वर्णन किया गया हैः

قَالَ: أَخْبِرْنِي عَنِ الإِحْسَانِ. قَالَ« :أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ..."

अनुवादः फरिश्ते नबि स. से कहा कि मुझे एहसान के बारे मे बताइए तो नबि स. ने कहाः अल्लाह तआला कि इबादत एसे करो जैसे कि तुम उसको देख रहे हो लेकिन अगर एसा ना हो सके तो यह तो जरूर होना चाहिए कि वह तुमको देख रहा है।

तीसरा उसूलः अपने नबि मोहम्मद स. के बारेमे जानना।

उनका नाम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है और हाशिम कौरैश कबीले से तआल्लुक रखते थे और कौरैश अरबका एक मशहूर कबीला है। अरब लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम कि नसल से हैं। और हमारे नबि मोहम्मद स. नबियों मे सबसे अफ्जल व बरतर हैं। उनकि उम्र तिर्सठ साल (63) रहि जिस मे से चालीस सान नुबुव्वत से पहले और तेइस साल नुबुवत कि हुई। अल्लाह ने उनको इक्रा शब्द के साथ नुबुव्वत दिया और मुद्दस्सिर के जरीए लोगों को दावत देने का आदेश दिया। नबि स. मक्का शहेर मे पैदा हुवे।

अल्लाह तआल ने उनको तौहीद कि तरफ बुलाने और शिर्क से डराने के लिए भेजा। उन्हों ने तौहीद कि दावत दि इसका प्रमाणः

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ * قُمْ فَأَنذِرْ * وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ * وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ * وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ * وَلاَ تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ * وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ

अनुवादः ऐ ओढ़ने लपेटनेवाले! उठो, और सावधान करने में लग जाओ। और अपने रब की बड़ाई ही करो अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर ही रहो। अपनी कोशिशों को अधिक समझकर उसके क्रम को भंग न करो। और अपने रब के लिए धैर्य ही से काम लो। (सुरह मुद्दस्सिर आयत 1-7)

قُمْ فَأَنذِرْ का मतलब है कि लोगों को शिर्क से डराईए और तौहीद कि तरफ बुलाईए।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ * यानि उसकि महानताका वर्णन किजिए।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ अर्थात अपने कर्मो को शिर्क से पाक रखिए।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ अर्रुज्ज का मतलब होता है बुत, मुर्ति और वह्जुर्हा का मतलब होता है छोड्ना यानि कि बुत परस्तिको छोडना और एसा करने वालों से अपने आपको अलग रखना। नबि बनाए जाने के बाद शुरूवात के दस साल तक मक्का मे नबि स. तौहीद कि हि दावत देते रहे और दस साल के बाद आप स. को मेराज का सैर यानि आसमान कि सैर कराया गया और वहिं पर पाँच वक्त कि नमाज फर्ज हुई उसके बाद मक्का मे तीन साल तक नमाज पढ्ते रहे उसके बाद मक्का से मदीना कि तरफ **हिज्रत** का आदेश हुवा।

हिज्रत कहते हैं कुफ्र और शिर्क होने वाले जगह से इस्लाम मानने वालि जगह कि तरफ प्रस्थान करना।

शिर्क से डरने का बयान

प्रश्नः शिर्क के कितने प्रकार हैं परिचय सहित बयान करें ?
उत्तरः शिर्क दो प्रकार के हैं।

पहलाः शिर्के अक्बर यानि बडा शिर्क, और वह यह है कि अल्लाह तआला कि इबादत मे किसिको शरीक करे, उसको मदद के लिए पुकारे, या उस से उम्मीद लगाए या उससे डरे या उससे ऐसि मोहब्बत करे जैसा कि अल्लाह तआला के साथ करना चाहिए, या इबादत कि कोई किस्म उसकि तरब मन्सूब करे। ऐस शिर्क करने वाले के उपर अल्लाह तआला ने जन्नतको हराम करार दिया है।

दुसराः शिर्के अस्गर अर्थात छोटा शिर्क। हर वह कथन और कार्य जो कि बडे शिर्क कि तरफ लेकर जाता है उदाहरण स्वरूपः अल्लाह के सिवा किसि दुसरे कि कसम खाना या दिखावा के लिए इबादत करना।

अल्लाह तआला ने कुरआन मे कहाः إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ
अनुवादः अल्लाह तआला शिर्क को हरगिज माफ नहि करेंगे उसके सिवा जो चाहे वह माफ कर दे।[1]

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या करें साथ हि साथ इस आयत से क्या बात सामझ आति है वह भि प्रष्ट करें तथा आयतका इस विषयके साथ क्या सम्बन्ध है वह बताएँ ?
उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने बताया है कि उसका कोइ भि बन्दा शिर्क करके उससे मिलेगा तो वह उसको माफ नहि करेगा। शिर्क के एलावा कोइ भि गुनाह हो वह चाहेगा तो माफ कर देगा।
इस आयत से यह भि मालूम हुवा कि शिर्क सब से बडा पाप है क्यों कि अल्लाह तआला ने साफ साफ यह बता दिया है कि तौबा किए बगैर वह इस पापको क्षमा नहि करेगा, उसके एलाव जो भि पाप हैं वह अल्लाह तआला कि मर्जि है जिसको चाहे माफ कर दे और जिसको चाहे सजा दे। इसि वजह से हर बन्दे पर वाजिब है कि वह शिर्क करने से डरे क्यो कि शिर्क अल्लाह तआलाको बिल्कुल पसन्द नहि है।
विषय के साथ इस आयतका सम्बन्धः यह विषय है शिर्क से डरने के बारे मे सो अल्लाह तआला ने इस आयत मे बता दिया है कि इस प्रकार के पापको अल्लाह तआला क्षमा नहि करेंगे इस लिए इस तरह के के पाप से डरना जरूरी है।

इब्राहीम खलीलुल्लाह ने कहाः وَّاجْنُبْنِىْ وَبَنِىَّ أَنْ نَّعْبُدَ الْأَصْنَامَ
अनुवादः ए मेरे पालनहार मुझे और मेरी सन्तानको बुतों कि पूजा करने से बचाइए[2]।

प्रश्नः खलील किसको कहते हैं ? अस्नाम से क्या मुराद है ? इस आयत कि व्याख्या करो और विषय से इसका सम्बन्ध क्या है उल्लेख करो।
उत्तरः **"खलील"** वह है जिसका प्रेम दिलकि गहराइयोँ मे उतर जाए और वह उसके प्रेम मे पग्न हो जाए यहि असल मोहब्बत है। **"अस्नाम"** इसका एकवचन है **सनम**। किसि भि वस्तु के मुर्ति या तस्वीर को कहते हैं ऐसि तस्वीर या मुर्ति जिकको अल्लाह

[1]सुरह निसा आयतः (48,116)
[2]सुरह इब्रहीम आयतः (35)

के एलावा पुजा किया जाता हो। और यह भि कहा गया है कि यह शब्द आम है यानि हर उस चिजको सनम या अस्नाम कहा जाता है जिसकि अल्लाह के एलावा पुजा किया जाता है अगर चे उसकि तस्वीर या मुर्ति भि न बनाइ जाए।
आयातका मानाः मुझे और मेरी सन्तानको मुर्ति पुजासे बचाइए और हमारे व उनके बिच दुरी बना दिजिए।
विषयसे इसबम सम्बन्धः यह है कि अगर वह अल्लाह के खलील हैँ जिन्होँने अपने हाथोसे मुर्ति मुर्ति तोडा तो यह अपने और अपने सन्तान के प्रति शिर्क से बहोत ज्यादा डरने कि निशानी है के उस फितने मे न पड जाएँ। तो उन्होंने अपने और अपने सन्तान के को मुर्ति पुजा से बचाने के लिए अल्लाह से दुवा किया। इस हिसाब से तो हमे इस से बचने के लिए और ज्यादा प्रयत्न करना चाहिए क्योँ कि हमारा इमान उनसे कहिं ज्यादा कमजोर है।

हदीस मे आया है किः **أخوف ما أخاف عليكم الشرك الأصغر, فسئل عنه فقال: الرياء**

प्रश्नः रियाअ का क्या मतलब है ? नबि ﷺ अपने सहाबा के प्रति इस से क्यो डरते थे ? हदीसका इस विषय के साग सम्बन्ध बताइए।
उत्तरः रियाअ अल-रुअया से शब्द से बना है। इन्सान कोइ भि इबादत इस मन्शा से करे कि लोग उसकि इस इबादतको देखकर उस आदमी कि तारीफ करें। और नबि ﷺ अपने सहाबा के लिए इस बात से डरते थे क्यो कि यह इन्सानि ख्वाहिशको बहोत लुभाता है और अक्सर यह दिखावा दिलपर गालिब हो जाता है। विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है कि नबि ﷺ जब शिर्के अस्गर यानि छोटा शिर्क से अपने सहाबा के इतना डराते थे जब कि उनका इमान तो कमाल दर्जेका था तो ए मुसलमानो तुम्हारे उपर लाजिम है कि शिर्के अक्बर से बहोत ज्यादा डरो क्यो तुम्हारा तो इमान भि उनके मोकाबले बहोत हि ज्यादा कमजोर है।

وعن ابن مسعود -رضي الله عنه- أن رسول الله -صلى الله عليه وسلم قال: ((من مات وهو يدعو من دون الله نداً دخل النار)) رواه البخاري.

प्रश्नः इस हदीस कि व्यख्या किजिए और बताइए कि **"मन मात"** से क्या बात सामने आति है ? इस हदीस मे जो दुवा कहा गया है उसका यहाँपर क्या माना है और **"निद्दन"** से क्या मुराद है साथ हि साथ यह बताएं कि इस हदीस का विषय के साथ क्या सम्बन्ध है और इस से क्या बात समझ आति है ?
उत्तरः नबि ﷺ ने बताया कि जो शख्स शिर्क करता था और बगैर तौबा किए मर गया तो उसका ठिकाना नर्क है। मन मात शब्द से यह बात सामने आति है कि मौत से पहले अगर तौबा कर ले। और यहाँ दुवा का माना यह है कि किसि भि तरह कि इबादतको अल्लाह के एलावा किसि और के लिए करे। निद्दन से मुराद किसि चिजका नकल या कापि। हदीस का विषय के यह सम्बन्ध है कि इसमे हर तरह के शिर्क से डराया गया है। और इस हदीस से यह बात सामने आति है कि अल्लाह के सिवा किसि और को पुकारना जिसकि वह सामर्थ नहि रखता हो तो यह शिर्के अक्बर यानि बडा शिर्क है।

عن جابر – رضي الله عنه –: أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: من لقي الله لا يشرك به شيئاً دخل الجنة، ومن لقيه يشرك به شيئاً دخل النار (رواه مسلم)

प्रश्नः अल्लाह से मुलाकात का क्या माना है और यह मुलाकात कब होगि ? नफिका क्या फाइदा है और इस हदीस का विषयके साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अल्लाह से मुलाकात का माना है कि अल्लाह के सामने अपना हिसाब देने के लिए खडा होना और यह कयामत के दिन होगा। नफि का फाइदा का यह है कि किसि भि चिज कि जिद साबित होति है जैसे शिर्क का नफि यानि जिद तौहीद है । हदीसका

विषयके साथ यह सम्बन्ध है कि जो सख्स शिर्क करते हुवे मरेगा नर्क उसका ठिकाना होगा इस वजह से इस से बहोत ज्यादा डरना चाहिए।

प्रश्नः इस विषय मे जो आयतें और हदीसें बयान कि गई हैं उस से क्या क्या फाईदा हासिल होता है ?

1: हर मुस्लिम के उपर अनिवार्य है कि वह शिर्क से डरे।

2: रेयाअ अर्थात देखावा शिर्के अस्गर यानि छोटा शिर्क है लेहाजा इसमे पडने से बाज रहना चाहिए।

3: जो शिर्क से बच गया उसकि फजिलत व कामयाबि

4: नबि ﷺ कि अपने उम्मत के प्रति शफ्कत, उन्हों ने हर भलाई के बारे मे बताया और हर बुराई से बचने के लिए सावधान किया।

5: अल्लाह के सिवा किसि और से वह चिज मांगना जिसका वह सामर्थ ना रखता हो यह शिर्के अक्बर है।

6: जो मौत से पहले अपने गुनाहों से तौबा कर ले तो अल्लाह तआला उसके तौबाको स्विकार करता है।

धागा या कडा वा इस जैसि कौइ चिज मुसिबत से बचने के लिए पहेनना शिर्क है

प्रश्नः अल हलका व अल खैत से क्या मुराद है ? रफ्उल बला व दफइहि मे क्या फर्क है ? धागा व कडा पहेनना कैसा है ?
उत्तरः अल हलका का मतलब है तोक या कडा जो मुश्रिकीन बाजू या गले मे पहनते थे और यह गुमान करते थे कि यह नजरे बद या जिन्न वगैरह से उनको बचाएगा।
अल खैतः वह धागा जो हाथ मे पहनते हैँ मुश्रिकीन इसको पहेनकर यह गुमान करते थे कि यह धागा उनको बुखार वगैरह से बचाएगा।
रफउल बला व दफइहि मे यह फर्क है कि रफअ कहते है किसि भि चिज के लग जाने के बाद उसको हटाना और दफअ कहते हैँ लगने से पहले उसको हटाना। इसिलिए कडा और धागा वगैरह इस नियत से पहेनना कि यह बजाते खुद हमारी रक्षा करेगा शिर्के अक्बर है लेकिन पहेनने वाला यह समझता है कि यह मुसिबत से बचनेका सबब है तो यह शिर्के अस्गर है और शिर्क कि यह दोनों किस्में हराम है।

قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ

ए नबि आप कह दिजिए की अल्लाह के एलावा जिनकि तुम इबादत करते हो तो अगर अल्लाह तआला कोई नुक्सान पहोंचाना चाहे तो क्या यह उस नोक्सान से बचा लेंगे ? और अगर अल्लाह तआला किसिपर कृपा करना चाहे तो क्या यह सब उसके कृपाको रोक सकते हैं ?

प्रश्नः इस आयतका माना बताएं और इस से क्या साबित होता है यह बताएं ?
उत्तरः अनुवाद आप उनसे कहिए कि भला बताओ कि अगर अल्लाह तआला मुझे नुक्सान पहौँचाना चाहे तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो क्या वह मेरे इस नुक्सानको हटा सकते हैं ? या अल्लाह तआला मुझपर कृपा करे तो यह उस कृपाको रोक सकते हैँ ?[3]
इसका माना यह है कि अल्लाह के सिवा जिसको वह किसि भि चिज का सामर्थ नहि है। अल्लाह तआला अगर किसिको कोई नोक्सान पहौँचाना चाहे तो यह उस से बचा नहि सकते और अगर फाईदा पहोंचाना चाहे तो यह उस फाईदे को रोक नहि सकते। इस आयत से यह सबित होता है कि मुश्रिकीन का बुत पुजने वाला अकिदा और जाहिलोंका धागा बाधने वाला अकिदा दोनों मे कोई फर्क नहि है क्यों कि दोनों बातिल है क्यों कि सिर्फ अल्लाह तआला हि फाईदा और नुक्सानका मालिक है।

عن عمران بن حصين رضي الله عنه :أن النبي ﷺ رأى رجلاً في يده حلقة من صفر، فقال: ما هذه؟ قال: من الواهنة، فقال: انزعها فإنها لا تزيدك إلا وهناً، فإنك لو مت وهي عليك ما أفلحت أبدا (روبه أحمد)

अनुवादः इमरान बिन हुसैन रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबि ﷺ ने एक आदमिको बाजु मे पितलका एक कडा पहने हुवे देखा तो पुछा कि यह क्या है ? तो उसने जवाब दिया कि यह वाहेना (कमजोरी)कि बिमारी से बचने के लिए है। तो नबि ﷺ ने कहा कि इसे उतारो क्योँ कि यहा तुम्हारे अन्दर और कमजोरी पैदा कर देगा और अगर तुम इसि हालतमे मर गए तो कभि कामयाब नहि हो सकोगे।

प्रश्नः इसमे किस प्रकार का सवाल है ?
उत्तरः इन्कार वाला प्रश्न है और मुम्किन है कि तफ्तीश वाला प्रश्न हो।

---

[3] सुरह जुमर 38

प्रश्नः वाहेना का क्या माना है ?
उत्तरः हय हर तरह के दुर्बलता पैदा करने वालि बिमारी को बोला जाता है और यह कन्धा समेत पुरे हाथमे एक असरदार किसिम के दर्दको भि कहते हैं और कहा जाता है कि यह एसि बिमारी है जो पुरे हाथको अपने चपेटेमे ले लेता है।

प्रश्नः इस का क्या मतलब है कि इसको निकालो क्यों कि यह तुम्हारे अन्दर और कमजोरी पैदा करेगा इस आदेश से क्या बात बमझ आति है ?
उत्तरः नजअ का मतलब है कि सख्ति के साथ यह बताते हुवे निकालनेको कहना कि यह बिल्कुल भि फाईदा नहि देगा बल्कि उल्टा नोक्सान करेगा और कमजोरि मे वृद्धि करेगा। इस आदेश से यह बात समझ आति है कि अनिवार्य तौर पर यह काम करना जरूरी है क्यो कि इस तरह के गुनाह के काम से रोकना और उसको निकालनेका आदेश देना अनिवार्य है।

प्रश्नः अगर तुम इसि हालत मे मर गए तो कभि कामयाब नहि हो सकोगे इस से क्या समझना चाहिए ? और यहाँ अल-फलाह से क्या मुराद है ?
उत्तरः इससे यह बात समझ आति है कि गलत एतकाद के कारन जिस गुनाह मे पड गया है यह शिर्क है जो कि तौबा किए बगैर माफ नहि हो सकता। और अल-फलाह से मुराद खुशियोँ से भरा इनाम व यक्रम वाला कामयाबि है।

प्रश्नः हदीसे इम्रान का विषय से सम्बन्ध बताइए ?

उत्तरः विषय से सम्बन्ध यह है कि इस तरह का कडा वगैर से अकिदत जोडना शिर्क है इसि लिए नबि ﷺ ने इसको उतारने और इस जैसि चिजों से परहेज करनेका आदेश दिया।

عن عقبة بن عامر مرفوعا' من تعلق تميمة فلا أتم الله له و من تعلق ودعة فلا ودع الله له
و في رواية من تعلق تميمة فقد أشرك

उक्बा बिन आमिर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जिसने तमीमा पहेना तो अल्लाह तआला उसकि मुराद पुरि नहि करेगा और जो वदअ लटकाता है अल्लाह तआला उसके हाजतको पुरि नहि करेगा एक दुसरी हदीस मे है कि जिसने तमिमा लटकाया उसने शिर्क किया।

प्रश्नः इन शब्दोँ के माना बताइए। तअल्लक, तमिमा, वदअह,
उत्तरः तअल्लक का माना यह है कि किसि चिजेको लटकाकर उस से भलाई या बुराइ पाने कि उम्मीद लगाना। अत्तमीमा का मतलब है मोति और माला जो जाहिल लोग खुद भि जसम मे लटकाते हैं और अपने बच्चों व जानवरों को भि पहनाते हैं यह आस्था रखते हुवे कि यह नजरे बद से बचाएगा लेकिन यह सब जेहालत कि बातें है और जो ने भि यह करता है वह शिर्क करता है। अल वद्उ इस बहुवचन है वदअ यह एक किसमका सफेद सिपि कि तरह होता है जो समन्दर मे मिलता है जिसको नजर वगैरह से बचने के लिए लगाते हैं लेकिन इस्लाम ने इन सब चिजों को बातिल करार दिया हे।
फला अतम्मल्लाहु का माना है कि व अपनि मुराद नहि पाएगा और फला वदअल्लाहु लहु का माना है उसका सुकुन भि छिन जाएगा।
इब्दे अबि हातिम ने लिखा है कि होजैफ रजियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी के हाथमे बोखार से बचने के लिए धागा बाँधे हुवे देखा तो उस धागाको काट दिया और कुरआन कि यह आयत तेलावत किः وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ[4]

[4] सुरह युसुफ 106

प्रश्नः हुमा से बचने के लिए का क्या माना है ? होजैफा रजियल्लाहु अन्हुने इस आयत से कैसे इस्तदलाल किया और कया नतिजा निकाला ? विषयके साथ इसका सम्बन्ध बताईए।

उत्तरः हुमा यानि उसने अपने हाथमे बोखार से बचने के लिए धागा बाँध रखा था।

होजैफा रजियल्लाहु अन्हु ने इस आयत से यह इस्तदलाल किया कि यह काम शिर्क है। यस हदिस से यह नतिजा निकलता है कि इस तरहका काम शिर्क है।

विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है कि धागा बाँधकर उस से शेफा कि उम्मिद करना शिर्क के किसम मे से है इसि लिए होजैफा रजियल्लाहु अन्हु ने उसको काटकर फेंक दिया।

झाड फुँक और तावीज गन्डा का बयान

في الصحيح عن أبي بشير الأنصاري " أنه كان مع رسول الله ﷺ في بعض أسفاره؛ فأرسل رسولا أن لا يبقين في رقبة بعير قلادة من وتر، أو قلادة إلا قطعت."

وعن ابن مسعود τقال: سمعت رسول الله ﷺ يقول :إن الرقى والتمائم والتولة شرك رواه أحمد وأبو داود.

وعن عبد الله بن عكيم مرفوعا :من تعلق شيئا وُكل إليه رواه أحمد والترمذي.

अनुवाद अबु बशीर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि वह किसि सफर नबि ﷺ के साथ थे तो आप ﷺ ने उनको यह कहकर भेजा कि जाओ किसि भि शख्स के उँट के गर्दन मे ताँत या हा तावीज हार हो तो उसको काट देना।

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजियल्लाहु ने बताया कि नबि ﷺ ने कहाः बेशक झड फुँक, तावीज गन्डा शिर्क है।

अब्दुल्लाह बिन उकैम नबि ﷺ कि तरफ मन्सूब करते हुवे कहते हैँ किः जिसने भि तावीज गन्डा जैसी कोई चिज लटकाई वह उसि के हवाले कर दिया जाता है। इस हदीसको इमाम अहमद और तिर्मिजी ने लिखा है।

अत्तमाइमः वह चिज जो बच्चों के गर्दन या बाजु वगैरह मे लट्याजाता है नजरे बद से बचने के लिए लेकिन अगर कुरआन कि आयत पहना है तो कुछ सलफ ने इसकि इजाजत दी है लेकिन कुछ ने इस से रोका है और इसको इसतेमाल न करने वालि चिजोँ मे शुमार किया है उनमे इब्ने मसऊद रजियल्लाहु अन्हु हैं।

अर्रुकयाः झाडफुंक को कहते हैँ। जिस मे शिर्क है उसके एलावा मे झाडफुँक करने को नबि ﷺ ने इजाजत दिया है जैसे कि बुखार और नजरे बद वगैरह।

अत्तेवलहः यह एक किसम का टोना टोटका है जिस के जरीए शौहरको बिवि से ज्यादा मोहब्बत के लिए करते हैँ या किसि मर्दको किसि औरत कि तरफ माएल करने के लिए करते हैँ।

रोवैफा बयान करते हैँ कि नबि ﷺ ने मुझसे कहा किः ए रोवैफा मुम्किन है कि तुम्हारी जिन्दगी लम्बि हो तो लोगोँ को बताना कि जिस ने भि ताँत या कन्डा पहेना या जानवर के गोबर या उसके हड्डि से शेफा चाहा तो मोहम्मद ﷺ उससे बरी हैँ।
सईद बिन जुबैर कहते हैँ जिस ने किसि आदमी के गर्दन से तमीमा उतारा या उतरवाया तो उसके लिए एक गुलाम आजाद करने के बराबर सवाब है वह कहते हैँ कि सहाबा तमीमा लट्काने को बुरा ना पसन्द करते थे चाहे कुरआन से हो या न हो।

प्रश्नः वतर के कलादा से क्या मुराद है ? वतर किसे कहते हैँ ?
उत्तरः कलादा से वह चिज मुराद है जो पुराने जमाने के लोग धागा, ताँत या पितल वगैरह का बनाकर उँट और दुसरे जानवरोँ को यह समझ कर पहनाते थे कि यह हमारे जानवरोँ को नजरे बद से बचाएगा, इस्लाम ने इन सारी चिजोँ को बातिल करार दिया है।

प्रश्नः नबि ﷺ ने इस कलादा और तावीज गन्डाको काटने का आदेश दिया इस से क्या बात समझ आति है ?
उत्तरः आदेश से यह पता चलता है कि किसि भि सुरत मे इस कि अनुमति नहि है।

प्रश्नः अर्रुकिया का परिचय बताईए और यह करना कैसा है ?
उत्तरः अर्रुकिया इसका बहु बचन रुक्यतुन है। यह वह है जिस के जरीए झाडफुँक किया जाता है बोखार, नजर वगैरह लगने पर। इस कि दो किस्मेँ हैँ एक जाएज जो कि शिर्क से खालि हो मगर तीन शर्तों के साथ जाएज है।
1: अरबि भाषामे हो जसका माना मालूम हो

2: कुरआन से या हदीस से या अल्लाह तआला के सेफाति अर्थात गुणवाचक नाम के जरिए हो।

3: इन दोनो शर्त के साथ साथ यह अकीदा हो कि शिफा देनेवाला सिर्फ अल्लाह कि जात है।

इस के एलावा अगर कोई चिज है या कौइ और अकीदा है तो वह जाएज नहि है।

प्रश्नः तमाएम का परिचय बताइए और साथ साथ यह भि बताईए कि इसको लट्काना कैसा है ?
उत्तरः अत्तमाइमः वह चिज जो बच्चों के गर्दन या बाजु वगैरह मे लट्याजाता है नजरे बद से बचने के लिए लेकिन अगर कुरआन कि आयत पहना है तो कुछ सलफ ने इसकि इजाजत दी है लेकिन कुछ ने इस से रोका है और इसको इसतेमाल न करने वालि चिजोँ मे शुमार किया है।

प्रश्नः तेवलह क्या है और यह शिर्क क्यों है ?
उत्तरः अत्तेवलहः यह एक किसम का टोना टोटका है जिस के जरीए शौहरको बिवि से ज्यादा मोहब्बत के लिए करते हैँ या किसि मर्दको किसि औरत कि तरफ माएल करने के लिए करते हैँ।
यह शिर्क इस कारन है क्यो कि अल्लाह के सिवा किसि और से नफा पाने और नोक्सान हटाने का सहारा लिया जाता है।

प्रश्नः इस बात का क्या मतलब कि जो कोइ चिज लटकाता है वह उसि के हवाले कर दिया जाता है ?
उत्तरः उम्मिद लगाना दिल से होता है कभि काम के जरीए होता है तो किसि भि कामको करके अल्लाह को छोड कर उस काम हि से उम्मिद लगाना के यहि मुझे नफा या नुक्सान देगा तो यह शिर्क है। गोया वह दुसरे के हवाले हो गया।

प्रश्नः नबि ﷺ कहा कि लोगों को बताना इस से क्या मालुम होता हो ? क्या यह काम रोवैफा के लिए खास था ?
उत्तरः यह साबित हो है कि लोगों को इस खलरे से आगाह करना जरूरी है और यह काम सिर्फ रोवैफा के साथा खास नहि था बल्कि हर उस आदमी पर वाजिब है जिसके पास इसका ज्ञान हो।

प्रश्नः अक्दिल लेहया से क्या मुराद है ?
उत्तरः यह दो पक्षोंपर व्याखया करता है एक यह कि युद्ध मे जितने केलिए एसा करते थे
दुसराः महिलाओं के बालपर किया जाता है के वह उसि मे उल्झि रहे।

प्रश्नः जिस ने वतर लटकाया इस बात से क्या मुराद है ? और वतर लटकाने के बारे मे क्या आदेश है ?
उत्तरः इसका मतलब यह है कि कोई भि आदमी अपने या अपने जावनरके गर्दनमे कोइ चिज इस नियत से लटकाए के वह उसको फाईदा या नुक्सान पहोँचाएगा एसा करना शिर्क है।

प्रश्नः नबि ﷺ इस से बरी हैं का क्या मतलब ?

उत्तरः यानि कि यह काम करना हराम है नबि ﷺ का तरीका नहि है जो भि करेगा उसपर गुनाह है।

प्रश्नः सईद बिन जुबैर के कौलका क्या माना है ? और इब्राहीम नखई ने जो कहा कि इस तरह के हर कामको वाह लोग नामासन्द करते थे इस का क्या मतलब ?
सईद बिन जुबैर ने कहा कि जिस ने भि किसि इन्सान के गर्दन से तमीमा उतारा तो उसको एक गुलाम आजाद करने के बराबर सवाब है। और इस से इस तरह के तमीमा काटने कि फजिलत साबित होति है क्यों कि यह शिर्क है। और इब्राहीम नखई कि बात के वह लोग नापसन्द करते थे यानि कि इस कामको हराम समझते थे। और इस से वह अब्दुल्लाह बिन मस्उद और उन के साथ मुराद लिया है।

अल्लाह के एलावा किसि और के लिए जबह करना शिर्क है

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ- لَا شَرِيْكَ لَهٗ (الأنعام١٦٢) و قوله: فصل لربك و انحر (الكوثر)

अनुवादः ए नबि कह दिजिए कि बे शक मेरी नमाज, मेरि कुर्बानी, मेरि जिन्दगि और मौत सब उस पालनहार के लिए है जो तमाम जहाँनोंका रब है जिसका कोई शरीक नहि (सुरह अन्आम आयत 162-163)

عن علي قال: حَدَّثَنِي رسول الله بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ: لَعَنَ اللَّهُ مَنْ لَعَنَ وَالِدَهُ ، وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللَّهِ ، وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ آوَى مُحْدِثًا ، وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ غَيَّرَ مَنَارَ الْأَرْضِ

अनुवादः हजरत अलि रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबि ﷺ ने मुझसे चार बाते कहिः जो अपने बाप पर लानत करता है उसपर अल्लाह तआला कि लानत, जो अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जानवर जबह करता है उसपर अल्लाह तआला कि लानत, जो किसि मुजरिमको पनाह दे उसपर अल्लाह कि लानत, जो जमीन कि निशानियोँ को बदल देता है उसपर भि लानत ।

وعن طارق بن شهاب: أن رسول الله ﷺ قال :دخل الجنة رجل في ذباب، ودخل النار رجل في ذباب .قالوا: وكيف ذلك يا رسول الله؟ قال :مر رجلان على قوم لهم صنم لا يجوزه أحد حتى يقرب له شيئا، فقالوا لأحدهما: قرب، قال: ليس عندي شيء أقرب. قالوا له: قرب ولو ذبابا، فقرب ذبابا، فخلوا سبيله؛ فدخل النار. وقالوا للآخر: قرب، فقال: ما كنت لأقرب لأحد شيئا دون الله عز وجل، فضربوا عنقه؛ فدخل الجنة رواه أحمد.

अनुवादः तारिक बिन शेहाब रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबि ﷺ ने फरमायाः एक आदमी मख्खि कि वजह से जन्नत मे दाखिल हुवा जब कि दुसरा आदमी मख्खि कि वजह से जहन्नम मे गया। सहाबा ने पुछा यह कैसे हुवा या रसुलल्लाह ? आप ﷺ ने फरमायाः दो आदमी एक कबीले से गुजर रहे थे उस कबीला के पास एक बुत था कोई भि शख्स उस बुतपर चढावा भढाए बगैर वहाँ से आगे नहि बढ सकता था। उन लोगों ने पहले आदमी से कहा कुछ चढावा चढाओ उसने कहा मेरे पास तो कुछ भि नहि है तो उन लोगों ने कहा कि एक मख्खि हि चढा दो। तो उस ने मख्खि मार कर चढा दिया इसपर उस कौम के लोगों ने उसको जाने दिया लेकिन उसका ठिकाना जहन्नम हुवा। दुसरे आदमी से उन लोगों ने वहि बात कहि लेकि दुसरे आदमी ने कहा कि मै अल्लाह के सिवा किसि के लिए कुछ भि नहि चढाउँगा तो उन लोगों ने उसकि गर्दन मार दि तो वह जन्नतका हकदार हुवा। इस हदीसको इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

प्रश्नः यन दोनो का व्याख्या करते हुवे बताओ कि विषय के साथ इसका क्या सम्बन्ध है ? और नुसुक का क्या माना है ?

उत्तरः पहलि आयत मे अल्लाह तआने कहा कि हे मोहम्मद ﷺ इन मुश्रिकों से जो अल्लाह के एलावा दुसरों कि इबादत करते हैं और दुसरे के लिए चढावा चढाते हैं उन से कह दिजिए कि बे शक मैने अपनि नमाज अपनि कुरबानी और मेरि जिन्दागि मे पेश आने वाला हर काम यहाँ तक कि मेरी मौत सब मैने अल्लाह के लिए खास कर दिया है। मै अल्लाह के साथ हरगिज भि शिर्क नहि करूंगा ।

नुसुक का माना जबह है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि فصل لربك و انحر अपने रब के लिए हि नमाज पढो और उसि के लिए कुरबानी करो।

विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है कि जबह इबादत कि कस्मों मे से है इसि लिए यह अल्लाह के लिए खास होनि चाहिए। जिस ने भि अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जबह किया उसने शिर्क किया।

प्रश्नः अल्लअन का क्या माना है ?
उत्तरः अल्लअन का माना अल्लाह तआला कि कृपा से दूरी है जसको अल्लाह तआला अपने दर से भगा दे दुत्कार दे।

प्रश्नः नबि ﷺ ने अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जबह करने वाले क्यों लानत किया है ?
उत्तरः क्यो कि यह बहोत हि बडा गुनाह है जो करता है वह शिर्क करता है।

प्रश्नः माँ बाप पर लानत का क्या मतलब ? उनमर कैसे कोई लानत करता है और एसा करने वाले का क्या हुक्म है ?
उत्तरः इसका मतलब यह है कि वह अपने माँ-बाप को गालि देता है। यह दो तरह से हो सकता हैः
नः १- सिधा सिधा माँ-बाप से झगडा करके उनको गालि देता हो लानत मलामत करता हो।
नः २- यह किसि और के माँ-बाप को गालि दे तो पलटकर दुसरा आदमी इसके माँ-बापको गालि दे गोया यह खुद अपने माँ-बापको गालि और लानत मलामत दिलाने कि वजह बनता है। यह दोनो हि काम कबीरा यान बडे गुनाहोँ मे से है।

प्रश्नः आवा मुह्दिसन का क्या मतलब ? और मोहदिस से क्या मुराद है ?
उत्तरः यानि कोई अपराधि कि हिमायत करे और मजलूमको उसका अधिकार व न्याय पाने मे बाधा बने उसके लिए यह शब्द इस्तेमाल होता है। मोहदिस से मुराद कोई नई चिज इजाद करना है।

प्रश्नः मनारुल अर्ज क्या है ? और उसको बदलनेका क्या मतलब ?
उत्तरः बदलनेका अर्थ यह है कि उसको हटा दे या मिटा दे, और मनारूल अर्जका मतलब है एलामात, निशानियाँ, सरहद। कुछ भाषा विज्ञ कहते हैं कि इस से मुराद वह एलामात हैं जिस से यात्रि मदद लेते हैं और कुछ कहते हैँ कि इससे मुराद वह सरहद है जिससे लोग अपने और अपने पडोसि के जमीन कि हद जान पाते हैं तो बदलने वाल उसको आगे या पिछे कर देता है उसको आवा मुह्दिस कहते हैं।

प्रश्नः निशानियोँ को तब्दील करने वालेपर क्योँ लानत कि गई है ?
उत्तरः क्यों कि उसने मोसाफिरोँ को गुमराह करने या अपने पडोसि कि जमीन नाहक कब्जा करनेका काम किया है जो कि बहोत हि बडा जुर्म है।

प्रश्नः इस हदीस का वह असल वाक्य बताइए जो कि विषय से सम्बन्ध रखता है।
उत्तरः उस शख्स पर लानत हो जो अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जबह करता है।

प्रश्नः मख्खि कि वजह से जन्नत मे दाखिल हुवा का क्या मातलब ?
उत्तरः यानि उस मख्खि जैसा हकीर किडा को भि बुत पर न चढाने कि वजह से।

प्रश्नः सहाबा का सवाल कि यह कैसे !!! यह सवाल का कौन सा किसम है ?
उत्तरः यह तआज्जुब व आश्चर्य वाला प्रश्न है।

प्रश्नः सनम किसको कहते हैँ ?
उत्तरः हर उस हैअत या तस्वीरको सनम कहते हैं जिसकि अल्लाह के सिवा पुजा इबादत कि जाति हो।

प्रश्नः इसका क्या मतलब कि किसि के लिए भि जाना जाएन नहि जबतक कि उसके लिए कुछ चढावा न चढाए ?
उत्तरः यानि किसिको भि यहाँ आगे नहि जाने देगें जब तक कि वह कोई चढावा न चढाए चाहे वह छोटा से छोटा चढावा हि क्यों न हो।

प्रश्नः इसका क्या मतलब कि उसने मख्खि चढा दिया तो लोगों ने उसको जाने दिया लेकिन उसका ठिकाना जहन्नम है ?
उत्तरः यानि शिर्क बहोत हि खतरनाक काम है अगर चे छोटि चीजके जरिए हि क्यों न हो ।

प्रश्नः दुसरे आदमीका कि मै अल्लाह के सिवा किसि के लिए हरगिज हरगिज चढावा नहि चढाउँगा का क्या मतलब ?
उत्तरः इसका मतलब यह है कि तौहीद बहोत हि अहेम और शिर्क बहोत हि खतरनाक शै है ।

प्रश्नः हदीसे तारिक का विषय के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः यह हदीस इस बातपर दलालत करति है कि जसि ने भि अल्लाह के सिवा किसि और के लिए जबह करना शिर्क है ।

अल्लाह के सिवा किसि और के लिए नजर मन्नत मानना शिर्क है

प्रश्नः इस विषयका केताबुत्तौहीद के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अल्लाह के लिए नजर मानना इबादत है और किसि दुसरे के लिए नजर मानना शिर्क है जो तौहीद के विपरित है।

प्रश्नः नजर कि लोगवि शरई परिभाषा बताईए ?
उत्तरः डक्शनरी के हिसाब से नजर कहते है अनिवार्य करना, शरियत के हिसाब से जो चिज अपने उपर जरूरी ना हो उसको अपने उपर लाजिम करना।

قال الله تعلى: (يوفون بالنذر

अनुवादः वह लोग नजर मन्नत को पूरा करते है।[5]

प्रश्नः आयत से क्या बात साबित होता है और इसका विषय के साथ कया सम्बन्ध है ?
उत्तरः आयत से यह साबित होता है कि मन्नत पूरा करना वाजिब है और जो पूरा करता है कुरआन ने उसकि तारीफ कि है। विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है कि अल्लाह तआला ने नजर पूरी करने वालों कि तारीफ कि है जो इस बात का सबूत है कि नजर इबादत है सो जो शख्स अल्लाह के सिवा किसि और के लिए नजर मानेगा उसने शिर्क किया।

قوله تعالى: {وَمَا أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُه
अनुवादः तुम जो कुछ भि खर्च करते हो और जो कुछ भि नजर मानते हो वह सब अल्लाह तआलाको खुब मालूम है।[6]

प्रश्नः इस आयत का व्याख्या करते हुवे विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताइए ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने इस आयत मे बताया है कि अल्लाह तआलाको हर काम करने वाले के काम और मन्नत मानने वाले के मन्नत के बारे मे बखुबी मालूम है और बेशक अल्लाह हि इस सबका जजा देने वाला है।

विषयके साथ इसका सम्बन्ध यह है कि हम जो भि उसकि राह मे खर्च करते हैं जो भि मन्नत मानते हैं वह सब अल्लाहको मालूम है और वहि उसका बदला देने वाला है इस से यह बात साफ हो जाता है कि मन्नत इबादत है तो जिस ने अल्लाह के एलावा किसि और के लिए मन्नत माना उसने शिर्क किया।

عن عائشة رضي الله عنها قالت: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : "من نذر أن يطيع الله فليطعه. ومن نذر أن يعص الله فلا يعصه". رواه البخاري.
अनुवादः हजरत आईशा रजियल्लाहु अन्हा कहति हैं कि नबि ﷺ ने फरमायाः जो अल्लाह तआला के आज्ञाकारी कि मन्नत माने तो वह अपनी मन्नत पूरी करे और जो अवज्ञा की मन्नत माने तो उसको पूरा ना करे। (बोखारी)

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या करें और इस से क्या बात सामझ आई है वह भि बताएं इसी तरह से विषय के साथ इसका सम्बन्ध बि स्पस्ष्ट करें।
उत्तरः नबि ﷺ ने बताया कि जो व्यक्ति अपने उपर अल्लाह तआला की एताअत कि मन्नत माने तो उसे वह मन्नत पूरी करनी चाहिए क्योँ कि अल्लाह तआला कि एताअत करना जरूरी है लेकिन अल्लाह तआला कि नाफरमानी करने से मना किया है क्योँ कि नाफरमानी करना हराम है।

---

[5] सुरतुल इन्सान आयत 7

[6] सुरतुल बकरह आयत 270

इस से यह बात बमझ आति है किः
1: फरमाबरदारी वाली मन्नतको पूरा करना वाजीब है।

2: गुनाह वाली मन्नतको पुरा करना जाएज नही है।

विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है किः अल्लाह के सिवा किसी और के लिए मानि गई मन्नत पूरा करना हराम है क्यों कि यह शिर्क होगा।

अल्लाह के सिवा किसी और से शरण मागना शिर्क है

प्रश्नः इस विषयका केताबुत्तौहीद के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः यह कि अल्लाह से शरण मागना इबादत है और इबादत किसी और कि करना शिर्क है जो कि तौहीदका उलट है।

प्रश्नः इस्तेआजा का परिभाषा क्या है ? और अल इयाज और अल्याज मे क्या फर्क है ?
उत्तरः इस्तेआजा यानि कि शरण मागना, पनाह मागना, सहारा कि अपील करना।
अलइयाज का मतलब है बुराई को दूर करना और अलयाजका मतलब है भलाई तलब करना।

قال تعالى: {وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا}
अनुवादः कुछ लोग जिन्नातों से पनाह तलब करते थे जसकि वजह से जिन्नात अपनी सरकशी मे और बढ गए[7]।

प्रश्नः इस आयतके अवनरण होनेका सबब बताइए साथ साथ यह भि बताएं कि इस से क्या साबित होता है ?
उत्तरः अवतरणका सबब यह है कि पुराने जमाने मे लोग जब किसी सुनसान जगहपर ठहरते और उनको वहाँ डर लगता तो वह लोग कहते किः हम इस वादी के सरदार के शरण मागते हैँ कि वह हमें अपने समुदाय के कमिने सदस्यों के शर्र से हमे बचाएं यानि वह वहाँ के बडे जिन्न से शरण तलब करते थे तो जब जिन्नातों ने देखा कि इन्सान उनसे शरण मागते हैं तो उन्होने इन्सानोंको और डराना शुरू कर दिया।

इस आयत से यह साबित होता है किः अल्लाह तआलाने इसमे इमान वाले जिन्नोंका जिक्र किया है कि जब उनको मोहम्मद ﷺ के लाए हुवे दीन के बारेमे मालूम हुवा तो उन्होँने इस्लाम कबूल कर लिया। इसि तरह से इसमे शिर्क के बारे मे वर्णन है जो कि वह लोग जाहिलियत मे करते थे उसि मे इस शरण मागने का जिक्र है।

عن خولة بنت حكيم رَضِيَ اللَّهُ عَنها قالت سمعت رَسُول اللَّهِ ﷺ يقول: (من نزل منزلاً ثم قال: أعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق، لم يضره شيء حتى يرتحل من منزله ذلك) رَوَاهُ مُسلِمٌ.
अनुवादः खौला बिन्ते हकीम कहति हैं कि मैने नबि ﷺ को कहते हुवे सुना किः जो शख्स किसी जगह पर ठहरे और यह दुवा पढे "أعوذ بكلمات الله التامات من شر ما خلق" तो उसको कोई भि चिज नुक्सान नहि पहौँचा सकति है यहाँ तकि कि वह उस जगह से निकल जाए।

प्रश्नः इस हदीस से क्या बात समझ आति है और कलेमातिल्लाहित् ताम्मात से क्या मूराद है ? ताम्मात का क्या माना है ? हदीसका विषय के साथ क्या सम्बन्ध है बताइए ? और मिन् शर्रे मा खलाक का क्या माना है ?
उत्तरः १- इस से यह बात साबित होता है कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह आदेश दिया है कि वह अल्लाह के कलाम के जरीए शरण तलब करें, जाहिलियत कि तरह से जिन्नातों से शरण न मागें।

२- इस दुवा का महत्व पता चलता है।

३- कलेमातिल्लाह से मुराद कुरआन है और ताम्मात का मतलब है कि उसमे उसके कलाम मे ना कोइ कमी है ना कोई एब

[7] सुरह जिन्न आयतः 6

हदीसका विषयके साथ सम्बन्ध यह है कि अल्लाह का कलाम गैर मख्लूक है क्यो कि मख्लूक से शरण तलब करना शिर्क है। मिन् शर्रे मा खलक का मतलब यह है कि हर उस सृष्टि से जिस मे शर्र यानि नोक्सान व बुराई है।

इस विषय से यह फाईदा है किः
हर मुसलमान पर यह वाजिब है कि वह हरपर अल्लाह का जिक्र करता रहे उससे कभि गाफिल ना हो।
सिर्फ अल्लाह के नामके जरीए शरण मांगना जाएज है उसके सिवाए नहि।
जिन्नातों से अपनि हाजत पूरी करने के लिए शरण मागना कुफ्र और गुमराही है क्यों कि जिसको अल्लाह तआला देना चाहे उसको कोई रोक नहि सकता और जिस से अपनी नेमत छीनले उसको कोई दे नहि सकता।

अल्लाह के एलावा किसी और से मुश्कीलें दुर करने कि दुवा करना शिर्क है

प्रश्नः इस विषयका केताबुत्तौहीद के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अल्लाह से इस्तेगासा करना इबादत कि किस्म मे से है इसिलिए किसी भि तरह की इबादत गैरुल्लाह के लिए करना शिर्क है।

प्रश्नः इस्तेगासा कि परिभाषा क्या है ?
उत्तरः इस्तेगासा कहते हैं परेशानी व मुश्किलातको दूर करने कि दुवा करना।

प्रश्नः इस्तेगासा के कितने प्रकार हैं ?
उत्तरः इस्तेगासा के तीन प्रकार हैं।
१- वाजिब जो कि अल्लाह से मांगा जाता है।

२- हरामः जो कि अल्लाह के सिवा किसि और से मांगा जाता है।

३- जाएजः जिन्दा, हाजिर और सक्षम से मांगा जाता है।

प्रश्नः दुवा कि कितनी किस्में हैं ? हर एक कि परिभाषा बताइए ?
उत्तरः दुवा कि दो किस्में हैँ
पहलाः इबादत वालि दुवा जो कि अल्लाह तआला से तकर्रुब हासिल करने के लिए किया जाता है जिसका आदेश स्वयम अल्लाह तआला ने दिया है।
दुसराः दुवाए मसअला, यह एक तलब है जो दुवा करने वालेको फाईदा पहोंचाता है या नुक्सान से महफूज रखता है।

قال تعالى: وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ

अनुवादः तुम अल्लाह तआलाको छोड कर किसी और कि इबादत मत करना जो तुम्हे ना नफा पहोंचा कसता है और ना हि नुक्सान वर्ना ऐसा करनेपर तुम अत्याचारियों मे से हो जाओगे[8]।

प्रश्नः इस आयत का व्याख्या किजिए और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताइए ?

उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने कहा है कि हे मोहम्मद ﷺ आप अपने माबूदको छोडकर किसि और माबूद कि इबादत हरगिज मत किजिएगा जो ना आपको दुनियाँ व आखेरत मे कोई नफा पहोंचा सकते हैं ना कोई नुक्सान ना धार्मिक फाईदा दे सकता ना भौतिक। यानि कि वह मुर्ति और दुसरी चिजोंको किसी नफा कि लालच या किसी नुक्सान के डर से ना पूजना, यदि आपने एसा किया और अल्लाह तआलाको छोड किर किसि और कि ईबादत कि तो आप अत्याचारीयों मे से हो जाएंगे अर्थात शिर्क करने वालों में से हो जाएंगे।

आयतका इस विषय के साथ सम्बन्ध यह है कि अल्लाह के सिवा कोई भि दुसरा नहि है जो फाईदा या नुक्सान पहोंचा सके इस कारण अगर कोई अल्लाह के सिवा किसी और से तलब करता है तो वह मुश्रिक है।

قال تعالى: وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ

[8] सुरह युनुस 106

अनुवादः अगर अल्लाह तआला तुमको तक्लिफ पहोंचाए तो कोई उस तक्लीफको दूर करने वाला नहि और अगर अल्लाह तआला कोई नफा पहोंचाना चाहे तो कोई भि उस कृपाको रोकने वाला नहि[9]।

प्रश्नः इस आयत का व्याख्या करिए और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताइए ?
उत्तरः इस मे अल्लाह तआला ने बताया है कि नफा व नुक्सान और अता करने व रोकने मे वह अकेला है जसका कोई साझि नहि है इसि लिए उसि से हमेशा मांगा करो किसि और से हरगिज मत माँगो।

विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है कि जब अल्लाह तआला हि अकेला नफा व नुक्सानका मालिक है तो फिर उसि से यह सब तलब किया जाए अगर किसी और से यह तलब किया गया तो शिर्क होगा।

قال تعالى: فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
अनुवादः तुम्हे चाहिए कि तुम अल्लाह हि से अपनि रोजी (जिविका) तलब करो और उसि कि इबादत करो और उसी कि शुक्रगुजारी करो, तुम उसि के तरफ लौटाए जाओगे[10]।

प्रश्नः فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللهِ الرِّزْقَ का क्या माना है ?
उत्तरः यानि अल्लाह हि से रिज्क तलब करो जो उसका अकेला मालिक है दुसरे किसी से हरगिज तलब मत करो।

प्रश्नः وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ से क्या मुराद है ?
उत्तरः खालिस उसि कि इबादत करो और उसके दिए हुवे रिज्क और इन्आमात पर उसका शुक्रिया अदा करो।
प्रश्नः اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ का क्या मतलब है ?
उत्तरः यानि उसि के तरफ लौटकर जाना है और वह कयामत के दिन हर कामका बदला देगा।

प्रश्नः فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللهِ الرِّزْقَ इस का विषय के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि रिज्क सिर्फ उसि से मांगा जाए क्यों कि सिर्फ वहि रिज्कका मालिक है तो अगर कोई शख्स अल्लाह के सिवा किसि और से रिज्क मागता है तलब करता है तो वह शिर्क करता है।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑤ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑥

अनुवादः और उस से बढकर गुमराह कौन हो सकता है जो ऐसे लोगोंको पुकारते हैं जो कयामत तक उसकि पूकारको नहि सुन सकते बल्कि वह तो उनके पूकारसे बेखबर हैं। और जब लोगोंको जमा किया जाएगा तो यह उनके दुश्मन हो जाएंगे और उनके इबादत से साफ इन्कार हो जाएंगे[11]।

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या किजिए और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताइये ?

---

[9] सुरह युनुस 107
[10] सुरह अन्कबूत 17
[11] सुरह अल अहकाफ 5,6

उत्तरः इस आयत मे अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने यह बताया है कि उस से ज्यादा गुमराह और कोई नहि जो अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारता है और यह भि बताया कि जिसको यह लोग पुकारते और मदद मागते हैं वह तो इनके पुकार से भि बेखबर हैं और कयामत तक जवाब नहि दे सकते। अल्लाह तआला ने यह भि बताया है कि कयामत के दिन जब लोगोँ को हिसाब किताब के लिए जमा किया जाएगा तो वह लोग इन इबादत करने वालों कि इबादत का इन्कार करेंगे बल्कि उल्टा उनके दुश्मन हो जाएंगे।

विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है किः उस से ज्यादा गुमराह और कोई नहि जो अल्लाह के सिवा किसी और को पुरकारता है क्यों कि यह शिर्क है।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ
अनुवादः जब कोई मजबूर दुवा करता है तो उसकि दुवा को कबूल करके कौन उसकि परेशानीमो दूर करता है[12]

प्रश्नः इस आयत का व्याख्या करिए और इस से क्या बात साबित होति है वह बताईए।
उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने बताया है कि अरब के मुश्रिकीनों को यह मालूम था कि अल्लाह के सिवा कोई और मजबूरी और बेबसी दूर नहि कर सकता है तो जब उनके माबूद मजबूरि व बेबसि मे भि उनकि दुवा व पुकार सुन नहि सकते उस पुकार का जवाब नहि दे सकते तो अल्लाह के सिवा किसि औरको पुकारना और अल्लाह के साथ किसी औरको शरीक बनाना बिल्कुल भि जाएज नहि है बल्कि शिर्क है।

وروى الطبراني بإسناده "أنه كان في زمن النبي ﷺ منافق يؤذي المؤمنين، فقال بعضهم: قوموا بنا نستغيث برسول الله ﷺ من هذا المنافق، فقال النبي ﷺ :إنه لا يستغاث بي، وإنما يستغاث بالله.
अनुवादः नबि ﷺ के जमाने में एक मोनाफिक आदमी सहाबाको तंग करता था तो कुछ सहाबा ने कहा कि क्यों न हम इस मोनाफिक के शर्र से बचने के लिए नबि ﷺ से इस्तेगासा करें, तो नबि ﷺ ने कहा कि मुझ से इस्तेगासा ना करो क्यों कि इस्तेगासा सिर्फ अल्लाह से किया जाता है। (इस हदीस को तबरानी ने रिवायत किया है)

प्रश्नः इस मोनाफिक से कौन मूराद है ?
उत्तरः अब्दुल्लाह बिन ओबइ बिन सलूल मोनाफिकों का सरदार मुराद है।

प्रश्नः قوموا بنا نستغيث برسول الله इसका क्या माना है ?
उत्तरः इस माना यह है कि चलो नबि ﷺ के पास ताकि वह इस मोफिक के शर्रको हम से दूर कर दें क्यों कि वह इसपर कादिर हैं या उसको कत्ल करके उस से हमें नजात दिला दें।

प्रश्नः नबि ﷺ ने अपनि जिन्दगि मे उनसे इस्तेगासा करने से क्यों मना कर दिया जब कि वह इसकि क्षमता रखते थे ?
उत्तरः तौहीद कि हिफाजत के लिए इन्कार किया ताकि शिर्कका चोर दरवाजा भि बन्द हो जाए साथ हि साथ अपने रब के एहतराम के लिए भि एसा करने से मना किया और अपनी उम्मतको कौलि व फेअली दोनों तरह के शिर्क से बचने के लिए सावधान किया।

[12] सुरह नमल 62

इस से यह बात साफ हो जाता है कि जो किसी एसे शख्स से इस्तेगासा करता है जो उसकी क्षमता नहि रखता तो यह शिर्क है जो कि जहन्नम मे ले जाएगा। अल्लाह तआला हम सबको इस से बचाए आमीन

क्या वह लोग ऐसे लोगों को शरीक बनाते हैं जो कोई भि चीज सृष्टि नहि कर सकते बल्कि वह खुद सृष्टि किए गए हैं

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَآ أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ

अनुवादः क्या वह लोग ऐसे लोगों को शरीक बनाते हैं जो कोई चीज सृष्टि नहि कर सकते बल्कि वह खुद सृष्टि किए गए हैं। न वह लोग दुसरों कि मदद कर सकते हैं न खुद कि मदद कर सकते हैं।

प्रश्नः इस आयत कि व्यख्या करें और केताबुत्तौहीद से इसका सम्बन्ध बताएँ।
उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने शिर्क करने वालों कि मोजम्मत कि है और उनके इबादत से किसी भि तरह के फाईदा ना होनेका जिक्र किया है क्योँ कि वह कुछ भि सृष्टि नहि कर सकते बल्कि खुद उनकि सृष्टि अल्लाह तआला ने किया है। तो जिस कि सृष्टि कि गई है वह सृष्टिकर्ता के बराबर कैसे हो सकता है ? बे शक वह लोग न खुद अमनि मदद कर सकते हैं ना हि दुसरों कि, तो एसे लोगों कि ईबादत कर के कोई फाईदा हासि नहि होने वाला।
केताब के साथ इसका सम्बन्ध यह है किः इस से गैरूल्लाह कि इबादत का इनकार साबित होता है।

प्रश्नः लेखक ने इस विषय से क्या बताने कि कोशिस कि है ?
उत्तरः यह बताने कि कोशिस कि है कि अल्लाह के सिवा जिक किसी कि भि इबादत होति है वह कभि भि उनकि पुकार नहि सुन सकते और ना हि उनके सवालों के जवाब दे सकते हैं चाहे वह फरिश्ते हों या अवतार (अम्बेया, नबी) या अच्छे लोग हों, अल्लाह के सिवा कोई भि नफा नुक्सानका मालिक नहि है।

قال الله تعلى: وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ

अनुवादः अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते हो वह तो खजूर के गुठलि के छिलके के भि मालिक नहि हैं[13]।

प्रश्नः इस अयत कि व्याख्या किजिए और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताईए। कित्मीर का क्या माना है ?
उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने उन माबूदों कि कमजोरी और बे बसि बयान किया है जिन कि अल्लाह के सिवा पूजा होति है। और यह बताया है कि वह थोडा या ज्यादा किसी भि चीज के मालिक नहि हैं।
विषय के साथ इसका सम्बन्ध यह है किः अल्लाह के किसि और से दुवा करना तौहीद के मनाफी है।
कित्मीर का माना है वह छिलका जो खजूर के गुठलि के उपर रहता है।

प्रश्नः अल्लाह का यह कहनाः لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ का सबबे नुजूल बताइए।
उत्तरः इस के नुजूल के दो सबब बताए गए हैः

عن أنس قال: شُجَّ النبي صلى الله عليه وسلم يوم أحد وكسرت رباعيته، فقال: (كيف يفلح قوم شَجُّوا نبيهم)؟ فنزلت :﴿ لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ ﴾.

---

[13] सुरह फातिर 13

पहलाः अनस रजियल्लाहु अन्हु ने बयान कि उहुन के दिन मुश्रिकीन ने नबि ﷺ को प्रताडित किया जस से उनका दाँत मुबारक शहीद हो गया तो आप ﷺ ने कहा किः एसि कौम कैसे कामयाब हो सकति है जो अपने नबिको प्रताडित करति है ? तो इस पर यह आयत अवतरण हुई। (इस हदीसको बोखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है)दुसराः इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः एक दिन फजर कि नमाजके आखरी रकात मे नबि ﷺ ने जब रुकू से सर उठाया तो समियल्लाहु लेमन हमिदह कहने के बाद मैने यह कहते हुवे सुना कि या अल्लाह फलाना फलाना पर लानत हो तब यह आयत नाजिल हुई।

प्रश्नः अल्लाह का यह कहनाः لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ का क्या माना है ?
उत्तरः अर्थात मेरे बन्दों मे से किसीके बारे मे कोई हुक्म लागाना आपके उपर नहि है सिवाए उनके जिनके बारे मे मैं आदेश दुँ।

प्रश्नः अश्शज्ज का क्या माना है ? और उहुद के दिन से क्या मुराद है ? और रुबाई किसे कहते हैं ?
उत्तरः अश्शज्ज कहते हैं सर मे चोट लगने से जख्म हो जाना फिर बाद मे आप प्रताडनको भि अश्शज्ज बोला जाने लगा।
सनाया के बाद के तमाम दाँतों को रुबाई कहते हैं।
उहुद से मुराद जंगे उहुद है जो कि उस जगह पर हुवा था जहाँ उहुद पहाडि है। यह जगह मदीना के उत्तर मे स्थित है।

प्रश्नः लानत का क्या अर्थ है ? और फलाना फलाना से क्या मुराद है ? और समियल्लाहु लेमन हमिदह का क्या माना है ? और हम्द का क्या अर्थ है ? इब्ने उमर के हदीस से क्या सबक मिलता है ?
उत्तरः लानत का मतलब है हर भलाई से दुर कर देना, अपने दरगाह से निकाल बाहर करना।
फलाना फलाना से मुराद सफवान बिन ओमैय्या, सोहैल बिन अमर और हारिस बिन हेशाम हैं जैसा कि दुसिरी हदीस मे साफ साफ लिखा हुवा है।
समियल्लाहु लेमन हमिदह का अर्थ है कि या अल्लाह मेरी हम्द तु कबूल कर ले। और हम्द ताजीम, बडाई और तारीफ करने को कहते हैं।
इस हदीस से यह फाईदा हसिल होता हैः
पहलाः मुश्रकीन के लिए नमाज मे बददुवा करना जाएज है।
दुसराः इमाम तस्मीअ और तहमीद एकसाथ बयान करता है।

عن أبي هريرة τقال: "قام فينا رسول الله ﷺ حين أنزل عليه :وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ [الشعراء: 214] قال :يا معشر قريش -أو كلمة نحوها -اشتروا أنفسكم، لا أغني عنكم من الله شيئا. يا عباس بن عبدالمطلب، لا أغني عنك من الله شيئا. يا صفية عمة رسول الله ﷺ، لا أغني عنكِ من الله شيئا. ويا فاطمة بنت محمد، سليني من مالي ما شئتِ، لا أغني عنك من الله شيئا.
अनुवादः हजरत अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु ने कहा किः जब अल्लाह के नबि ﷺ पर وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ आयत नाजिल हुई तो आप ﷺ ने लोगों को बुलन्द आवाज मे पुकार कर कहाः ए कोरैश के लोगों (या इसि तरह का कोई शब्द उन्होंने कहा) अमने जानको खरीद लो क्यों कि अल्लाह तआला के यहाँ मै तुम्हें छुडा नहि पाउँगा, ए अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, अल्लाह के यहाँ मै आपको बचा नहिं पाउँगा, ए सफिया अल्लाह के रसूल कि फुफी जान अल्लाह के

अल्लाह के यहाँ मै आपके काम नहि आउँगा, ए फातिमा बिन्ते मोहम्मद मेरे दौलत मे से जो चाहो मांग लो अल्लाह के यहाँ मै तुमको कुछ भि नहि दे पाउँगा। (इस हदीस को बोखारी ने रिवायत किया है)

प्रश्नः अपने जानको खरीद लो से क्या मुराद है ?
उत्तरः इस से मुराद यह है कि ए लोगों तौहीद को अपनाकर और शिर्कको छोडकर अल्लाह तआला के यहाँ अपना ठिकाना जहन्नम बनाने से बच जाओ।

प्रश्नः لا أغني عنكِ من الله شيئا का कया माना है ? और इस से क्या बात समझ आति है ?
उत्तरः इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के आजाब से मै तुम्हें नहि छुडा सकूंगां। यह उस अकीदेका भि रद्द है जिस मे लोग समझते हैं कि अम्बियाए केराम अल्लाह के आजाब से बचा लेंगे, जो लोग एसा अकीदा रखते हैं वह शिर्क करते हैं।

प्रश्नः नबि ﷺ ने अपनी बेटि फातिमा से कहा किः سليني من مالي ما شئتِ، لا أغني عنك من الله شيئا इस से क्या बात समझ आति है ?
उत्तरः इस से यह बात समझ आति हे किः
पहलाः यह कि अल्लाह तआला के यहाँ ईमान और अमले सालेहा के सिवा कोई भि चिज काम नहि आएगा।
दुसराः इन्सान से संसारिक मामला मे मदद तो लया जा सकता है लेकिन उसकि क्षमता से परे कोई चीज जैसे कि रहमत, मग्फेरत, जन्नत, जहन्नम और अल्लाह तआला के आजाब वगैरह का सवाल करना जाएज नहि है क्यों कि इन सब बातों पर अल्लाह के सिवा कोई भि सक्षम नहि है। तो जब नबि सं से रिश्तेदारी अल्लाह के यहाँ काम नहि आएगि तो दुसरों का तो पुछना हि क्या है।

प्रश्नः इस विषय से क्या फाईदा हासिल हुवा बताइए।

1- कब्र के पुजारियोँ का रद्द समझ मे आया जो यह समझते हैं कि औलिया और सालिहीन उनको कोई फाईदा पहोंचाते हैं या कयामत के दिन अल्लाह से बचा लेङ्गे।

2- अम्बेयाए केराम के साथ भि दुनियाँ मे वह सारा मामला पेश आता है जो सर्वसाधारण लोगोँ को पेश आता है ताकी उनके उम्मति यह जान सकें कि मुसिबत के समय क्या करना है कैसे सब्र करता है और उसके जिरिए उनके दरजात बुलन्द होँ।

حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنۡ قُلُوۡبِهِمۡ قَالُوۡا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمۡ‌ ؕ قَالُوا الۡحَـقَّ‌ ۚ وَهُوَ الۡعَلِىُّ الۡكَبِيۡرُ

यहाँ तक के जब उनके दिलों से घबराहत दूर कर दि जाती है तो पुछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया ? जवाब देते हैं कि सच कहा, वह बहोत हि महान है[14] ।

प्रश्नः فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ से क्या और कौन लोग मुराद हैं ।
उत्तरः इस से फरिश्ते मुराद हैं । फुज्जअ अन कुलूबिहिम का माना हैः उनसे घबराहट, खौफ दूर किया जाता है । घबराहक का सबब अल्लाह तआला का कलाम वह्यि कि शकल मे सुनना है गोया कि सफा के उपर लोहे कि जन्जीरेँ घसीटि जा रहि हों जिस से वह चौंक जाते हैं ।

प्रश्नः قَالُوا الْحَقَّ से क्या मुराद है ?
उत्तरः यानि कि अल्लाह तआला ने सच कहा क्यों कि अल्लाह तआला सच के सिवा कुछ नहि कहता ।

प्रश्नः लेखक ने इस विषय से क्या साबित करने कि कोशिस कि है ?
उत्तरः लेदन ने यह बताने कि कोशिस कि है कि अल्लाह के सिवा जिन कि पूजा कि जाती है उनमे सब से ताकतवर व शक्तिशालि फरिश्ते हैं लेकिन फिर वह अल्ला से इस कदर खौफ रखते हैं तो उनके सिवा दुसरो कि क्या हैसियत है । तो जब फरिश्तों कि नहि पुकार जा सकता तो उनके सिवा दुसरोँको बदरजे औल नहि पुकारा जा सकता । इस से तमाम मुश्रिकीन का रद्द साबित होता है ।

عن أبي هريرة رضي الله عنه عن النَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : إِذَا قَضَى اللَّهُ الْأَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ ، كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ ، فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ ، قَالُوا : مَاذَا ؟ قَالَ : رَبُّكُمْ ، قَالُوا : لِلَّذِي قَالَ الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ، فَيَسْمَعُهَا مُسْتَرِقُ السَّمْعِ ، وَمُسْتَرِقُ السَّمْعِ هَكَذَا بَعْضُهُ فَوْقَ بَعْضٍ ، وَوَصَفَ سُفْيَانُ بِكَفِّهِ ، فَحَرَفَهَا وَبَدَّدَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ ، فَيَسْمَعُ الْكَلِمَةَ ، فَيُلْقِيهَا إِلَى مَنْ تَحْتَهُ ، ثُمَّ يُلْقِيهَا الْآخَرُ إِلَى مَنْ تَحْتَهُ ، حَتَّى يُلْقِيَهَا عَلَى لِسَانِ السَّاحِرِ أَوِ الْكَاهِنِ ، فَرُبَّمَا أَدْرَكَ الشِّهَابُ قَبْلَ أَنْ يُلْقِيَهَا ، وَرُبَّمَا أَلْقَاهَا قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُ ، فَيَكْذِبُ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ ، فَيُقَالُ : أَلَيْسَ قَدْ قَالَ لَنَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا كَذَا وَكَذَا ، فَيُصَدَّقُ بِتِلْكَ الْكَلِمَةِ الَّتِي سَمِعَ مِنَ السَّمَاءِ (رواه البخاري)

अनुवादः रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब अल्लाह तआला आस्मानपर कोई फैसला करता है तो फरिश्ते अल्लाह तआला के फैसले को सुनकर झुकते हुवे आजजी करते हुवे अपने बाजु फडफडाते हँ । अल्लाह तआला का फरमान उन्हें इस तरह सुनाई देता है जैसे साफ चिक्ने पत्थर पर जन्जीर घसीटने से सुनाई देति है । जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाति है तो वह आपस मे पुछते हैँ कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया ? वह कहते हैं कि हक बातका हुक्म फरमाया वह बहोत बुलन्दो बाला और महान है । फिर उनकि यहि बातें चोरि छिपे शैतान सुन कर ले भागते हैं और शैतान आसमान मे बात सुनने के लिए युँ उपर निचे होते हैँ यह कह कर सुफियान ने अपनि हथेलि को मोड कर उँगलियाँ अलग अलग करके शैतानों के जमा होने कि कैफियत को बताया इस तरह से कि शैतान एक के उपर एक रहते हैं । फिर वह शयातीन कोई एक कलेमा सुन लेते हैं और अपने निचे वालेको बताते हैं इस तरह से वह कलेमा जादुगर या नुजूमी के पास पहोँचता है । कभि तो एसा होता है कि इस से पहले कि वह अपने से निचे वालेको वह बात बताएँ उन्हे आगका गोला

[14] सुरह सबा आयत 23

दबोच लेता है और कभि एसा होत है कि जब वह बात बता लेते हैं तब आगका अंगारा उनपर पडता है। इसके बाद काहिन नजूमी उसमे सौ झूट मिलाकर लोगों को बताता है (उनमे से जब काहिन कि एक बात सच हो जाति है तो उनके मानने वालें कहते हैँ कि) क्या काहिन ने फलाँ दिन हम से यह बात नहि कहा था ? काहिन कि इसि एक बात कि वजह से जो शैतानों ने आसमान मे सुना था लोग काहिन कि बातों पर विश्वास करने लगते हैँ। (बोखारी हदीस नः 4800)

प्रश्नः पुछे गए शब्दोँ का अर्थ बताईएः

إِذَا قَضَى اللَّهُ الْأَمْرَ अर्थातः जब अल्लाह तआला वहि भजने के लिए जिब्रईल अलैहिस्सलामको बात बताते हैं।

خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ अर्थः उसकि बात सुनकर आजजी से झुक जाते हैं।

كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ अर्थः उसकि आवाज एसि आति है जैसे कि वह लोहे कि जन्जीर हो।

صَفْوَانٍ अर्थः चिकना पत्थर।

مُسْتَرِقُ السَّمْعِ अर्थः शयातीन।

وَبَدَّدَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ अर्थः उँगलियोँ को फैला कर अलग अलग कर लिया यानि कि एक दुसरेपर चढकर सुनते हैं।

الشِّهَابُ अर्थः सितारा से टुटा हुवा आगका गोला जिस से शैयातीन को मारा जाता है।

السَّاحِرِ अर्थः जादुगर, जो अपने जादुके अमल से सच्चाईको झुठ मे बदल देता है।

الْكَاهِنِ अर्थः जो अदृश्य के ज्ञान होनेका दावा करता है।

وعن النَّواس بن سمعان قال: قال رسولُ الله ﷺ :إذا أراد الله تعالى أن يُوحي بالأمر تكلَّم بالوحي، أخذت السَّماوات منه رجفة -أو قال: رعدة- شديدة؛ خوفًا من الله، فإذا سمع ذلك أهلُ السَّماوات صعقوا وخرُّوا لله سُجَّدًا، فيكون أول مَن يرفع رأسه جبريل، فيُكلمه الله من وحيه بما أراد، ثم يمرّ جبريل على الملائكة، كلما مرَّ بسماءٍ سأله ملائكتُها: ماذا قال ربنا يا جبريل؟ فيقول: قال الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ [سبأ:23]، فيقولون كلهم مثلما قال جبريل، فينتهي جبريلُ بالوحي إلى حيث أمره الله .

अनुवादः नौव्वास बिन सम्आन रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि नबि ﷺ ने फरमायाः अल्लाह तआला जब कोई आदेश जारि करने का इरादा करता है तो वहि करता है तो आकाश उस के खौफ से थर थरा जाता है या काँप जाता है। जब आसमान वाले उसको सुनते हैं तो आजजी करते हुवे सजदे मे झुक जाते हैं फिर उन मे सब से पहले जिब्रईल अपनु सर उठाते हैँ तब अल्लाह से वह्यि पुछते कि वह क्या है ? फिर जिब्रईल वह्यि लेकर फरिश्तों के पास से गुजरते हैं। आसमान मे जिस के पास से भि गुजरते हैं तो वह फरिश्ते फुछते हैं कि हमारे परवरदिगार ने क्या कहा ? तो वह जवाब देते हैं कि सच और हक बात फरमाया। तो यहि बात तमाम फरिश्ते कहते हैं जो जिब्रईल ने कहा। फिर जिब्रईल वह वह्यि उस जगह पहोँचा देते हैँ जहाँ उसको पहोँचाने का अल्लाह तआला आदेश देता है।

प्रश्नः शब्दों का अर्थ बताइएः

رجفة अर्थः कंपकंपाहट

صعقو अर्थः गशि तारी हो कर सज्दे मे गिर जाना।

قال: رعدة- شديدة -أو رجفة इस मे बिच मे शब्द है أو इसका क्या माना है ? यह जब किसि चिजमे शक हो जाता है कि यह कहा या यह कहा तो इस शब्दको इस्तेमाल करते है यानि कि शक के समय यह शब्द कहते हैं।

प्रश्नः इस विषय मे जो आयतें और हदीसें बयान कि गई हैं उनसे क्या फाइदा मिला और बात समझ आई ?
उत्तरः उन आयतों और हदीसों से जो फाईदा मिला और जो बात समझ आई वह निम्न प्रकार हैः

1- अल्लाह तआला के उच्चता का प्रमाण सिद्ध होता है।

2- अल्लाह तआला के महानताका प्रमाण मिला।

3- अल्लाह तआला के बात करनेका गुण पता चला कि वह जब चाहता है बोलता है जो फरिश्ते सुनते हैं।

4- जिब्रईल फरिश्ता का अल्लाह के यहाँ स्थान व महत्व मालुम हुवा।

केबातुत्तौहीद से इस विषयका सम्बन्ध यह है कि इसमे तौहीदका बयान है जैसे किः सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला का कलाम सुनकर फरिश्ते भि डर और खौफ से स्तब्ध हो कर काँपते हैं चौंक जाते हैं। वह स्वयँम मे और अपनि विशेषताओं मे अपने अधिकार मे पुर्ण है और अपनि रचना से व हर चीजसे वह मुस्तग्ना है। उसके साथ इबादत मे किसीको भि शरीक करना जाएज नहि है।

विषय: तौहीद का समर्थन और शिर्क के तमाम रास्ते बन्द करने के बारे मे

"وقول الله تعالى(**:لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لا إِلَهَ إِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ.)**

अनुवादः तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असाहनिया है। वह तुम्हारे लिए लालायित है (कि तुम इमान लाओ)। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। अब यदि वे मुँह मोड़ें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और वही बड़े सिंहासन का प्रभु है।" (सुरह तौबा 128-129)

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم" **:لا تجعلوا بيوتكم قبورا، ولا تجعلوا قبري عيدا، وصلوا عليّ فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم** "رواه أبو داود بإسناد حسن، رواته ثقات.

अनुवादः नबि स. ने फरमायाः तुम अपने घरोँ को कब्रिस्तान ना बनाओ, और मेरी कब्रको को इद (सब लोग इकट्ठा होने) कि जगह ना बनाना। और मेरे उपर दरूद भेजा करो क्योँ कि तुम जहाँ भि रहोगे तुम्हारा दरूद मुझे पहोँचाया जाएगा। (अबुदाऊद 2042)

وعن علي بن الحسين: "أنه رأى رجلا يجيء إلى فرجة كانت عند قبر النبي صلى الله عليه وسلم فيدخل فيها فيدعو، فنهاه، وقال: ألا أحدثكم حديثا سمعته من أبي عن جدي عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال **:لا تتخذوا قبري عيدا، ولا بيوتكم قبورا، وصلوا علي، فإن تسليمكم يبلغني أين كنتم** "رواه في المختارة "انتهى.

अनुवादः हुसैन बिन अलि से रिवायत है कि उन्होँ ने एक व्यक्तिको देखा कि वह नबि स. के कब्रपर आया और नबि स. से दुवा माँगने लगा। तो हुसैन बिन अलि ने उस व्यक्तिको नबि स. से दुवा माँगने से मना किया और कहाः मै तुम्हे एक हदीस बताता हुँ जो मैने हजरत अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु से सुना है। उन्होँ ने कहा कि हजरत अबु होरैरा ने फरमायाः तुम मेरी कब्रको को इद (लोग इकट्ठा होने) कि जगह ना बनाना। और अपने घरोँ को कब्रिस्तान ना बनाओ, और मेरे उपर दरूद भेजा करो क्योँ कि तुम्हारा जहा कहिँ से भि सलाम भेजना मुझे पहोँचाया जाएगा।

प्रश्नः जनाब का माना क्या है और हिमायत से मुराद क्या है ?

उत्तरः जनाब मतलब जानिब, हिमायत मतलब समर्थन। अर्थात तौहीद का समर्थन करना और हर उस चीजको कामको एक साइड लगा देना जिस से शिर्क का रास्ता खुलता है।

وقول الله تعالى(**:لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ**

अनुवादः तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असाहनिया है। वह तुम्हारे लिए लालायित है (कि तुम इमान लाओ)। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है।

प्रश्नः उपर उल्लेखित आयत कि व्याख्या किजिए।

उत्तरः इस अल्लाह तआलाने अपने आस्थावान भक्तोँ पर अपने कृपा का वर्णन किया है कि उन्हि मे से एक रसूल बनाया जो पढ्ना लिखना नहि जानते, उन्हि के समुदाय मे से हैं। उनके सामाजिक स्थितिको के बारे मे बहोत हि अच्छि तरह से अवतग हैं। उनकि भलाई और सफलता के लिए अति उत्सुक हैं।

عَزِيزٌ عَلَيْهِ अर्थात उसपर वह बात भारी गुजरता है जो तुमको मुसिबत मे डाल दे।

حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ तुम्हारे लिए भलाई चाहते हैँ। और इस के लिए कोशिस करते रहते हैँ कि तुमतक वह भलाइ पहोँचे तुमको फाइदा मिले। वह चाहते हैँ कि तुम सत्मार्ग अपनाओ। वह तुम्हारे उपर मुसिबत आने से डरते हैँ बेचैन होते हैँ। بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ आस्थावान लोगोँपर बहोत हि दयावान और कृपालु हैँ। (तफ्सीर साअदि)

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم" :لا تجعلوا بيوتكم قبورا، ولا تجعلوا قبري عيدا، وصلوا عليّ فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم "رواه أبو داود بإسناد حسن، رواته ثقات.

अनुवादः नबि स. ने फरमायाः तुम अपने घरोँ को कब्रिस्तान ना बनाओ, और मेरी कब्रको को इद (सब लोग इकट्ठा होने) कि जगह ना बनाना। और मेरे उपर दरूद भेजा करो क्योँ कि तुम जहाँ भि रहोगे तुम्हारा दरूद मुझे पहोँचाया जाएगा। (अबुदाऊद 2042)

प्रश्नः لا تجعلوا بيوتكم قبورا का क्या अर्थ है ?

उत्तरः अर्थात उसमे नमाज, दुवा, कुरआन कि तेलावत वगैर करना ना छोडना के वह कब्र जैसि वीरान हो जए।

प्रश्नः ولا تجعلوا قبري عيدا का अर्थ क्या है ?

उत्तरः इसका अर्थ यह है कि मेरे कब्रपर भि आने के लिए कोइ दिन मन तर्धारित कर लेना जैसा कि इद मीलादका दिन निर्धारित कर लिया है। इद कहते हैं जो बार बार लोटकर आए और उसका समय भि निर्धारित हो।

प्रश्नः وصلوا عليّ فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم इस वाक्य कि व्याख्या करो ?

उत्तरः इस से यह पता चलता है कि नबि स. पर बहोत ज्यादा दरूदो सलाम पढना चाहिए कभि भि कहिँ भि होँ पढ्ते रहेँ उसके लिए कब्र के करीब हि जाकर पढना जरूरी नहि। जो दरूद पढ्ते हैँ उनका दरूद नबि स. तक अल्लाह तआला पहोँचा देते हैं।

وعن علي بن الحسين: "أنه رأى رجلا يجيء إلى فرجة كانت عند قبر النبي صلى الله عليه وسلم فيدخل فيها فيدعو، فنهاه، وقال: ألا أحدثكم حديثا سمعته من أبي عن جدي عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال :لا تتخذوا قبري عيدا، ولا بيوتكم قبورا، وصلوا علي، فإن تسليمكم يبلغني أين كنتم "رواه في المختارة "انتهى.

अनुवादः हुसैन बिन अलि से रिवायत है कि उन्होँ ने एक व्यक्तिको देखा कि वह नबि स. के कब्रपर आया और नबि स. से दुवा माँगने लगा। तो हुसैन बिन अलि ने उस व्यक्तिको नबि स. से दुवा माँगने से मना किया और कहाः मै तुम्हे एक हदीस बताता हुँ जो मैने हजरत अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु से सुना है। उन्होँ ने कहा कि हजरत अबु होरैरा ने फरमायाः तुम मेरी कब्रको को इद (लोग इकट्ठा होने) कि जगह ना बनाना। और अपने घरोँ को कब्रिस्तान ना बनाओ, और मेरे उपर दरूद भेजा करो क्योँ कि तुम्हारा जहा कहिँ से भि सलाम भेजना मुझे पहोँचाया जाएगा।

प्रश्नः फर्जा किसको कहते हैँ? और यह भि बताएँ कि इस विषय से क्या क्या बात समझ आइ है ?

उत्तरः फर्जा कहते हैँ दिवार मे होने वाले सुराखको। और इस विषय से जो बातेँ समझ आई हैं वह निम्न प्रकार हैः

1. किसि खास मकसद के तहत नबि स. के कब्र कि जेयारत करने से मना किया गया है।
2. घर मे नफिल नमाज पढने के लिए उत्साहित किया गया है।
3. हमारा दरूदो सलाम पढना नबि स. को पहोँचाया जाता है अगरचे दूर से हि पढें।
4. नमाज और दुवा करने के लिए कब्रपर जाने से मना किया गया है क्योँ कि यह इद कि निव और शिर्कका कारण बन सकता है।
5. मदा

विषयः नेक लोगोँ के बारे मे बढा चढाकर बयान करना जो कुफ्र तक पहोँचा दे

प्रश्नः यो विषय रोज्नमा लेखक महोदयको उद्देश्य के हो ?
उत्तरः यह संकेत देना चाहते हैँ कि लोग जो करते हैँ वह कुफ्र तक पहोँ जाते हैँ जो कि कभि कभि शिर्क भि होता है और शिर्क तौहीद के विपरित है।

अल्लाह तआलाने कुरआन मे फरमायाः

﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ﴾ سورة نوح آية (23)..

अनुवादः कह दिजिए ए नबि स. कि ए अह्ले केताब अपने दीन मे गुलू ना करो (बढा चढाकर बातेँ बयान ना करो)

प्रश्नः इस आयत कि व्यख्या किजिए और यह बताइए कि अह्ले केताब कौन हैँ और गुलू क्या है ? यह भि बताएँ कि आयतका विषय के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अह्ले केताब कहते हैँ यहूद व नसाराको जिनको अल्लाह ने केताब दिया है।
व्याख्याः यानि कि हद से आगे ना बढो और सचमे झूठको ना मिलाओ। एसि बात वह लोग हजरत इसा अलैहिस्सलाम के बारे मे बोलते हैँ।

गुलू कहते हैँ हद से आगे बढ जाने को, सहि बात मे अपनी तरफ से मिर्च मसाला मिलाकर बढाव चढाव करने को। मसल मशहूर है राई को पहाड बनाना यहि है गुलू।
आयत कि विषयके साथ सम्बन्धः जिस ने अल्लाह के सिवा किसि नबि या वलि से दुवा किया वह तो गोया कि उसने उसको अपना माबूद बना लिया जैसा कि यहूद व नसारा करते हैँ और यह शिर्क है।

عن ابن عباس رضي الله عنهما «في قول الله تعالى: ﴿وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا﴾() قال هذه أسماء رجال صالحين من قوم نوح فلما هلكوا أوحى الشيطان إلى قومهم أن أنصبوا إلى مجالسهم التي كانوا يجلسون فيها أنصابًا وسموها بأسمائهم ففعلوا ولم تعبد حتى إذا هلك أولئك ونُسِي العلم عبدت» رواه البخاري.

अनुवादः इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु ने कहाः कुरआन मे अल्लाह तआलाका फरमानः और उन्होंने कहा, 'अपने इष्ट-पूज्यों को कदापि न छोड़ो और न 'वद्द' को छोड़ो और न 'सुवा' को और न 'यग़ूस' और न 'यऊक़' और 'नस्र' को'।यह नुह अलैहिस्सलाम के कौमके नेक लोगोँका नाम था जब उनकि मृत्यु हो गई तो शैतान ने उस कौम के लोगोँ को यह सुझाया कि उन मरे हुवे लोगोँ कि मुर्तियाँ बनाकर अपनि मजलिस मे रख लेँ ताकि उसना जिक्र भि बाकि रहे। लोगोँ ने एसा हि किया लेकिन उस वक्त उन बुतोँ कि पूजा नहि होति थि लेकिन जब वह लोग मर गए जिनहोँने मुर्तियाँ लगवाई थि तो उनके बाद वाले लोगोँ ने पूजा शुर कर दिया। (4920)

प्रश्नः इस हदीस मे जो शब्द أنصبوا إلى مجالسهم आया है उसका क्या मतलब है ? और इन बुतोँ कि पूजा कि वजह क्या बनि ? और ونُسِي العلم। से क्या मूराद है ?
उत्तरः नुसिबु से मूराद बुत है जिसको उन नेक लोगोँ कि मुर्ति कहकर बनाया गया।
इबादत सबब यह है कि शुरू शुरू मे लोग सिर्फ उन मुर्तियोँ इज्जतो एहतराम करते थे और हमेशा वहा जाकर उनके अच्छे कारनामोँ को याद करते थे लेकि जब पहले वाले लोग मर गए तो बाद वाले लोगोँ ने उनकि पूजा शुरू कर दि क्योँ कि शैतान ने लोगोँ को यह बताना शुरू कर दिया कि पहले के लोग इन कि इबादत करते थे इन से दुवा करते थे इस तरह से उनकि इबादत व पूजा शुरू हो गई।
(इब्ने कैय्यीम रहेमहुल्लाह ने बताया कि कुछ सलफ ने कहा किः जब वह नेक लोग मर गए तो लोग उन के कब्रोँ पर जाते थे फिर उनकि मुर्तियाँ बनाइँ फिर जब एक जमाना बीत गया (पुराने लोग मर गए) तब उनकि पूजा शुरू हो गई।)

प्रश्नः عكوفهم على قبورهم इसका माना क्या है ? और التماثيل किसको कहते हैँ? الأمد से क्या मूराद है ?
उत्तरः عكوفهم على قبورهم इसका माना है उनकि कब्रोँ पर हमेशा जाना। तमासील कहते है एसि तस्वीर या स्टेच्यु जो बुत यानि मुर्ति के जैसा हो। الأمد का माना है जमाना, मुद्दत।

عن عمر أن رسول الله ﷺ قال: «لا تطروني كما أطرت النصارى ابن مريم إنما أنا عبد فقولوا عبد الله ورسوله» أخرجاه أي البخاري ومسلم.

अनुवादः इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि नबि स. ने फरमायाः मुझे मेरे मर्तबा से ज्यादा ना बढाना जैसा कि नसारा ने इसा इब्ने मरियमको उनके रुत्बे से ज्यादा बढा दिया है। बेशक मै अल्लाह का बन्दा हुँ इसि लिए मुझे अल्लाह का बन्दा हि कहना। (बोखारी 3445)

وقال رسول الله ﷺ: «إياكم والغلو فإنما أهلك من كان قبلكم الغلو» رواه الإمام أحمد والترمذي وابن ماجه من حديث ابن عباس.

अनुवादः नबि स. ने फरमाया खबरदार ! गुलू (बढा चढाकर मिर्च मसाला लगाकर किसिको उसके मर्तबे से उपर उठाना) हर गिज मत करना। क्योँ कि तुमसे पहले के लोगोँ को गुलू ने हलाक कर दिया। (तिर्जी, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद)
प्रश्नः الإطراء क्या है ? और नबि स. का لا تطروني यह कहना इसका क्या मतलब ? और नबि स. ने अपने आपको अल्लाह का बन्दा क्यो कहा ?
उत्तरः الإطراء का मतलब है मोबालगा, बढाव चढाव करना, मिर्च मसाला लगाना जिसमे किसि कि तारीफ के लिए झूठ मिलाया जाए। कहने का अर्थ यह है कि किसि कि तारीफ मे हद से नहि बढना चाहिए और झुठि व बनावटि तारीफ जो गुलू है नहि करनि चाहिए क्योँ कि यह कभि कभार कुफ्र तक पहोँचा देति है जैसा कि नसारा (इसाई) इसा अलैहिस्सलाम कि तारीफ मे करते हैँ। यहाँ तक कि उनको ईश्वर बना लिया।

और अपने आपको अल्लाह का बन्दा इस लिए कहा क्योँ कि लोग नबि स. को भि उसि तरह ना बना लेँ जैसा कि हजरत इसा अलैहिस्सलामको इसाईयोँ ने बना लया है। इसि कहा कि मै अल्लाह का बन्दा हुँ सो मेरे बारे वह बात हरगिज मत बोलना जो मेरे मर्तबा के विरूद्ध हो।

और अपने आपको अल्लाह का बन्दा इस लिए भि कहा क्योँ कि अल्लाह कि मख्लूकात मे सबसे अफ्जल इन्सान है और इन्सानोँ मे सबसे अफ्जल अम्बिया (नबि व रसूल) हैँ।

प्रश्नः नबि स. ने क्योँ फरमाया कि खबरदार ! गुलू (बढा चढाकर मिर्च मसाला लगाकर किसिको उसके मर्तबे से उपर उठाना) हर गिज मत करना ? क्योँ कि तुमसे पहले के लोगोँ को गुलू ने हलाक कर दिया ?
उत्तरः अपनि उम्मतको खबरदार किया कि पहले के लोग नबियोँ रसूलोँ और नेक लोगोँ कि तारीफ करने मे गुलू करके जो हलाक हो गए वह काम तुम लोग मत करना।

प्रश्नः المتنطعون कौन लोग हैँ? तीन मरतबा हलाक हो गए कहने का फाइदा है ? विषयके साथ सम्बन्ध बताइये ?
उत्तरः المتنطعون का अर्थ है मोकल्लफ, जिम्मेदार जो हद से गुजर जाए अपनि बात मे, अपने कार्य मे। والتنطع किसि भि चीज मे डूब जाना, गहराई तक जाना।
तीन मर्तबा कहने का फाइदा यह है कि लोग इस कि अहमियतको अच्छे से समझ लेँ फिर इसमे ना पडेँ।

हदीस का विषयके यह सम्बन्ध हैः

والتنطع यह गुलू है और नेक लोगोँ के बारे मे गुलू करते करते लोग शिर्क तक पहोँ जाते हैँ जो कि तौहीद के विपरित है।

प्रश्नः इस विषय क्या क्या सबक मिला ?

उत्तरः गुलू से बचना जरूरी है। खास तौर से नेक लोगोँ के बारे मे क्योँ कि यह कुफ्र और शिर्क तक पहोँचा देता है।

तस्वीरो को बनाने और उसको मज्लिसोँ मे लगाने से मना किया गया क्योँ कि यह शिर्क का सबब बन जाता है।

कब्रपर हमेशा जाने से मना किया गया है क्योँ कि इस से शिर्क का रास्ता हम्वार होता है।

मोबालगा, बढाव चढाव करना, यह सब शिर्क के रास्ते हमवार करते हैँ।

संसार मे शिर्क कि शुरूवात हि नेक लोगोँ के बारे मे बढा चढाकर बात करने से हुई।

विषय: अल्लाहू तआलाका फरमान (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ)

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या किजिए और इस के अवतरण का सबब बताईए ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने अपने नबि मोहम्मद स. से कहा कि किसीको राहे रास्तपर लाना आपके वश मे नहि है। आपतो केवल सन्देश पहोँचाने वाले हैँ हेदायत देना अल्लाह का काम है और अल्लाह तआला हि को बेहतर मालूम है कि हेदायतका असल मुस्तहिक कौन है।

इस आयत के नाजिल होने सबब यह है कि नबि स. लोगोँ के लिए बहोत फिक्रमन्द रहते थे कि वह राहे रास्त पर आजाएँ जिसके लिए वह जि तोड कोशिस करते थे तबि यह आयत नाजिल हुई।

प्रश्नः लेखक महोदय इस विषयसे क्या बताना चाहते हैँ ?
उत्तरः इस विषय से उन लोगोँ के आस्था का रद्द करना चाहते हैं कि जो यह समझते हैँ कि नफा व नुक्सान नबि, वलि भि हैँ और नबि व वलि भि लोगोँ कि जरूरतोँ को पूरी कर सकते हैँ।

प्रश्नः हेदायत के कितने प्रकार हैँ उदाहरण सहित बयान करेँ और यह भि बताएँ कि नकारात्मक हेदायत क्या है ?
उत्तरः हेदायत कि दो किस्म हैः
पहलाः हेदायते तौफीक यानि मार्गदर्शन का वर्दान जो अल्लाह तआला दिल मे डाल देता है और इस पर अल्लाह के सिवा कोइ भि सामर्थ नहि। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मे कहाः إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ यानि आप किसिको यह वरदान नहि दे सकते कि वह सिधि राहपर आ जाए यह तो केवल अल्लाह हि कर सकता है।
दुसराः हेदायते दलालत यानि सिधा सच्चा मार्ग के बारे मे बताना। जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ। वह मार्ग जिस पर लोग चलकर सफलता हासिल कर सकते हैँ। अल्लाह तआला के इन आदेशोँ को कोई भि आदमी दुसरोँ तक पहोँचा सकता है।

في الصحيح عن ابن المسيب عن أبيه قال: «لما حضرت أبا طالب الوفاة جاءه رسول الله ﷺ وعنده عبد الله بن أبي أمية وأبو جهل فقال له يا عم قل لا إله إلا الله كلمة أحاج بها لك عند الله. فقالا له أترغب عن ملة عبد المطلب، فأعاد عليه النبي ﷺ فأعادا، فكان آخر ما قال هو على ملة عبد المطلب وأبى أن يقول لا إله إلا الله فقال النبي ﷺ لأستغفرن لك ما لم أنه عنك فأنزل الله عز وجل ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ﴾[15]،

وأنزل الله في أبي طالب ﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ﴾. متفق عليه.

अनुवादः अब्दुल्लाह बिन मुसैय्यीब अपने वालिद से रिवायत करते हुवे कहते हैँ किः जस अबु तालिब के वफातका समय आया तो नबि स. उनके पास आए वहाँ पर अब्दुल्लाह बिन अबु उमैय्या और अबु जेहल पहले हि से मौजूद थे। नबि स. ने अपने चचा से कहा किः ए मेरे चचा ला इलाह इल्लल्लाह पढ लिजिए इस कलमा के जरीए मै अल्लाह तआला से आपके बारे मे हुज्जत व शेफारिस करूँगा। तो (वहाँ मौजूद अबु जेहल व दुसरे लोगोँ ने कहा) कि अबु तालिब क्या तुम अपने बाप दादा के रास्ते से फिर जाओगे ? लेकिन फिर भि नबि स. लगातार अपने चचा से मोतालबा करते रहे कि आप कलमा पढ लिजिए लेकिन आखिर अबु तालिब ने यह कह दिया कि मै अपने बाप दादा के दीन पर हि बाकि रहुँगा और उन्होने ला इलाह इल्लल्लाह पढने से इन्कार कर दिया। तो नबि स. ने कहा कि मै अल्लाह तआला से आपके लिए जरूर बख्शिस तलब करूँगा। तो यह आयत नाजिल हुईः مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ। (सुरह तौबा आयत 113) तरह से अबु तालिब बारे मे अल्लाह तआला यह आयत नाजिल किया। (सहिह बोखारी)

([15]) سورة التوبة آية (113).

प्रश्नः अबु तालिब कि मौत करीब आ गई का क्या मतलब ?
उत्तरः यानि कि मौत कि निशानियाँ दिखने लगि।

प्रश्नः नबि स. उनके मृत्यु के समय ला इलाह इल्लल्लाह पढ्ने मर क्यो जोर दे रहे थे ?
उत्तरः क्योँ कि अबु तालिब को मालूम था कि इसके जरीए से तौहीद का एक्रार किया जाता है और सिर्फ एक अल्लाह के लिए इबादतको खास किया जाता है जो कि शिर्क के विपरित है।

प्रश्नः मै अल्लाह के पास इसके जरीए आपके लिए हुज्जत करूँगा का क्या मतलब ?
उत्तरः अर्थात मै अल्लाह तआला के पास आपकि तरफ से इस बात कि गवाहि दुँगा कि आपने कलमए तौहीद पढा था और अल्लाह के वहदानियत को स्वीकार किया था।

प्रश्नः अब्दुल मुत्तलिब कि मिल्लत क्या है ?
उत्तरः अल्लाह के साथ शिर्क। यानि मुश्रिको का रास्ता।

प्रश्नः مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ का क्या मतलब है और इसके नुजूल का सबब क्या है ?
उत्तरः नबि और इमान वालोँ के लिए यह जाएज नहि है कि वह लोग मुश्रिकीन के लिए बख्शिस कि दुवा करेँ। और नबि स. ने जब चचा अबु तालिब कि बख्शिस के लिए दुवा करने का इरादा किया और कुछ सहाबा ने अपने माता पिता के माफि के लिए दुवा करने का इरादा किया तो यह आयत नाजिल हुई।

प्रश्नः अबु तालिब को हेदायत ना मिलने के पिछे क्या हिक्मत है ?
उत्तरः उसके पिछे यह हिक्मत है कि सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला हि हेदायत दे सकता है उसके सिवा कोई भि हेदायत नहि दे सकता है। अगर नबि स. इसपर सामर्थ होते तो अबु तालिबको सब से पहले हेदायत दे देते क्योँ कि उन्होँ ने हमेशा नबि स. कि मदद कि उनका समर्थन किया और हर मुसिबत मे उनका साथ दिया।

प्रश्नः इब्ने मोसैय्यिब वालि हदीस से बातें समझ आइ बयान किजिए ?
उत्तरः उसके निम्न बातेँ समझ आइः
मुश्रिक कि बिमारपुर्सि करना जाएज है यदि वह इस्लाम के लिए दर्द रखता है।
गलत संगत इन्सानोँको नोक्सान पहोँचाति हैँ।
पुर्वजोँ का अनुशरण भि कभि कभार बहोत नोक्सानदह होता है।
कर्म का आधार अच्चछे खात्मे (समाप्ति) पर है।
शिर्क करने वालोँ के लिए बख्शिस कि दुवा करना हराम है और उनसे कुरबत व मोहब्बत बढाना भि मना है।

विषयः इस उम्त के कुछ लोग अवसान (अल्लाह के सिवा हर वह चीज जिस कि इबादत कि जाए) कि इबादत करेँगे

प्रश्नः लेखक महोदय इस विषयसे क्या सन्देश देना चाहते हैँ ?
उत्तरः शिर्क से सावधान और उसके भय दिलाने के लिए। इस उम्मत मे कुछ लोग समझते हैँ कि जिसने ला इलाह इल्लल्लाह पढ लिया तो वह हमेशा इस्लाम पर बाकि रहेगा अगर चे वह इस्लाम के आदेशोँ के विपरित कार्य करे जैसे कि मुर्दोँ से मदद तलब करना या उनसे दुवाएँ माँगना।

प्रश्नः वसन या अवसान का क्या माना है ?
उत्तरः वसन एक वचन है जिसका बहुवचन है अवसान। हर वह चीज जिस कि अल्लाह के सिवा पूजा होति हो वह वसन है। चाहे वह पेड पौधा हो या मिट्टि पत्थर, या फिर कब्र इत्यदि सब वसन है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ

अनुवादः क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? वे अवास्तविक चीज़ों और ताग़ूत (बढ़े हुए सरकश) को मानते हैं। और अधर्मियों के विषय में कहते हैं, "ये ईमानवालों से बढ़कर मार्ग पर हैं।" सुरह नः4 आयतः51)

प्रश्नः इस आयत के अवतरण होने का सबब बयान करेँ और यह भि बताएँ कि इसमे किसको सम्बोधित किया गया है और जिब्त व तागूत क्या है ?
उत्तरः इस आयत के नाजिल होने का सबब जो है उसक जिक्र इक्रमा से रिवयत कर्दा हदीस मे है। वह कहते हैँ किः होययी बिअ अख्तब और काअब बिन अशरफ दो यहूदी मक्का वालोँ के पास आए तो मक्का वलोँ ने उन से कहा कि तुम लोग अहले केताब हो यानि तुम्हे आस्मानी केताबेँ दि गई है और तुम लोग इल्म वाले भि हो तो हमे हमारे और मोहम्मद स. के बारे मे बताओ ? तो उन दोनोँ ने कहा तुम (मक्का के मुश्रिकीन) लोग सहि रास्ते पर और उनसे (मोहम्मद स. व उनके साथियोँ से) बेहतर हो। तो यह आयत नाजिल हुइ।

जिब्तः यह शब्द मुर्ति, अदृश्यका ज्ञान होनेका दावा करने वाल और जादुगर वगैरह के लिए प्रयोग होता है। और तागूत कहते हैँ हर उस चीजको जिसकि अल्लाह के सिवा इबादत कि जाति है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوت

अनुवादः कहो, "क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ परिणाम की दृष्टि से इससे भी बुरी नीति क्या है? कौन गिरोह है जिसपर अल्लाह की फिटकार पड़ी और जिसपर अल्लाह का प्रकोप हुआ और जिसमें से उसने बन्दर और सूअर बनाए और जिसने बढ़े हुए फ़सादी (ताग़ूत) की बन्दगी कि (कुरआन 5 सुरह 60 आयत)

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या करेँ ?
उत्तरः अल्लाह तआला कहते हैँ कि ए मोहम्मद स. यन यहूदियोँ से कहिये कि क्या मै तुम लोगोँ को यह बताउँ कि कयामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बुरा बदला किन लोगोँ के लिए है ? तुम लोग समझते हो कि हम हैँ जिनको सब से बुरा बदला मिलेगा हाँलाकि वास्तवमे तुम वह लोग हो जिनके लिए सब से बुरा बदला है। क्योँ कि तुम्हारे उपर लानत कि गई है अर्थात अल्लाह तआला कि रहमतोँ से तुम लोग दुत्कार दिए गए हो। औ। तुम्हारे लिए गजब व हलाकत है और तुम हि वह कौम हो जिनमे से बन्दर और सुवर बनाए गए जिन लोगोँ ने तागूत कि इबादत कि और शैतान कि पैरवि कि।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद के अन्दर फरमायाः

قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا

अनुवादः और जो लोग उनके मामले में प्रभावी रहे उन्होंने कहा, "हम तो उनपर अवश्य एक उपासना गृह बनाएँगे।" (सुरह कहफ आयत 21)
प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या किजिए ?
उत्तरः कुछ लोगोँ ने अस्हाबे कहफ (गुफा वासियोँ) के बारे मे कहा कि हम इसपर एक मस्जिद का निर्माण करेँगे ताकि लोग इसे देखते आएँ और इस से आशिर्वाद प्राप्त कर सकेँ। इसि बातको अल्लाह तआला ने डाँटते हुवे यहाँ बयान किया है कि यह गलत है जैसा कि नबि स. ने हदीस मे कहाः لعنة الله على اليهود والنصارى اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد अनुवादः यहुदियोँ और नसरानियोँ पर लानत हो जिन्होँ ने अपने नबियोँ के कब्रपर मस्जिद बना लिया। लेकित तुम इस से बचना एसा ना करना।

عن أبي سعيد رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «لتتبعن سنن من كان قبلكم حذو القذة بالقذة حتى لو دخلوا جحر ضب لدخلتموه قالوا يا رسول الله اليهود والنصارى قال فمن» أخرجاه أي البخاري ومسلم

अनुवादः अबु सईद खुजरी रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि नबि स. ने कहाः तुम लोग जरूर अपने से पहले लोगोँ के नक्शे पर कदम बा कदम चलोगे यहाँ तक कि वह किसि गोह के बिल मे घुसे होँगे तो तुम भि उसमे जा घुसोगे। लोगोँ ने कहाः हे अल्लाह के रसूल क्या यहूदो नसारा के नक्शेकदम पर चलेँगे ? तो नबि स. ने जवाब दिया किः हाँ और नहि तो कौन !

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या किजिए ?
उत्तरः नबि स. ने इस हदीस मे यह बताया कि यस उम्मत के भि कुछ लोग अपने से पहले गुजर चुके यहूदो नसार के नक्शे कदम पर जरूर चलेँगे और हर वह काम करेँगे जो उन्होने किया।

सहि मुस्लिम कि एक हदीस मे नबि स. ने फरमायाः

عن ثوبان رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «إن الله زوى لي الأرض فرأيت مشارقها ومغاربها وإن أمتي ستبلغ ملكها ما زوى لي منها.
अनुवादः सौबान रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह स. ने फरमायः अल्लाह तआला ने मेरे लिए यह जमीन लपेट दिया जिस से मैने उसके मश्रिक और मगरिब कि सिम्त मे देखा। और जहाँ तक यह जमीन मेरे लपेटि गई अनकरीब मेरी उम्मत कि हुकुमत वहाँ तक पहोँचेगि। (सहि मुस्लिम 2889)

प्रश्नः إن الله زوى لي الأرض فرأيت مشارقها ومغاربها इसका का क्या अर्थ है ?
उत्तरः इसका अर्थ यह है कि मेरे लिए जमीनको जहाँ तक लपेटा गया वहाँ तक मुसलमानोँ कि हुकुमत होगि।

प्रश्नः क्या नबि स. ने जिस बात कि भविष्यवाणि कि थि वह सहि साबित हुवा ? उनकि उम्मत ने उन जमीनोँ पर शासन किया जिसको नबि स. के लिए लपेटा गया था ?
उत्तरः हाँ बिल्कुल ! उनकि उम्मत ने उस पर शासन किया यहाँ तकि कि उनका शासन स्पेन से लेकर चीन और हिन्द तक पहोँ गया।

प्रश्नः وأعطيت الكنزين الأحمر والأبيض का क्या अर्थ है ?
उत्तरः इसका अर्थ है पर्सिया के राजा का खजाना जिसमे ज्यादातर चाँदि के सफेद गहने थे इसि तरह से रोम के राजा का खाजाना मिला जो कि ज्यादा तर लाल माएल सोना होता था।

प्रश्नः السنة: بفتح السين से क्या मुराद है ? जिस मे नबि स. ने दुवा किया कि या अल्लाह मेरी उम्मतको रिवायति सुन्नत से हलाक

ना करना ?

उत्तरः इस से मुराद वबा कि बिमारी, भुखमरी वगैरह है जिस से बहोत ज्यादा मौतें होति हा।

प्रश्नः وأن لا يسلط عليهم عدوًا من سواء أنفسهم فيستبيح بيضتهم से क्या मुराद है ?

उत्तरः इसका अर्थ यह है कि नबि स. ने अल्लाह तआला से दुवा किया कि या अल्लाह मेरी उम्मत के उपर काफिर दुश्मनको मोसल्लत मत करना जो उनको हलाको बर्बाद कर दें।

प्रश्नः क्या अल्लाह तआला ने उनके इस दुवा को कबूल किया ? और بيضتهم का क्या मतलब है ? और ولو اجتمع عليهم من بأقطارها क्या है ?

उत्तरः जि हाँ अल्लाह तआला ने कहा कि मुसलमानोँ पर दुश्मनको मोसल्लत नहि करेगा के वह मुसलमानोँ के खूनको बहाते फिरेँ यहि माना है बैजतुहुम का। और कहा गया है कि बैजतुहुम मतलब जमात चाहे छोटा हो या बडा कम हो या ज्यादा।

प्रश्नः حتى يهلك بعضهم بعضًا ويسبي بعضهم بعضًا इस वाक्य का क्या मतलब है ? क्या वकइ हुवा है ?

उत्तरः इसका माना यह है कि अल्लाह तआला मुसलमानोँपर दुश्मनको मोसल्लत नहि करेँगे लेकिन अगर वह लोग एख्तेलाफ करने लगे तो उनके उपर कुफ्फार मोसल्लत हो जाएँगे।

प्रश्नः إني إذا قضيت قضاء فإنه لا يرد इस वाक्य का क्या माना है ?

उत्तरः यानि जब मै किसि काम मा फैसला कर देता हुँ और वह नाफिज कर देता हुँ तो फिर वह रद्द नहि होता।

प्रश्नः गुमराह अइम्मा से क्या मुराद है जिन कि वजह से नबि स. अपनि उम्मत मे लिए डरते थे ?

उत्तरः इस से मुराद वह हाकिम, आलिम और आबिद लोग हैँ जो खुद तो जनहिल हैँ मगर फिर भि लोग उनकि पैरवि करेँगे तो वह खुद भि गुमराह होँगे और दुसरोँ को भि गुमराह कर देँगे।

प्रश्नः وإذا وقع عليهم السيف لم يرفع إلى يوم القيامة इस बात का क्या मतलब है ?

उत्तरः इसका माना यह है कि जब इस उम्मत मे तलवारेँ चलने लगेँगि तो फिर कयामत तक यह बन्द नहि हो सकता बल्कि हमेशा जारी रहेगा।

प्रश्नः ولا تقوم الساعة حتى يلحق حي من أمتي بالمشركين (कयामत उस वक्त तक काएम नहि होगा जब तक मेरी उम्मत के होयइ के लोग मुश्रिकीन मे ना मिल जाए) इसका क्या मतलब ?

उत्तरः होयइ एक कबीला का नाम है जैसा कि दुसरी हदीस मे इसका जिक्र है (यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कुछ कबाएल मुश्रिकीन से मिल जाएँ)। इसका एक अर्थ यह भि है कि वह कबीला मुश्रिकीन से मिल जाएगा या मुर्तद हो जाएगा।

प्रश्नः खातमुन्नबिय्यीन का मतलब क्या है जिसमे नबि स. وأنا خاتم النبيين कहा।

उत्तरः यानि कि नबि स. अन्तिम नबि हैँ उनके बाद कोइ नबि नहि है।

प्रश्नः नबि स. के इस बात لا تزال طائفة من أمتي على الحق منصورة لا يضرهم من خذلهم حتى يأتي أمر الله تبارك وتعالى से क्या समझ आता है ? ताएफा (जमात) का क्या मतलब ?

उत्तरः इस मे बहोत बडि खुश खबरी है कि एक जमात हमेशा हकपर होगि जो कुरआनो सुन्नतपर काएम रहेगा यहाँ तक कि कयामत आ जाएगा।

विषयः जादु के बारे उस से बचने और उसपर वईद का बयान

प्रश्नः जादु किस तरह से शिर्क मे से है ?
उत्तरः जादु शिर्क मे से है इसकि दो शक्ल हैः
पहलाः जादू शैतान कि मदद से होता है इस लिए
दुसराः यह लोग अदृश्य के ज्ञानका दावा करते हैँ।

प्रश्नः जादु कि परिभाषा क्या है ?
उत्तरः जादु कहते हैँ किसिको लक्षित करना या टोटका या गाँठ लगाना या एसा कोई अमल करना जो दिलपर असर या जिस्म पर असर करे जिस कि वजह से इन्सान कि मौत हो जाति है या फिर दो लोगोँ मे जुदाई हो जाति है।

प्रश्नः जादुका करने का क्या हुक्म है और यह बताएँ कि जादुगर कि सजा क्या है ?
उत्तरः जादु करना कराना हराम है क्योँ कि यह अल्लाह के साथ कुफ्र है जोकि ईमान और तौहीद के विपरित कार्य है। अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ

अनुवादः और वे (दो चालाक व्यक्ति) किसी को भी सिखाते न थे जब तक कि कह न देते, "हम तो बस एक परीक्षा हैं; तो तुम कुफ़्र में न पड़ना। (कुरआन सुरह 2 आयत 102)
जादुगर कि सजा कत्ल है जिसका प्रमाण यह हदीस हैः

عن عمر بن الخطاب أنه كتب إلى عماله أن اقتلوا كل ساحر وساحرة. رواه البخاري في صحيحه

अनुवादः हजरत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु ने अपने तमाम गवर्नरोँ को चिट्ठि लिखकर यह आदेश दिया कि जितने भि जादुगर और जादुगरनियाँ हैँ सबको कत्ल कर दो। (बोखारी)

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ

अनुवादः और उन्हें भली-भाँति मालूम है कि जो उसका ग्राहक बना, उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। कितनी बुरी चीज़ के बदले उन्होंने अपने प्राणों का सौदा किया।

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या किजिए ?
उत्तरः وَلَقَدْ عَلِمُوا उन्होँ ने जान लिया यानि यहुद ने لَمَنِ اشْتَرَاهُ कि वह लोग जिस चीज मे लिप्त हैँ जिस (जादू) का व्यापर कर रहे हैँ उनके लिए مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ आखेरत मे कोई भि हिस्सा नहि है बल्कि उसके विपरित उनको सजा मिलेगा।
अल्लाह तआला ने कहा कि वह यहूद लोग जो नबि स. का अनुशरण छोडकर जादु टोना मे लगे हुवे हैँ वह यह जान लेँ कि उनके लिए आखेरत मे कोई हिस्सा नहि है। इस आयत से यह बात साबित होता है कि जादु हराम है और जादुगर पर वईद है।
अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ

अनुवादः क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया? वे अवास्तविक चीज़ों और ताग़ूत (बढ़े हुए सरकश) को मानते हैं।
प्रश्नः जिब्त और तागूत से क्या मुराद है ?
उत्तरः जिब्त का माना है जादु और तागूत का मतलब है हर वह चिज जिस कि अल्लाह के सिवा पूजा कि जाए।

जाबिर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैः तागूत काहिन (जो सितारोँ के जिरिए गैब का दावा करते हैँ) को कहते हैँ उनके उपर शैतान वहि करता है।

प्रश्नः जाबिर रजियल्लाहु अन्हु के कौल का क्या मतलब है ? और होयई या हैइ का क्या मतलब है ?
उत्तरः उनके कहने का मतलब है कि कोहानत यानि आस्मानी ज्ञानका दावा करना यह तागूत है उनके उपर शैतान उतरता है और वहि शैतान उन काहिनोँ को तमाम बातेँ बताता है जिसके माध्यम से वह किसि चीजका दावा करते हैँ।
होयई या हैइ का अर्थ हैः पहले जमाने मे हर कबीला मे एक काहिन होता था जो कबीले के मसाएलका हल निकालता था।

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «اجتنبوا السبع الموبقات قالوا يا رسول الله وما هن قال: الشرك بالله، والسحر، وقتل النفس التي حرم الله إلا بالحق، وأكل الربا، وأكل مال اليتيم، والتولي يوم الزحف، وقذف المحصنات الغافلات المؤمنات» متفق عليه.

अनुवादः अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि सात हलाक कर देने वालि चीजोँ से बचो। सहाबा ने पूछा वह सात चीजेँ क्या हैँ या रसूलल्लाह ? तो नबि स. ने बतायाः जादु, किसिको ना हक कत्ल करना, ब्याज, अनाथ का माल हडप कर जाना, जंग के मैदान से फरार होना, पाकबाज मोमिना महिलाओं पर गलत आरोप लगाना।

प्रश्नः اجتنبوا इसका क्या मतलब है ? और इसका नाम **الموبقات** यनि हलाको बर्बाद कर देने वाला क्योँ रखा गया ?
उत्तरः इज्तनिबू का मतलब है इब्तइदू यानि दूर रहो और मौबेकात का मतलब है मुहलिकात कानि हलाक कर देने वालि। क्योँ कि यह काम अपने करने वालेको हलाक व बर्बाद कर देति है दुनियाँ मे भि और आखिरत मे भि आजाब का भागिदार बना देति है।

प्रश्नः शिर्क का परिभाषा बताइये ? और इस हदीस मे सब से पहले शिर्क का तज्केरा क्योँ है ?
उत्तरः शिर्क दो प्रकार का होता हैः

पहलाः शिर्के अक्बर अर्थात बडा शिर्क जो यह है कि किसि भि किस्म कि इबादत अल्लाह के सिवा किसि और के लिए किया जाए जैसे कि दुवा, खौफ जबह नजर वगैरह।

दुसराः शिर्के अस्गर वह यह है कि हर वह रास्ता जो शिर्के अक्बर कि तरफ ले जाता हो चाहे वह किसि काम का एरादा हो चाहे कोई काम हो यम इस तरह के किसि काम का एरादा हो या कोइ बात हो जो इबादत के जुमरे मे आता हो और उसको रेयाअ यानि दिखावा करने के लिए किया जाए तो यह शिर्के अस्गर यानि छोटा शिर्क है।

और इस हदीस मे सब से पहले शिर्क का जिक्र इस लिए है क्योँ कि यह सब से बडा गुनाह है। इस हदीस मे जो बताना मकसद है वह है जादू।

प्रश्नः بقتل النفس التي حرم الله इस से क्या मूराद है ? और किसिको हक तरीके से कत्ल करने का क्या मतलब ?
उत्तरः بقتل النفس التي حرم الله से मुराद मासूम जान और मोआहिद व अमन पसन्द गैर मुस्लिम है जिस ने कोई गलति नहि कि है एसे लोगोँ को कत्ल करना अल्लाह ने हराम करार दिया है।
और हक तरीके से कत्ल करने का मतलब यह है कि उस व्यक्ति ने कोई एसा जुर्म किया हो जिस कि सजा कत्ल है तो उसको कत्ल किया जाएगा।
जैसे कि किसि को कत्ल किया हो तो केसास के तौर पर यानि बदले मे उसको कत्ल किया जाएगा या फिर मुर्तद हो गया हो या फिर शादि शुदा होकर जेना किया हो (कत्ल करने का अधिकार सिर्फ हुकुमत को है लोग खुद कोई फैसला ना करें)

प्रश्नः रेयाअ क्या है ? और أكله का क्या मतलब है ?
उत्तरः रेयाअ का मतलब है दिखावा। (यानि इबादत अल्लाह के लिए ना करके लोगोँ को दिखाने के लिए करे तो यह इबाद अल्लाह के सिवा लोगोँ को दिखाने के लिए हो जाएगा)

अल-अक्ल का माना है खा जाता है यानि सब मिटा देता है बर्बाद कर देता है।

प्रश्नः व्याज कि परिभाषा बताइये ?
उत्तरः व्याज मुल धन से ज्यादा वसूलिको व्याज कहते हैँ।

प्रश्नः أكل مال اليتيم इस से क्या मूराद है ?
उत्तरः इस अर्थ है कि अनाथ के माल मे से उज्रत के नाम पर हद से ज्यादा ले। अनाथ कहते हैँ जिसके पिता कि मृत्यु उस बच्चे के बालिग होने से पहले हि हो गइ हो।

प्रश्नः التولي يوم الزحف इसका अर्थ क्या है ? और यह कबीरा गुनाह कब माना जाएगा ?
उत्तरः इसका माना यह है कि जंग के मैदान से डरकर कुफ्फार को पीठ दिखाकर भाग जाना। और यह कबीरा गुनाह उस वक्त होता है जबि वह फरार होने वाला अपने किसि दूसरे सिपाहि गिरोह से मिलने के बजाए सिधे भाग जाए तो यह हलाकत व बरबादि लाति है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلاَّ مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِئَةٍ فَقَدْ بَاء بِغَضَبٍ مِّنَ اللّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ
अनुवादः जिस किसी ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी - यह और बात है कि युद्ध-चाल के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करे - तो वह अल्लाह के प्रकोप का भागी हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरी जगह है वह पहुँचने की (कुरआन सुरह अन्फाल आयतः16)

प्रश्नः بالمحصنات الغافلات المؤمنات इसका क्या माना है ? और قذفهن इसका क्या मतलब ?
उत्तरः इसका माना यह है कि आस्थावान पाकबाज महिलाओँ पर व्यभिचार और फहाशत का आरोप लगाना जो कि इस तरह के काम से कोसोँ दूर और आरोप से अनभिज्ञ होँ।

प्रश्नः इस विषय से क्या क्या बातेँ समझ आइ है ?
पहलाः जादु करना कुफ्र है इसपर सख्त सजा निर्धारित है।

दुसराः जादुगरि का काम करना कुफ्र है जिसकि सजा कत्ल है।

तीसराः शिर्क से बहोत ज्यादा सावधान रहने और उस से बचने को कहा गया है।

चौथाः मासूम शख्स को कत्ल करना हराम करार दिया गया है एसे मे केसास लिया जाएगा।

पाँचवाः सूद (व्याज) खाना हराम है इसि तरह से यतीम अर्थात अनाथ का माल भि गलत तरीके से खाने से मना किया गया है।

छठाः जंग के मैदान जस कुफ्फार से लडाइ हो तब वहाँ से भागना हराम है।

सातवाँ पाकबाज महिलाओँ पर व्यभिचार का आरोप लगाना हराम है।

विषयः परिन्दोँ को उडा कर फाल (नहुसत) निकालना

प्रश्नः इस विषयका केताब के क्या सम्बन्ध है बताएँ ?
उत्तरः परिन्दोँ उडाकर उस से फाल लेना शिर्क है क्यो कि इस मे अल्लाह के सिवा किसि और चीज पर भरोसा होता है।

प्रश्नः परिन्दोँ से फाल लेने का क्या मतलब ? और यह भि बताएँ कि एसा करना कैसा है ?
उत्तरः परिन्दोँ से फाल लेने का मतलब यह कि परिन्दे को उडाकर किसि काम के लिए यह जाँचना कि यह काम या यह समय मेरे लिए उचित और शुभ है कि नहि (जैसे यह कहना कि परिन्दा दाएँ तरफ गया तो शुभ नहि तो अशुभ आदि) या फिर लाटरी वगैरह निकालना कि शुभ निकलेगा तो काम, यात्रा या कोई भि कार्य करूँगा और अगर अशुभ निकला तो नहि करूँगा।
एसा करना शिर्क है क्योँ कि इसमे दिल का भरोसा अल्लाह के सिवा दुसरि चीजपर होता है।

कुरआन मे अल्लाह तआला ने फरमाययाः

ألَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

अनुवादः सुन लो, उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं। (सुरह आराफ आयतः131)

दुसरी जगह अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ

अनुवादः उन्होंने कहा, "तुम्हारा अपशकुन तो तुम्हारे अपने ही साथ है। (कुरआन सुरह यासीन आयतः19)

प्रश्नः दोनोँ आयतोँ कि व्याख्या करेँ ?
उत्तरः पहलि आयत मे अल्लाह तअला ने बताया कि जब आले फिरऔनको कोई अच्छि बात पहोँचति तो वह कहते कि यह हमारे लिए है क्योँ कि हम इसके हकदार हैँ। और जब उनको कोई मुसिबत पहोँचता तो कहते कि यह मूसा और उसके साथियोँ कि वजह से है। इस पर अल्लाह तआला ने बताया कि बेशक जो कुछ है वह सब तुम्हारे साथ लगा हुवा है तुम्हारे लिए लिखा जा चुका है तुम्हारे आमाल कि वजह से।
यह जो कुछ तुमको पहोँचता है वह सब तुम्हारे अपने करतूत के सबब होता है दुसरेका इस मे कोई अमल दखल नहि होता है।

नबि स. ने फरमायाः

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «لا عدوى ولا طيرة ولا هامة ولا صفر» أخرجاه زاد مسلم «ولا نوء ولا غول».

अनुवनदः अबु हौरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबि स. ने फरमायाः किसि से कोई बिमारी खुद ब खुद नहि चिमटता, ना हि बद फालि कि कोई हकीकत है, न सफर कि कोई नहुसत है और ना हि उल्लु को खोपडि से निकालने मे कोई खराबि है।

प्रश्नः हदीस मे जो शब्द इस्तेमाल हुवे हैँ उनके अर्थ बताइये ? इस से क्या बात साबित होति है ?
उत्तरः जमाने जाहिलियत मे लोगोँ मे बहोत सारा गलत अकीदा भरा हुवा था जिस मे से निम्न बातेँ हैः

العدوى एक बिमार व्यक्ति मे से दुसरे स्वस्थ व्यक्ति मे रोग का अपनेआप स्थान्त्रण हो जाना। जमाने जाहिलियत मे अरब के लोग समझते थे कि बिमारी अपने आप बिना किसि सबब के दुसरे स्वस्थ व्यक्ति को लग जाता है जब कि यह बात गलत है। बिमारी के सरने कि कुछ वजूहात होति हैँ।

الطيرة इसका विवरण उपर गुजर चुका।

الهامة उल्लु जो कि सिर्फ रात मे देख पाता है। अगर किसि के घर मे आ जाए तो कहते थे कि अब किस कि मौत हो जाएगि क्यो कि मनहूस परिन्दा उल्लु किसि कि मौतका परवाना लाया है।

النوء सितारोँ के टुटकर गिरने कि जगह के बारे मे यह कहते थे कि अब इस जगह बारिश होगि।

الغول एसा शैतान जो मोसाफिरोँ के रास्ते मे बैठता है जिस कि वजह से लोग रास्ता भटक कर हलाक हो जाते हैँ। नबि स. ने फरमाया कि यह सब गलत अकिदा है इस मे कोई सच्चाई नहि है।

عن أنس بن مالك رضي الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ «لا عدوى ولا طيرة ويعجبني الفأل. قالوا وما الفأل؟ قال الكلمة الطيبة» متفق عليه.

अनुवादः अनस रजियल्लाहु अन्हु ने कहा कि नबि स. ने फरमायाः छूत लगना कोई चीज नहि, और बद शगूनि कि कोई हकिकत नहि अल्बत्ता नेक फाल मुझे पसन्द है। लोगोँ ने पूछा नेक फाल का क्या मतलब या रसूलुल्लाह ? तो आपने कहा अच्छि बात मुह से निकालना।(बोखारी व मुस्लिम)

عقبة بن عامر قال ذكرت الطيرة عند رسول الله ﷺ فقال أحسنها الفأل ولا ترد مسلمًا فإذا رأى أحدكم ما يكره فليقل اللهم لا يأتي بالحسنات إلا أنت ولا يدفع السيئات إلا أنت ولا حول ولا قوة إلا بك.

अनुवादः नबि स. के पास बद शगूनि का जिक्र किया गया तो नबि स. ने फरमायाः उसकि सब से अच्छि किस्म नेक फाल और अच्छा शगून है। और खबरदार शगून किसि मुसलमान को उसके एरादे से पिछे ना हटाए बल्कि जब तुम मे से कोई शख्स कोई एसि चीज देखे जो उसको ना गवार गुजरे तो यह दुवा पढेः

اللهم لا يأتي بالحسنات إلا أنت ولا يدفع السيئات إلا أنت ولا حول ولا قوة إلا بك

प्रश्नः इस दुवा का क्या मतलब है ? और बुराई व भलाई से क्या मूराद है ? यस दुवा से क्या साबित होता है ?
उत्तरः इस दुवा का मतलब हैः ए अल्लाह तेरे सिवा कोइ भलाई नहि पहोँचा सकता और तेरे सिवा कोई बुराईको रोक भि नहि सकता। बुराई से बाज रहने और भलाई का काम करने कि तौफीक सिरर्फ तुझ से हि मिलति है। (अबुदाऊद)

भलाई से मूराद नेअमतेँ हैँ और बुराई से मूराद मुसिबत है।
इस दुवा से यह बात समझ आति है किः हर चीज अल्लाह के हाथ मे है चाहे वह नेक फाल हो या बद शगुन
दुसराः अल्लाह के सिवा किसि दुसरे के उपर किसि भि मामले मे उम्मीद नहि लगानि चाहिए।

عن ابن مسعود رضي الله عنه مرفوعًا «الطيرة شرك، الطيرة شرك، وما منا إلا ولكن الله يذهبه بالتوكل» رواه أبو داود والترمذي

अनुवादः रसूलुल्लाह स. ने फरमायाः बद शगूनी शिर्क है और हम मे से हर एक को वहम होता है लेकि अल्लाह अपने तवक्कुल करने वाले बन्दोँ से वह वहेम दूर कर देता है। (अबु दाऊद व तिर्मिजी)

प्रश्नः इस हदीस से क्या बात साबित होता है ? और बद शगूनि को शिर्क क्योँ कहा गया है ?
उत्तरः इस हदीस से यह साबित होता है कि बद शगूनि लेना शिर्क है जब अल्लाह के सिवा किसि और पर दिल का सहारा हो जाए।
जब हमार भरोसा अल्लाह पर होता है तब अल्लाह तआला उस वहेम को दूर कर देता है।

حديث ابن عمر «من ردته الطيرة عن حاجته فقد أشرك قالوا فما كفارة ذلك قال أن تقول اللهم لا خير إلا خيرك ولا طير إلا طيرك ولا

إله غيرك» وله من حديث الفضل بن عباس رضي الله عنه إنما الطيرة ما أمضاك أوردك

अनुवादः इब्ने उमर से रिवायत है कि जिस शख्स ने बद शगून लिया उस ने शिर्क किया। लोगोँ ने पूछा कि उसका कफ्फारा क्या है ?

तो फरमाया यह दुवाः اللهم لا خير إلا خيرك ولا طير إلا طيرك ولا إله غيرك

अनुवादः ए अल्लाह हर तरह कि भलाई सिर्फ तेरे हि कब्जे कुदरत मे है और हर शगून तेरी तरफ से है और तेरे सिवा कोई भि इबातद के लाएक नहि। (मुस्नद अहमद)

प्रश्नः इस हदीस का क्या माना है ?

उत्तरः इसका माना यह है कि अल्लाह के सिवा कोई भि भलाई पहोँचाने वाला नहि है और अल्लाह के सिवा कोई भि बुराई को दूर करने वाला नहि है। अल्लाह के सिवा कोई भि इबादत के लाएक नहि इसि लिए दिल का लगाव भि अल्लाह हि से होनि चाहिए।

विषयः सितारोँ का असर और उसके इल्म के बारेमे

प्रश्नः इस विषयका केताब के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः सितारोँ से सम्बन्धित कुछ बाते शिर्क हैँ जो तौहिद के विपरित है।

प्रश्नः सितारोँ के इल्म के बारे मे बताइए ? इस कि कितनि किस्म है ? हर एक कि परिभाषा बताइए ?
उत्तरः इस कि दो किस्म हैः

पहलाः इल्मे तासीर, इस मे खगोल (फलकियात) से असर होने का दावा किया जाता है और यह हराम है क्योँ कि यह शिर्क है जो कि तौहीद के मनाफि है क्यो कि यह अदृश्य का दावा करना है जिसका ज्ञान अल्लाह के सिवा किसि को भि नहि है।

दुसराः इल्मे तैसीर, इसमे सुरज, चाँद और सितारोँ के सिम्त मे तब्दीलि से इस्तदलाल करना यह जाएज है।

प्रश्नः सितारोँ कि सृष्टि मे क्या हिक्मत है प्रमाण सहित बताएँ ? और सितारे जिस काम के लिए नहि बनाया गया है उसके बारे मे गुमान करना कैसा है ?
उत्तरः सितारोँ को तीन फाएदे के लिए बनाया गया हैः

पहलाः आसमान कि जीनत के लिए जैसा कि कुरआन मे अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ

अनुवादः हमने निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और उन्हें शैतानों के मार भगाने का साधन बनाया और उनके लिए हमने भड़कती आग की यातना तैयार कर रखी है। (कुरआन सुरह मुल्क आयतः 5)

दुसराः शैतानोँ को मारने के लिए अल्लाह तआला ने कहाः

وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ

अनुवादः उन्हें शैतानों के मार भगाने का साधन बनायया। (सुरह मुल्क आयतः 5)

तीसराः निशानी के लिए जिस के जरिये से दिशा मालूम किया जए। अल्लाह तआला ने फरमायाः

وَعَلَامَاتٍ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ

अनुवादः और मार्ग चिन्ह भी बनाए और तारों के द्वारा भी लोग मार्ग पा लेते हैं।(करआन सुरह नहल आयत 16)

وعن أبي موسى رضي الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ: «ثلاثة لا يدخلون الجنة مدمن خمر ومصدق بالسحر وقاطع رحم» رواه أحمد وابن حبان في صحيحه.

अनुवादः अबु मूसा अश्अरी रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि नबि स. ने फरमायाः तीन किसम के लोग जन्नत मे नहि जा सकेँगे। शराब का आदी, जादू कि तस्दीक करने वाला और नाता तोडने वाला। (मुस्नद अहमद)

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या करेँ ?
उत्तरः इस मे तीन लोगोँ को वईद सुनाया गया है जिस के बारेमे विद्धवान कहते हैँ कि यह अल्लाह तआफा कि मशिअत के उपर है वह चाहे तो इनको क्षमा कर दे या चाहे तो इनको आजाब दे।
पहलाः शराब पीने का आदि शख्स यहाँ तक कि उस कि मौत हो जाए और वह तौबा ना करे।

दुसराः नाता तोडने वाला आदमी जो अपने रिश्तेदारोँ से कोई तआल्लुक नहि रखता या उनको गालि बकता है बुरा भला कहता है।

तीसराः जादु कि तस्दीक करने वाला कि जादू अपने आप असर करती है इस मे अल्लाह तआला से कुछ लेना देना नहि है। नबि स. ने फरमायाः

अनुवादः जिस ने सितारोँ का इल्म सीखा उसने जादू सीखा यह अबु दाऊद कि रिवायत है।

विषय: अल्लाह तआला का फरमान

(وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ)

अनुवादः कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं, उनसे ऐसा प्रेम करते हैं जैसा अल्लाह से प्रेम करना चाहिए। (कुरआन सुरह 2 आयत 165)

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या करेँ और किताब से इसका सम्बन्ध बताएँ ?
उत्तरः इस आयत मे अल्लाह तआला ने यह बताया कि जिस ने भि अल्लाह के सिवा किसि और से उस तरह मोहब्बत किया जैसा कि अल्लाह से करना चाहिए तो गोया कि उसने अल्लाह के जैसा किसि और को माना उस के मिस्ल किसिको बनाया मोहब्बत और ताजीम मे।

किताब के साथ इस का सम्बन्ध यह है किः जिस किसि ने अल्लाह के सिवा किसि और से उस तरह मोहब्बत किया जैसा अल्लाह से करना चाहिए तो उसने शिर्क किया जो कि तौहीद के विपरित है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः
قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللّهُ بِأَمْرِهِ

अनुवादः कह दो, यदि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारे रिश्ते-नातेवाले और माल, जो तुमने कमाए हैं और कारोबार जिसके मन्दा पड़ जाने का तुम्हें भय है और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हे अल्लाह और उसके रसूल और उसके मार्ग में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए।

प्रश्नः शब्दोँ के अर्थ बताइयेः
عَشِيرَتُكُمْ रिश्तेदार, اقْتَرَفْتُمُوهَا जो तुमने कमाया, وَتِجَارَةٌ व्यापार, وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا वह जगह जो तुम्हे पसन्द है, فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللّهُ بِأَمْرِهِ इन्तेजार करो जिस आजाब के तुम हकदार हो।

यह आयत अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत कि सब से बडि दलील है और यह भि ध्यान रहे कि सब से ज्यादा मोहब्बत दुनियाँ और उसकि सारी चीजोँ ज्यादा मोहब्बद अल्लाह से होनि चाहिए उस के बाद कि किसि से मोहब्बत का दर्जा है। (तफ्सीर साअदी)

عن أنس أن رسول الله ﷺ قال: «لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من ولده ووالده والناس أجمعين» البخاري ومسلم
अनुवादः अनस रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि नबि स. ने फरमायाः तुम मे से कोई भि शख्स उस वक्त तक इमान वाला नहि हो सकता जब तक कि मै उसके नजदीक उसके माँ बाप और बाल बच्चे सब से ज्यादा प्यारा ना हो जाउँ। (बोखारी व मुस्लिम)

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या किजिएः
उत्तरः इस हदीस मे नबि स. ने बताया है कि कोई भि आदमी उस वक्त तक सच्चा ईमान वाला नहि हो सकता जब तक कि वह नबि स. को अपने खुद से और तमाम रिश्तेदारोँ से महबूब ना बना ले।
عن أنس رضي الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ «ثلاث من كن فيه وجد بهن حلاوة الإيمان أن يكون الله ورسوله أحب إليه مما سواهما وأن

يحب المرء لا يحبه إلا لله، وأن يكره أن يعود في الكفر بعد أن أنقذه الله منه كما يكره أن يقذف في النار» متفق عليه.

अनुवादः नबि स. ने फरमाया कि तीन खसलतेँ एसि हैँ कि जिस के अन्दर यह पैदा हो गया तो उसने ईमान का मीठास पा लिया। पहला वह शख्स जिसके नजदीक अल्लाह और उसके रसूल सब से ज्यादा महबूब बन जाएँ दूसरा वह जो किसि इन्सान से सिर्फ अल्लाह कि खुशनूदी के लिए मोहब्बत करे, तीसरा वह जो कुफ्र मे लौटने को एसा बूरा जाने जैसा आग मे डाले जाने को बुरा मानता है। (बोखारी 16)

प्रश्नः शब्दोँ के अर्थ बताइये ? अल्लाह तआला से मोहब्बत का तकाजा क्या है ?

उत्तरः

ثلاث तीन किस्म के लोग, كن فيه जिस के अन्दर यह खूबी हो, حلاوة الإيمان ईमान कि मिठास।

अल्लाह तआला से मोहब्बत का तकाजा यह है कि उसके आदेश को माने गुनाहोँ को छोड दे और नबि स. का अनुशरण करे।

عن ابن عباس رضي الله عنهما قال: «من أحب في الله وأبغض في الله ووالى في الله وعادى في الله فإنما تنال ولاية الله بذلك ولن يجد عبد طعم الإيمان وإن كثرت صلاته وصومه حتى يكون كذلك. وقد صارت عامة مؤاخاة الناس على أمر الدنيا وذلك لا يجدي على أهله شيئًا» رواه ابن جرير.

अनुवादः अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैँ कि जो अल्लाह के लिए मोहब्बत या नफरत करता है और अल्लाह हि के लिए दोस्ति और दुश्मनी करता है तो वह इसके जरिए अल्लाह तआला कि वेलायत (मदद) पा लेगा, लेकिन इस के सिवाए वह इमान कि हलावत हर गिज नहि पा सकता अगर चे वह कितना भि रोजा रख ले या नमाज पढ ले यहाँ तक कि वह उसि तरह हो जाए। भाई चारा आम तौर से दुनिया के लिए हि करते हैँ तो इस तरह कि भाई चारगि उनको कोई फाइदा नहि देगि।

प्रश्नः शब्दोँ के उत्तर बताइये ?

उत्तरः

أحب في الله अल्लाह के लिए मोहब्बत या नफरत।

وأبغض في الله अल्लाह के लिए मोहब्बत या नफरत।

تنال ولاية الله अल्लाह तआला कि वेलायत (मदद) पा लेगा।

ووالى في الله अल्लाह हि के लिए दोस्ति करता है।

وعادى في الله अल्लाह हि के लिए दुश्मनी करता है .

ولن يجد عبد طعم الإيمان इमान कि हलावत हर गिज नहि पा सकता।

حتى يكون كذلك यहाँ तक कि वह उसि तरह हो जाए।

مؤاخاة الناس على أمر الدنيا भाई चारा आम तौर से दुनिया के लिए हि करते हैँ।

لا يجدي على أهله شيئًا इस तरह कि भाई चारगि उनको कोई फाइदा नहि देगि।

प्रश्नः وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الأَسْبَابُ इसका क्या अर्थ है ?

उत्तरः मुश्रिकीन कि मोहब्बत आखिरत मे खत्म हो जाएगि क्योँ कि उनकि मोहब्बत दुनियाँ के लिए थि और आखेरत मे वह एक दुसरे से बराअत का इज्हार करेँगे क्योँ कि उनकि वह मोहब्बत अल्लाह के सिवा दुसरे के लिए है।

प्रश्नः मोहब्बत के तमाम परिकार उसके परिभाषा सहित बताएँ ?
उत्तरः पहला अल्लाह कि मोहब्बत और यह असल ईमान है।

दुसराः अल्लाह के लिए मोहब्बत वह यह है कि जो काम जो चीज अल्लाह तआला पसन्द करता है उसको पसन्द करने वाले से मोहब्बत करना।

तीसराः अल्लाह के साथ किसि और से मोहब्बत करना और उसके जैसा किसि और को बना लेना यह शिर्क है।
प्राकृतिक मोहब्बतः जैसे कि माता पिता से होता है।

प्रश्नः मोहब्बत के वह कौन कौन से असबाब हैँ जिन कि वजह से बन्दे अपने रब से मोहब्बत करते हैँ और रब अपने बन्दोँ से मोहब्बत करता है ?
उत्तरः

1. अल्लाह को एक मानना।
2. दुसराः फर्ज नमाजोँ के बाद नवाफिल के जरिए अल्लाह से कुरबत बढाना।
3. तिसराः हर हाल मे दिल जबान और अमल से अल्लाह का जिक्र करते रहना।
4. चौथः आजजी व इन्केसारी
5. पाँचवाः रात के आखरी परेर मे ज्यादा से ज्यादा अपने गुनाहोँ कि बख्शिस कि दुवा माँगना।
6. छठाः अच्छे लोगोँ से दोस्ति और उनकि मजलिसोँ मे बैठना।

विषयः अल्लाह तआला का फरमान
(وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ)

अनुवादः अल्लाह पर भरोसा रखो, यदि तुम ईमानवाले हो।" (सुरह माइदा 23)

प्रश्नः इस आयत का माना क्या है ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने फरमाया कि अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो उसके कुदरत कि तस्दीक करते हो तो उसि एक अकेला रब पर तवक्कुल यानि भरोसा करो।

प्रश्नः तवक्कुल कि परिभाषा बताइये ? साथ साथ यह भि बताएँ कि उसके कितने प्रकार हैँ और तवक्कुल का ईमान के साथ क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः तवक्कुल कहते हैँ भरोसा और एतमाद को। इसकि चार किस्में हैँ।

पहलाः तवक्कुल अलल्लाहः यानि हर चीज मे अल्लाह पर भरोसा करना चाहे वह नफा पहोँचाने का मामला हो या घाटा से बचाने का मामला। यह वाजिब है हर मुसलमान पर क्योँ कि यह ईमान का हिस्सा है।

दुसराः तवक्कुल अलल्मख्लूक अर्थात मखलूकात पर भरोसा करना एसे कामोँ मे जो अल्लाह के सिवा कोई पूरा नहि कर सकता। जैसे कि शेफायाबि, रिज्क, या फिर जन्नत माँगना या फिर मुर्दोँ से मदद तलब करना वगैरह यह शिर्क है जो कि तौहिद के विपरित है।

तीसराः मनुष्य पर एसे कामोँ मे भरोसा करना जो वह कर सकता है जैसे खरीदो फरोख्त मे भरोसा करना। यह जाएज है लेकिन यह ना कहो कि मैने उस पर भरोसा किया बल्कि यह कहो कि मैने उसके हवाले किया क्योँ कि कामिल भरोसा के लाएक तो सिर्फ अल्लाह है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे कहाः

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

अनुवादः ईमानवाले तो वही लोग हैं जिनके दिल उस समय काँप उठें जबकि अल्लाह को याद किया जाए। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएँ तो वे उनके ईमान को और अधिक बढ़ा दें और वे अपने रब पर भरोसा रखते हों। (सुरह अन्फाल आयत नः 2)

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या किजिए और इस से क्या इस्तदलाल है वह बताइये तथा यह भि बताइये कि इस से क्या क्या फाईदा हासिल हुवा ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने इस आयत मे मोमिनोँ को एक बहोत हि बेहतरीन सिफत से मुत्तसिफ किया है जो कि इमान कि हकीकत को समझने के लिए काफि है।

1. जब उनके पास अल्लाह का जिक्र होता है तो उनका दिल काँप उठता है जिस कि वजह से वह फराएज अदा करते हैँ और जिस से रोक दिया गया है उस काम से रुक जाते हैँ।

2. वह लोग अल्लाह हि पर भरोसा करते हैँ उसि के हवाले अपने तमाम मआमलात रखते हैँ। (आयत से यहि बात बताने कि कोशिस कि गई है)

3. जब उनके पास अल्लाह तआला कि आयतेँ तेलावत कि जाति हैँ तो उनका ईमान बढ जाता है।

4. वह लोग नमाज काएम करते हैँ उसके निर्धारित समय पर जमात के साथ उसके तमाम आदेशों कि पालना करते हुवे।

5. वह अल्लाह तआला के दिए हुवे अपने माल मे से गरीबौँ मिस्कीनौँ जरूरतमन्दौँ पर खर्च करते हैँ।

इन पाँचा गुणो कि वजह से वह अल्लाह तआला के वादे को पाएँगे जिसमे जन्नत कि नेमतौँ का जिक्र है।
आयत से यह फाईदा हासिल होता है किः ईमान अल्लाह तआला कि आज्ञाकारिता से बढता है और उसके अवज्ञा से घटता है।

प्रश्नः इन पाँच कामौँ के जरिए कैसे अल्लाह तआला के वादे को पाया जा सकता हैँ ?
उत्तरः इन पाँचो कामौँ के साथ साथ हराम (अवैध) कर्दा कामौँ से बचने पर अल्लाह तआला के वादे को पाया जा सकता है

अल्लाह तआला ने कुरआन मे फरमायाः

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

अनुवादः ऐ नबी! तुम्हारे और तुम्हारे ईमानवाले अनुयायी के लिए अल्लाह ही काफ़ी हैं। (सुरह अन्फाल 64)

प्रश्नः इस आयत कि व्याख्या करेँ और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताएँ ?
उत्तरः अल्लाह तआला ने इस मे फरमाया कि ए नबि मोहम्मद स. आप और के मोमिन साथियौँ के लिए अल्लाह हि काफि है उस से सिवा दुसरे किसि कि जरूरत नहि है।
विषय से इसका सम्बन्ध यह है कि जब अल्लाह तआला हि काफि है तो उसि पर भरोसा होना चाहिए।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ

अनुवादः जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। (सुरह तलाक आयत 3)

प्रश्नः इस आयत का क्या मतलब है ? इससे क्या बात साबित होति है ? क्या तवक्कुल और भरोसा अस्बाब अख्तियार करने के विपरित है ? अपना जवाब स्पष्ट बताएँ।
उत्तरः इसका मलतब यह है कि जो भि अल्लाह पर भरोसा करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए काफि है। इस से तवक्कुल कि फजीलत जाहिर होता है। और तवक्कुल अस्बाब अपनाने से नहि रोकता है क्योँ कि तवक्कुल मे अस्बाब अख्तियार करना भि शामिल है और यह शरियतन जाएज है।

عن ابن عباس رضي الله عنهما قال: «﴿حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ قالها إبراهيم ﷺ حين ألقي في النار وقالها محمد ﷺ حين قالوا له ﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾» رواه البخاري والنسائي.
अनुवादः इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु कहते हैँ कि (अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।) यह बाता इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस समय कहा जब उनको आग मे डाला गया।
और मोहम्मद स. ने उस समय कहा जब उनसे लोगौँ ने कहा "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गए हैं, अतः उनसे डरो।" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने कहा, "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।" (सुरह आले इम्रान 173) (बोखारी व नसई)

प्रश्नः حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ इसका क्या मतलब है ? इस वाक्य कि विशेषता बताएँ ?
उत्तरः इसका अर्थ यह है कि हमारे लिए हर मामले मे अल्लाह हि काफि है उसि पर पूरा भरोसा करना चाहिये।

इस वाक्य कि विशेषता यह है कि दो बडे नबि (हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलम और हजरत मोहम्मद स.) ने मुश्किल समय मे इस वाक्यको कहा।

विषयः अच्छे बुरे तक्दीर पर सब्र करना अल्लाह पर ईमान का हिस्सा है

प्रश्नः इस विषय का केताबुत्तौहीद से क्या सम्बन्ध है ?
उत्तरः अल्लाह तआला के तरफ से लिखि गई तक्दीर पर सब्र ना करना ईमान और तौहीद के विपरित है ।

प्रश्नः शरियत मे सब्र कि क्या परिभाषा है ? उसके कितने प्रकार है बताएँ ?
उत्तरः शिरियत मे सब्र कहते हैः मुसीबत के समय अपने आपपर नियन्त्रण, जुबानको शिकायत करने से रोकना और संयमता अपनाना, और अपने शारीरिक अंग को गाल पीटने या कपडे फाडने से रुकना । सब्र ईमान का हिस्सा है ।

सब्र कि तीन किस्म है ।

1. अल्लाह तआला के आदेशौँ कि पालना करने मे सब्र ।

2. जिस काम से अल्लाह ने रोक दिया है उस से रुकने मे सब्र ।

3. किस्मत मे जो मुसीबतेँ हैँ उन मुसिबतोँ के आने पर सब्र ।

प्रश्नः अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद मे फरमायाः وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ इस आयत कि व्याख्या किजिये और यह बताईये कि इस से क्या सबक मिलता है ?
उत्तरः अनुवादः जो अल्लाह पर ईमान ले आए अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है (सुरह तगाबुन 11)
अर्थात जिस किसि के उपर कोई मुसिबत आई तो उसने अल्लाह कि तरफ से लिखा हुवा तक्दीर मानकर उस मुसिबतपर सब्र किया और अल्लाह के फैसले को दिल से स्विकार किया तो अल्लाह तआला उसके दिलको मुक्तिका मार्ग दिखाते हैँ यानि कि मुसिबत से छुटकारा का रास्ता दिखाते हैँ। यह कभि तो दुनिया हि मे उस मुसिबत पर सब्रका बदला पा जाता है कभि आखेरत के लिए उसको अल्लाह तआला महफूज रखता है ।

इस आयत से यह बात समझ आति है कि मुसिबत के समय सब्र दिल कि रहनुमाई का सबब बतना है और सब्र से दिलको इत्मिनान व सुकून मिलता है साथ साथ सब्र करने पर सवाब भि मिलता है ।

عن أبي هريرة رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «اثنتان في الناس هما بهم كفر الطعن في النسب والنياحة على الميت».
अनुवादः हजरत अबु होरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि लोगोँ मे दो आदतेँ एसि हैँ कि उसमे कुफ बाकि हैः किसि के नसब पर ताना कसना और मैय्यत पर नौहा करना ।(सहीह मुस्लिम)

प्रश्नः नसब पर ताना कसने का क्या मतलब ? और नौहा किसे कहते हैँ ?
उत्तरः नसब मे ताना कसने का मतलब यह है कि किसि के बारे कहा जाए कि यह फलाना का बेटा नहि है या इसका जो नसबनामा है वह घटिया है आदि ।

नौहा कहते हैँ किसि के मृत्यु पर जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर रोना और छाति पीटना, गाल पर तमाँचा मारना, कपडे फाडना वगैरह ।
इन्हि दोनो आदतोँ के बारे मे नबि स. ने कहा कि लोगोँ मे दो कुफ्र वालि आदतेँ है क्योँ कि यह काफिरोँ वाला अमल है ।

عن ابن مسعود رضي الله عنه مرفوعًا «ليس منا من ضرب الخدود وشق الجيوب ودعا بدعوى الجاهلية» متفق عليه.

अनुवादः वह शख्स हम मे से नहि जो गाल पर तमाँचा मारकर रोए, कपडे फाडे और जिहिलों जैसे चिल्ला चिल्ला कर रोए। (बोखारी व मुस्लिम)

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या किजिये और यह बताइये कि जाहिलियत कि तरह रोने का क्या मतलब ?
उत्तरः इस हदीस मे नबि स. ने सख्ति से सावधान किया है कि जो भि व्यक्ति एसा करेगा उस से हमारा कोई नाता नहि है वह हम मे से नहि जो इस तरह करता है। इस से पता चलता है कि मुसिबत के समय एसा करना कबीरा गुनाहों मे से है।

وضرب الخدود का मतलब है कि किसि के मौत पर गाल पर तमाँचा मार मार कर रोए या शरीर पर तमाँचा मार कर रोए और अक्सर देखा जाता है कि लोग एसा करते हैं।
والجيوب मतलब यह है कि सरको कपडे मे घुसेडकर रोना या कपडेको फाडना मैय्यत के गम मे।
ودعوى الجاهلية का मतलब यह है कि मैय्यत का नाम ले ले कर या उसके गुण गिना गिनाकर चिल्ला चिल्लाकर रोना।

عن أنس رضي الله عنه أن رسول الله ﷺ قال: «إذا أراد الله بعبده الخير عجل له العقوبة في الدنيا وإذا أراد بعبده الشر أمسك عنه بذنبه حتى يوافي به يوم القيامة» رواه الترمذي وحسنه والحاكم
अनुवादः अनस रजियल्लाहु कहते हैं कि नबि स. ने फरमायाः जब अल्लाह तआला अपने बन्दे के लिए खैर का इरादा करता है तो दुनियाँ हि में उसके गुनाहों कि सजा दे देता है जब किसि को सख्ति मे डालता है तो उसके गुनाहों का बदला कयामत के दिन के लिए रोक देता है। (तिर्मिजी)

प्रश्नः इस हदिस कि व्याख्या करें और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताएँ ?
उत्तरः नबि स. ने इस हदीस मे बताया कि अल्लाह तआला जब अपने बन्दे के साथ भलाई करना चाहता है तो दुनिया मे कभि खुद उस शख्सको मुसिबतों मे मुब्तला कर देता है या कभि उसके बिवि बच्चे मे से किसि के उपर कोइ मुसिबत तारी कर देता है या कभि उसके माल मे कमि कर देता है जिस कि वजह से वह बन्दा मुसीबत मे मुब्तला रहता है और यह उसके गुनाहों का कफ्फारा बनता है इस तरह से जब वह कयामत के दिन अल्लाह तआला से मिलेगा तो गुनाहों से बरी होगा।
और जब किसि पर सख्ति करना चाहता है तो इस के उलट कर देता है।

विषय से इसका सम्बन्धः यह इस बात पर दलालत करता है कि दुनियाँ मे किसि मुसिबत मे मुबतला होना गुनाहों का कफ्फार बन जाता है यदि बन्दा उस मुसिबत पर सब्र करे।

قال ﷺ: «إن عظم الجزاء منع عظم البلاء وإن الله تعالى إذا أحب قومًا ابتلاهم فمن رضي فله الرضاء ومن سخط فله السخط» حسنه الترمذي.
अनुवादः जब अल्लाह तआला किसि कौम से मोहब्बत करता है तो उसके बडे गुनाह का सब से बडा बदला यह होता है कि उनको किसि बडे मुसिबत मे मुब्तला कर देता है। तो उस मुसिबत मे अल्लाह तआला से राजी रहता अल्लाह तआला उस से राजि हो जाता है और जो अल्लाह तआला से मुह मोडता है तो उसके लिए वहि है जिसका वह भागिदार है। (तिर्मिजी)

प्रश्नः इस हदीस कि व्याख्या करें और विषय के साथ इसका सम्बन्ध बताएँ ?
उत्तरः नबि स. ने बताया कि जो सख्त आजमाईश मे डाला जाता है उसका बदला भि उसको बहोत हि बेहतरीन मिलता है और यह अल्लाह तआला का अपने बन्दे से मोहब्बद कि निशानी भि है कि वह अपने बन्देको मुसिबत मे मुब्तला करता है जो उसके बन्दे के गुनाह के लिए कफ्फारा (गुनाह मिटने का सबब) बन जाता है और कभि उसके नेकि मे बढोतरि का सबब बनता है। तो

जो शख्स इस मे अल्लाह से राजि रहता है तो उसको उसके राजि होने के बराबर बदला मिलता है लेकिन जो शख्स उस मुसिबत मे राजि नहि होता तो उसके लिए वह है जिसका वह भागिदार है।

राजि होना या कराहियत और ना पसन्द करना अल्लाह कि तरफ से है यह दोनों अल्लाह के गुण भि हैं जिस इमान लाना लाजिम है और अल्लाह तआला के लिए इसको उस तरह मानना चाहिये जैसा कि उसके लाएक है।

इन्सान का राजि होना यह है कि वह अल्लाह कि रजा के लिए अल्लाह के फैसलेपर राजि रहता है और उस के बारे मे अच्छा गुमान रखता है और यह समझता है कि उस मे भि उसके लिए कोई भलाई पोशीदा है।

अस्सुख्त कहते हैँ किसि चीज या फैसले पर कराहियत और ना पसन्दीदगि को ।

हदीस का विषय के साथ सम्बन्ध यह है कि जो शख्स अल्लाह तआला के फैसले पर राजी नहि होता उसपर सब्र नहि करता कराहियत महसूस करता है उसके लिए वईद है।

प्रश्नः इस विषय क्या क्या बातेँ मालूम हुइ बताइये ?

1. उत्तरः सब्र करना वाजिब है यह अल्लाह पर इमान का हिस्सा है।
2. सब्र करने वालोँ के लिए बहोत बडा अज्र है।
3. किसि के नसब मे ताना कसना हराम है।
4. मोसिबत के समय गाल पर चाँटा, छाति पीटना या गिरेबान फाडने से सख्ति से मना कया गया है।
5. अल्लाह तआला के फैसले से नाराज होना हराम है मुसिबत मे अल्लाह से राजि रहना उसपर सवाब कि उम्मिद करना चाहिये ।